



निपटी छू सकता है
17,000
राजीव रंजन झा

7



दमदार भयोसे गाले चुने
हुए 30 शेयरों पर दाँवं
सुधांशु अस्थाना

28



स्मॉलकैप श्रेणी में अभी भी
उपलब्ध हैं अच्छे अवसर
अजीत मेनन

29

वर्ष : 10 अंक : 9

31 अगस्त, 2021

मूल्य : 50 रुपये

निवेश मथन

लॉटरी बन गया आईपीओ बाजार !

शेयर बाजार का फूलता गुब्बारा



न्यूचुअल फंड
दुनिया भर में ईटीएफ को लेकर
बढ़ती रुचि

30

सर्टफा बाजार
सोने-चाँदी में नएन रुझान के साथ
सीमित दायरा

37

33%
तक छूट
नियमित ग्राहक
बनने पर
पैज 46



निष्पॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड

(एक ओपन एंडेड डायनेमिक एसेट एलोकेशन फंड)

स्थिति के अनुसार अनुकूलन करता रहता है...

इक्षिटी बाजार स्वभाव से अस्थिर है। हमारा डायनेमिक एसेट एलोकेशन मॉडल का लक्ष्य बाजार की मौजूदा स्थिति के अनुसार नियमित रूप से आपके इक्षिटी निवेश को अनुकूलित करते रहना है।

ताकि आप बेहतर रिस्क-एड्जस्टेड रिटर्न्स की आकांक्षा कर सकें!

निष्पक्ष मॉडल आधारित
इक्षिटी आवंटन

सक्रिय रूप से प्रबंधित
स्टॉक पोर्टफोलियो

बेहतर रिस्क-एड्जस्टेड रिटर्न्स
उत्पन्न करने का प्रयास

इक्षिटी
टैक्सेशन

अधिक जानकारी के लिए अपने म्युचुअल फंड वितरक से संपर्क करें या विजिट करें: <https://mf.nipponindiaim.com> पर।

निष्पॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड (एक ओपन एंडेड डायनेमिक एसेट एलोकेशन फंड)

यह प्रॉडक्ट उन निवेशकों के लिये उपयुक्त है, जो चाहते हैं:

- दीर्घकालिक पूँजी वृद्धि
- इक्षिटी और इक्षिटी संबंधित इंस्ट्रमेंट्स, डेव्ट, मुद्रा बाजार इंस्ट्रमेंट्स और डेरिवेटिव में निवेश
- *प्रॉडक्ट की उपयुक्तता को लेकर शंका होने पर निवेशकों को अपने आधिक सलाहकारों की राय लेनी चाहिये।



म्युचुअल फंड निवेश बाजार के जोखिमों के अधीन हैं, योजना से जुड़े सभी दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें।



India@
A guiding light,
shining bright




निवेश करें. ध्यान से.

उतार-चढ़ाव स्टॉक मार्केट का स्वभाव है. ज्यादा मुनाफ़े के बादे या बिना माँगे टिप्स और सुझाव के बहकावें में न आएं. निवेश करने से पहले, विशेषज्ञों से सलाह लें या भरोसेमंद रिसर्च रिपोर्ट्स देखें. आज की थोड़ी सी सावधानी, आने वाले कल का बड़ा फ़ायदा हो सकती है.



@NSEIndia

www.nseindia.com

अस्वीकरण : प्रतिभूति बाजारों में निवेश बाजार जोखिमों के अधीन हैं, निवेश करने से पहले सभी संबंधित दस्तावेज़ सावधानी पूर्वक पढ़ें. ग्राहक को सेबी तथा संबंधित एक्सचेंजों द्वारा जारी जोखिम प्रकटीकरण प्रलेख एवं नियम व शर्तें www.nseindia.com पर पढ़ना चाहिए.

विषय सामग्री

लॉटरी बन गया
आईपीओ बाजार !



शेयर बाजार में लगातार मजबूती ने एक तरफ मूल्यांकन को लेकर चिंताएँ पैदा की हैं, वहीं दूसरी ओर इसने निवेशकों को उत्साहित भी किया है। और इन सबके घलते आईपीओ बाजार भी एकदम जगमग है। बाजार का यह गुब्बारा और कितना फूल सकेगा? कहीं यह जल्दी फूटने वाला तो नहीं? प्रस्तुत है आईपीओ बाजार में अभी दिख रही तेजी का विलेषण।

पृष्ठ 8



आने वाले महीनों में निपटी छू सकता है 17,000

राग बाजारी : 15 जून 2021 को निपटी ने पहली बार 15,900 का स्तर छुआ, लेकिन वहाँ से केवल 100 अंक पार करके 16,000 का स्तर छूने में इसे 3 अगस्त तक का समय लग गया। करीब ढाई महीने तक निपटी 300-400 अंक के एक दायरे में सिमटा रहा। अंततः 3 अगस्त को निपटी इस दायरे को ऊपर की ओर पार करके एक नयी चाल पकड़ने (ब्रेकआउट) में सफल हुआ है।

7



2-3 महीनों में बाजार में आ सकती है गिरावट
अंबरीश बालिगा देख रहे हैं शेयर बाजार में खतरे के संकेत। प्रस्तुत है उनसे यह बातचीत।

12

एसएमई शेयर ऊँचा जोखिम ले सकने वाले निवेशकों के लिए बीएसई एसएमई आईपीओ भी नये एिकार्ड पर है। इस बाजार पर नजर डाल रहे हैं सिद्धार्थ रस्तोगी।

15



बाजार के नये उझानों को पकड़ने की सोच सौगत चटर्जी बता रहे हैं, क्या होगी नियॉन इंडिया प्लेक्सी कैप फंड की निवेश रणनीति।

26



राजेश अरोड़ा
सलाहकार संपादक

अर्थव्यवस्था की अधूरी तस्वीर पर सरकारी खुशफहमी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर काफी आश्वस्त हैं। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था न केवल उबर रही है, बल्कि उच्च विकास दर के संकेत भी दिखाई दे रहे हैं। वित्त मंत्री और मुख्य आर्थिक सलाहकार के. वी. सुब्रमण्यम भी विकास दर को लेकर काफी उत्साहित हैं। मुख्य आर्थिक सलाहकार सुब्रमण्यम का मानना है कि कोविड-19 की दूसरी लहर का अर्थव्यवस्था पर कोई खास असर नहीं होगा। वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि चालू वित्त-वर्ष 2021-22 में भारत की विकास दर 11% से कम रहेगी। जनवरी में आये आर्थिक सर्वेक्षण में विकास दर का यही अनुमान था। सुब्रमण्यम का कहना है कि श्रम और कृषि कानूनों सहित कई संरचनात्मक सुधारों से विकास गति को बल मिलेगा और इससे अगले वित्त-वर्ष 2022-23 में भी विकास दर 7% या उसके आस-पास रहेगी। मजबूत विकास दर के बावजूद उच्च महँगाई दर से भी सबका नहीं होगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने कहा कि कोविड-19 की दूसरी लहर के बाद भी विकास दर मजबूत रहेगी। उन्होंने सरकार पर भरोसा और विश्वास रखने आग्रह किया है।

सुब्रमण्यम का कहना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अच्छा करेगी। इसी यकीन पर निवेशक शेयर बाजार में रिकॉर्ड मात्रा में पूँजी निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि पिछले दिनों शेयर बाजार में रिकॉर्ड तेजी आयी है। भारी मात्रा में विदेशी निवेश भी आया है। नियात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पिछले दो महीनों में ई-वे बिल, पथकर संग्रह, विद्युत उत्पादन, हवाई यात्रा, रेल मालभाड़ा, नौभार यानी जलमार्ग से माल ढुलाई, स्टील उपभोग, सीमेंट उत्पादन, पूँजीगत सामान का आयात, यात्री और दोपहिया वाहनों की बिक्री आदि में मजबूत वृद्धि दर्ज हुई है। ये बातें सरकारी आकाओं की खुशफहमी का कारण बनी हुई हैं।

पर यह अर्थव्यवस्था की अधूरी तस्वीर है। और वित्त मंत्री ने सरकार पर भरोसे की बात अकारण नहीं की है। भारतीय उपभोक्ताओं को लेकर हाल ही में आरबीआई और बल्ड इकोनोमिक फोरम के सर्वेक्षण आये हैं, जो आय और महँगाई को लेकर उनकी मनोदशा को दर्शाते हैं। आरबीआई हर दो महीने में उपभोक्ता व्यवहार का सर्वेक्षण करता है। मौजूदा हालात बताने वाला सूचकांक 48.5 है। जब यह सूचकांक 100 से नीचे होता है तो इसे निराशाजनक माना जाता है। इस सर्वेक्षण में एक साल में आर्थिक बेहतरी की उमीद उपभोक्ताओं ने जतायी है। पर इससे क्या उपभोक्ता व्यय बढ़ेगा, इसकी संभावना नहीं है। इसकी मुख्य वजह महँगाई और आय की अनिश्चितता है।

महँगाई ने 2019 से ही आम जन को परेशान कर रखा है। खाद्य तेलों, दालों, फल-सब्जियों, दूध आदि की बढ़ी कीमतों से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर दबाव बना हुआ है। कई महीनों से ईंधन की महँगाई दर दो अंकों में रही है। पेट्रोल-डीजल के महँगे होने का असर जनजीवन पर तो पड़ा ही है, अब बड़े-बड़े कारोबारी भी ईंधन महँगाई को कोस रहे हैं। अब आरबीआई ने भी ईंधन पर टैक्स घटाने की सलाह दी है। रसोई गैस, पेट्रोल, डीजल, साग-सब्जियों की महँगाई से मासिक व्यय बेहिसाब बढ़े हैं। इस महँगाई से अन्य विवेकाधीन खरीदारी के लिए आय में से कुछ बचाना मुश्किल हो गया है।

अधिकांश जानकार मानते हैं कि निकट भविष्य में विवेकाधीन खर्चों में संकुचन होगा, क्योंकि भविष्य में महँगाई की आशंका से गृहस्थ डरे हुए हैं। इनमें सबसे ज्यादा आशंकित सेवानिवृत्त बुजुर्ग और स्व-रोजगार वाले लोग हैं। देश में बुजुर्ग आबादी का बड़ा हिस्सा बैंक ब्याज पर आश्रित है, असल में बैंक में सावधि जमा महँगाई के दर के चलते घाटे का सौदा हो गयी है। यह बेहद खतरनाक स्थिति है। बैंकों में सावधि जमा पर इस समय 6% या उससे भी कम ब्याज मिल रहा है।

कम आमदनी के कारण अप्रैल 2020 से मई 2021 के दौरान कर्मचारी प्रोविडेंट फंड में तकरीबन 3.5 करोड़ लोगों ने आवश्यक खर्च चलाने के लिए तकरीबन सबा लाख करोड़ रुपया निकाला है। इस फंड के तकरीबन छह करोड़ सदस्य हैं। इस अवधि में बेरोजगारी भी चरम पर रही, जो अब भी उच्च बनी हुई है। अप्रैल-जून के बीच फाइनेंस कंपनियों और बैंकों के सोने पर कर्ज (गोल्ड लोन) में ऐतिहासिक वृद्धि हुई है, जिनमें 40% कर्ज मंगल सूत्र गिरवी रख कर लिया गया है, जो आमदनी और खर्च की दशा बताने के लिए पर्याप्त है।

अधिकांश भारतीयों को लगता है कि आने वाले दो-तीन सालों में ही भारतीय अर्थव्यवस्था में चमक लौट पायेगी। इसका नतीजा है कि अधिकांश भारतीय कठिन समय के लिए पैसा बचा कर रखना चाहते हैं, क्योंकि निकट भविष्य में आमदनी बढ़ने की उमीद नहीं है। कम खर्च करने की मनोदशा से मोदी सरकार की राह कठिन हो गयी है। ■

आपकी पार्टी

बाजार धीरे चलने को तैयार नहीं!

आपकी जुलाई 2021 की आमुख कथा ठोकर लगने के अंदेश से बाजार को धीरे चलने को कहती है, लेकिन ऐसा लगता नहीं है कि अभी बाजार जरा भी अपनी चाल धीमी करने के लिए तैयार है। तभी तो आपके बाजार सर्वेक्षण में जो लक्ष्य दिसंबर 2021 के बताये गये, अभी अगस्त में ही बाजार उनसे आगे निकल गया है। लेकिन बाजार की यह तेज चाल सच में डरती तो है ही। बाजार में चाल जितनी ज्यादा तेज रहती है, उसके बाद आने वाली ठोकर भी उतनी ही बड़ी होती है। और यह भी सच है कि बाजार तेजी और उसके बाद ठोकर के इस चक्र से बच ही नहीं सकता।



- रोहित राज, जयपुर

पत्र भेजें पुरस्कार जीतें

हम हर महीने एक पत्र को पुरस्कृत करने की योजना चला रहे हैं, जिसमें पुरस्कृत पत्र लेखक को निवेश मंथन की एक वर्ष की सदृश्यता मुफ्त दी जायेगी।



निवेश मंथन

वर्ष : 10, अंक : 9
अगस्त 2021

सलाहकार संपादक
राजेश रपरिया
संपादक
राजीव रंजन झा

संपादकीय कार्यालय
138-ई, पॉकेट 1, मयूर विहार
फेज 1, दिल्ली 110091
दूरभाष : 011-79633546,
011-47529834

ईमेल : edit@sharemanthan.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजीव रंजन झा ने
138-ई, पॉकेट 1, मयूर विहार फेज 1,
दिल्ली 110091 से प्रकाशित और ऑल
टाइम ऑफसेट प्रिंटर्स, एफ 406, सेक्टर
63, नोएडा 201307 से मुद्रित किया।

टेलीकॉम में बीत गये ग्राहकों के अच्छे दिन

जब रिलायंस जियो अपने बांपर ऑफरों के साथ टेलीकॉम क्षेत्र में उतरी थी, तभी आशंका जतायी जा रही थी कि यह मैदान में जमे पुराने खिलाड़ियों के लिए खतरे की घंटी है। वहाँ कभी घोटालों के चलते, कभी सरकारी नीतियों के चलते और कभी गलाकाट प्रतिस्पर्धा के चलते तमाम पुरानी कंपनियाँ इस बाजार से बाहर होती चली गयीं। खुद को बचाने के लिए आइडिया और वोडाफोन ने हाथ मिला लिया। इससे यह कंपनी कुछ सालों तक संघर्ष करने लायक हो गयी, परंतु अब धीरे-धीरे डूब रही है। अब आशंका इस बात की है कि केवल दो ही कंपनियों के बच जाने के बाद इनकी मनमानी शुरू होगी, यानी उपभोक्ताओं की जेब कटेगी।

- रोहित राज, जयपुर

टीकाकरण की बढ़ती गति से सुधारेगी अर्थव्यवस्था

आपने जुलाई 2021 के अंक में भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर इंडिया रेटिंग्स के अनुमानों पर जो लेख प्रकाशित किया है, उसमें एक सटीक चेतावनी है कि यदि कोरोना महामारी से लड़ने के लिए टीकाकरण की गति धीमी रही तो इसका असर जीडीपी वृद्धि पर भी होगा। पर अच्छी बात यह है कि पिछले कुछ समय में टीकाकरण काफी तेजी से बढ़ा है। अब तो भारत दुनिया में सबसे अधिक लोगों को कोरोना का टीका लगाने वाला देश बन चुका है। देश में 50 करोड़ से अधिक लोगों को टीके लग चुके हैं। अब प्रतिदिन कोरोना टीके लगाने का औसत भी पहले से काफी अधिक हो गया है। इसलिए इस संबंध में अर्थशास्त्रियों की चिंताएँ जरूर पहले से कम हुई होंगी और आशा कर सकते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर उनके अनुमान भी बेहतर होंगे।

- किशोर पाटिल, मुंबई

अपने वादे पूरे करें बीमा कंपनियाँ

जुलाई अंक में अमित पाल्टा के साक्षात्कार में इस बात को सामने रखा गया है कि कोरोना काल में लोगों ने बीमा का महत्व समझा है। इस बात में तो खैर कोई संदेह नहीं है। पर इस दौर में यह भी देखा गया है कि बीमा कंपनियाँ अपने ग्राहकों की मदद करने में आना-कानी करती रही हैं। खास कर जब दूसरी लहर एकदम चरम पर थी, उस समय ऐसा लगा कि स्वास्थ्य बीमा (हेल्थ इंश्योरेंस) होना न होना एक बराबर था। अस्पताल कैशलेस भर्ती करने से साफ मना कर दे रहे थे। बीमा कंपनियाँ दावे मानने से मना कर रही थीं, या बहुत पैसा काट रही थीं। इससे लोगों का भरोसा टूटा है। बीमा कंपनियों को अपने वादे पूरे करने चाहिए, वरना उनका क्या फायदा।

- परमजीत सिंह, लुधियाना

खट्टीकरण

अर्थीकरण (डिस्कलेमर) : निवेश मंथन पर दी जाने वाली कोई भी जानकारी, लेख या विशेषज्ञों की राय केवल आपकी मदद के लिए है। इसे निवेश मंथन, सहयोगी प्रकाशनों या प्रकाशक की सलाह नहीं समझें। यह जरूरी नहीं है कि विशेषज्ञों की सलाह से निवेश मंथन और इससे संबद्ध व्यक्ति/विकाय सहमत हों। संबंधित शेयरों में विशेषज्ञों या उनके ग्राहकों के हित जुड़े हो सकते हैं। निवेश संबंधी किसी भी फैसले से पहले अपनी खोजबीन जरूर करें और मान्यता प्राप्त पेशेवर व्यक्तियों को सलाह लें। इस पत्रिका में प्रकाशित सारी सामग्री शेयर मंथन वेबसाइट (www.sharemanthan.in) पर दिये गये विस्तृत स्पष्टीकरण के अधीन है।

शे

यह बाजार में जब एक बड़ा लक्ष्य प्राप्त हो जाता है, तो अक्सर वह एक बड़ी बाधा का काम भी करने लगता है। मैंने पिछले अंक में भी यह चर्चा की थी कि निफ्टी 50 का 16,000 का जो लक्ष्य मई 2021 के अंक में बताया गया था, उसके पास पहुँचने के बाद से शेयर बाजार एक तरह से ठिक गया है। अगर बीते महीनों में बाजार की चाल देखें, तो 15 जून 2021 को निफ्टी ने पहली बार 15,900 का स्तर छुआ, लेकिन वहाँ से केवल 100 अंक पार करके 16,000 का स्तर छूने में इसे 3 अगस्त तक का समय लग गया। इस दौरान यह एक छोटे दायरे में अटका रहा और बार-बार नीचे 15,450 से 15,600 के दायरे में सहारा लेता रहा। यह 15,450 के ऊपर तो मई के अंतिम सप्ताह में ही आ गया था। इस तरह करीब ढाई महीने तक निफ्टी 300-400 अंक के एक दायरे में सिमटा रहा।

अंततः 3 अगस्त को निफ्टी इस दायरे को ऊपर की ओर पार करके एक नयी चाल पकड़ने (ब्रेकआउट) में सफल हुआ है। अभी 10 अगस्त को इसने 16,359 का एक नया उच्चतम स्तर बनाया है। हालांकि थोड़े समय के लिए यह 16,300 के ऊपर के स्तरों पर भी अटकता दिख रहा है। लेकिन ढाई महीने के ठहराव के बाद बाजार में आयी नयी चाल छोटे लक्ष्यों को छू कर थम जाये, इसकी संभावना कम ही लगती है। यह चाल अभी आगे बढ़ने की आशा की जा सकती है। इसलिए आने वाले दिनों में लगातार फिर से नये उच्चतम स्तर बनते रहेंगे।

हालांकि ऐसी आशा रखते समय मन के एक कोने में लगातार यह बात बिडाये रखें कि मार्च 2020 के बाद से भारतीय बाजार ने कोई ठीक-ठाक बड़ी मुनाफावसूली नहीं देखी है, जबकि बाजार के प्रमुख सूचकांक इस अवधि में दोगुने से ज्यादा हो चुके हैं। छोटे-मँझोले सूचकांकों में आयी बढ़त तो और भी ज्यादा है। इसलिए

आने वाले महीनों में निपटी छू सकता है 17,000



यह बाजारी

राजीव ईंजन झा



मुनाफावसूली कब किस बहाने से आयेगी और कितनी बड़ी होगी, इसका अनुमान लगाना एक जोखिम भरा काम है।

लेकिन जब तक बाजार की चाल नहीं बिगड़ती, तब तक हमें यह देखना होगा कि ऊपर की ओर किन लक्ष्यों तक पहुँचने की संभावनाएँ बन रही हैं। चूँकि बाजार नये रिकॉर्ड स्तरों के क्षेत्र में है, इसलिए ऊपर के लक्ष्यों का निर्धारण करने में फिबोनाकी विस्तार का सहारा लेना बेहतर होगा। निफ्टी 22 अप्रैल को 14,151 पर एक तलहटी बनाने के बाद 15 जून को 15,902 के ऊँचे स्तर तक गया था। उसके बाद ठहराव का

दौर चला और नयी चाल की शुरुआत 28 जुलाई के निचले स्तर 15,513 से हुई है।

इन स्तरों को मिलाते हुए फिबोनाकी विस्तार की रचना करें तो 50% विस्तार 16,389 पर बनता है। इसलिए अभी 15,350 के आस-पास निफ्टी थोड़ा अटक रहा है। आगे 61.8% विस्तार 16,595 और 100% विस्तार 17,264 पर है। यदि ऐसा ही फिबोनाकी विस्तार सेंसेक्स के चार्ट पर बनाया जाये तो उसमें 61.8% विस्तार का लक्ष्य 55,000 के ऊपर और 100% विस्तार 57,500 के ऊपर बनता है।

इस विस्तार के आधार पर आने वाले समय में बहुत छोटी अवधि में निफ्टी के लगभग 16,600 और अगले कुछ महीनों में 17,000 के ऊपर के स्तर तक जाने की आशा करनी चाहिए। यह भी हो सकता है कि 16,600 के आस-पास जाने के बाद वहाँ से बाजार में फिर एक छोटी गिरावट आये। अगर वहाँ गिरावट आती है, तो वह कितनी बड़ी रहती है, इसे देखने के बाद आगे के लक्ष्यों को फिर से निर्धारित किया जा सकता है।

वही समर्थन स्तरों पर विचार करें तो सबसे पहले 20 दिनों के सिंपल मूविंग एवरेज (एसएमए) का ध्यान रखें। यह अभी 16,000 के कुछ नीचे है और आने वाले दिनों में धीरे-धीरे ऊपर बढ़ेगा। यदि पिछले ढाई महीनों के ठहराव के शिखरों को मिलाते हुए एक रुक्णान रेखा खींचे तो वह भी इस समय 16,000 के पास ही आती है। इसलिए लगभग 16,000 को एक मजबूत तकनीकी सहारे के रूप में देखा जा सकता है। मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह एक बड़ा समर्थन स्तर होगा।

अगर यह इसके नीचे किसी वजह से फिसलता है तो 15,850 के पास 50 एसएमए का सहारा मिलेगा। लेकिन सबसे ज्यादा भरोसा 15,450-15,600 के दायरे पर करना चाहिए, जो बीते ढाई महीनों में एक अच्छा समर्थन क्षेत्र साबित हुआ है। ■

निफ्टी दैनिक (11 अगस्त 2021 : 16,282)



छोटी अवधि में निफ्टी 16,600 और अगले कुछ महीनों में 17,000 के ऊपर तक जाने की आशा करनी चाहिए।

सेंसेक्स दैनिक (11 अगस्त 2021 : 54,526)



बाजार में कोई कमजोरी आने पर 20 एसएमए और 50 एसएमए के समर्थन स्तरों पर नजर रहेगी।

शेयर बाजार का फूलता गुब्बारा

लॉटरी बन गया आईपीओ बाजार !

शेयर बाजार में लगातार मजबूती ने एक तरफ ग्रूल्यांकन को लेकर चिंताएँ पैदा की हैं, वहाँ दूसरी ओर इसने निवेशकों को उत्साहित भी किया है। खुदरा निवेशकों का जैसा ऐला पिछले डेढ़ वर्षों में शेयर बाजार में उमड़ा है, वह अभूतपूर्व है। संस्थागत निवेशक भी बाजार में पूरी मजबूती से डटे दिखते हैं। और इन सबके चलते आईपीओ बाजार भी एकदम जगमग है। बाजार का यह गुब्बारा और कितना फूल सकेगा? कहीं यह जल्दी फूटने वाला तो नहीं? प्रस्तुत है **राजीव दंजन झा** का विश्लेषण।

आईपीओ बाजार की गर्मी लगातार बढ़ती जा रही है। कुछ इस हद तक कि एक ही हफ्ते में चार-चार आईपीओ आने लगे हैं।

दरअसल जितने आईपीओ आ रहे हैं, उनमें से अधिकांश के सूचीबद्ध (लिस्ट) होने के दिन आईपीओ भाव की तुलना में अच्छा-खासा लाभ दिख रहा है। इसके चलते निवेशक बड़ी संख्या में हर आईपीओ की ओर आकर्षित हो रहे हैं। एसएमसी कैपिटल के सीएमडी डी. के. अग्रवाल कहते हैं, ‘इस वित्त वर्ष में आईपीओ से पूँजी जुटाने में अचानक तेजी आयी है। खुदरा निवेशकों की बढ़ी हुई रुचि का लाभ उठा कर पैसे जुटाने के लिए कंपनियाँ आईपीओ की कतार लगा रही हैं। बाजार में सकारात्मक धारणा, तरलता (लिक्रिडिटी) यानी नकदी की उपलब्धता काफी होने और खुदरा निवेशकों की ऊँची सहभागिता से कंपनियों को अपने आईपीओ लाने का एक आदर्श अवसर मिल गया है।’

पूँजी बाजार के आँकड़ों का विश्लेषण करने वाली फर्म प्राइम डेटाबेस के एमडी प्रणव हल्दिया के अनुसार जितनी भी कंपनियाँ आईपीओ लाने की योजना बना कर चल रही होती हैं, वे सेकेंडरी बाजार में तेजी और निवेशकों के बीच उत्साह का लाभ उठाना चाहती हैं। वे कहते हैं, ‘बाजार में तेजी देख कर काफी कंपनियाँ अपनी आईपीओ की योजनाओं को पहले से तय समय से पहले लाने की तैयारी करने लगी हैं। इस साल अब तक 58 कंपनियों ने अपना डीआरएचपी सेबी में दाखिल कर दिया है,

जबकि 2019 और 2020 में कुल मिला

कर भी इनकी संख्या लगभग 50 ही थी।’

प्राइम डेटाबेस के अनुसार वर्ष 2021 में अब तक सूचीबद्ध होने के दिन का (बंद भाव के आधार पर) औसत लाभ लगभग 33% रहा है। वर्ष 2020 में भी यह औसत लाभ 44% था। इस सूचीबद्धता लाभ (लिस्टिंग गेन) को पाने के लिए निवेशकों में होड़ मची है और किसी भी आईपीओ में अधिकांश खुदरा (रिटेल) निवेशक सूचीबद्ध होने के ही दिन या उसके तुरंत बाद लाभ कमा कर निकल जाना चाहते हैं। प्रणव हल्दिया बताते हैं, ‘हमारे एक विश्लेषण के अनुसार आईपीओ में आवंटन पाने वाले खुदरा निवेशकों की संख्या में एक तिमाही बाद तक काफी कमी आ

जाती है। बाजार की जैसी चाल बनी हुई है, उसमें हर कोई फटाफट लाभ कमाना चाहता है। आपको मालूम है कि हर आईपीओ में कई गुण आवेदन आ रहे हैं, लिस्ट होने के दिन अच्छी बढ़त मिल रही है, तो बस आवेदन करो और लिस्टिंग पर बेच दो। तुरंत मुनाफा मिल जा रहा है।’

इसलिए अब निवेशकों का ध्यान इस बात पर बहुत कम होता है कि कंपनी क्या कामकाज करती है, उसकी वित्तीय स्थिति कैसी है। वे कंपनी के बुनियादी पहलुओं पर बहुत खोजबीन नहीं करते। इसलिए प्रणव कहते हैं कि अब खुदरा निवेशक कंपनी में निवेश नहीं कर रहे हैं, बस आईपीओ में निवेश कर रहे हैं! चाहे कोई भी आईपीओ हो, उसमें वे आवेदन कर देते हैं। उन्हें लग रहा है कि सभी आईपीओ में लिस्टिंग गेन मिल ही जायेगा।

हालाँकि प्रणव ध्यान दिलाते हैं कि किसी आईपीओ में जितने गुण ज्यादा आवेदन आते हैं, खुदरा निवेशकों को आवंटन मिलने का अनुपात उतना ही कम हो जाता है। वे कहते हैं, ‘खुदरा निवेशकों को बस एक-दो लॉट का ही आवंटन मिल पाता है और भले ही 20-30% की लिस्टिंग गेन हो पर हाथ में आये पैसे बहुत ज्यादा नहीं होते। 10-15 हजार रुपये के आवंटन में 20-30% कमा भी लिये तो दो-तीन हजार रुपये ही आयेंगे।’

इस तरह यह एक लॉटरी के खेल से ज्यादा कुछ नहीं रह गया है। निवेशक हर आईपीओ में ज्यादा-से-ज्यादा आवेदन डाल देते हैं। लॉटरी की तरह ही उन्हें उसमें से अगर थोड़े से आवंटन हासिल हो जायें, तो वे लिस्टिंग के

समय बेच कर कुछ पैसे कमा लेते हैं। प्राथमिक बाजार (प्राइमरी मार्केट) यानी पब्लिक इश्युओं के बाजार का सीधा संबंध

हमेशा ही शेयर बाजार की चाल से जुड़ा होता है। अभी चौंकि शेयर बाजार में जबरदस्त तेजी है और बाजार के तमाम

सूचकांक अपने उच्चतम स्तरों पर हैं,

इसलिए इसका असर हमें

आईपीओ बाजार में भी अच्छे उत्साह के रूप में दिख रहा है। प्राइम डेटाबेस

के आँकड़ों के अनुसार मुख्य एक्सचेंजों (मेन बोर्ड) में वित्त वर्ष

2020-21 में 30

आईपीओ आये,

जिनके जरिये कुल

31,268 करोड़

रुपये की पूँजी जुटायी



शेयर बाजार

कंपनी	आईपीओ खुला	इश्यू आकार (करोड़ रु.)	कुल आवेदन (गुणा)	इश्यू भाव	लिस्टिंग खुला	लिस्टिंग बंद	लिस्टिंग लाभ(%)	वर्तमान मूल्य	वर्तमान लाभ (%)
इंडियन रेलवे फाइनेंस	18/1/2021	4,633.38	3.49	26.00	25.00	24.85	-4.42	23.85	-8.27
इंडिगो पैट्रस	20/1/2021	1,169.12	117.02	1490.00	2607.50	3118.65	109.31	2423.75	62.67
होम फर्स्ट फाइनेंस	21/1/2021	1,153.72	26.66	518.00	612.15	527.40	1.81	576.05	11.21
स्ट्रोव क्राप्ट	25/1/2021	412.63	18.03	385.00	498.00	445.95	15.83	800.05	107.81
न्यूरेका	15/2/2021	100.00	39.93	400.00	634.95	666.65	66.66	1696.30	324.08
रेलटेल कॉर्प	16/2/2021	819.24	42.39	94.00	109.00	121.40	29.15	131.60	40.00
हेरानबा इंडस्ट्रीज	23/2/2021	625.24	84.18	627.00	900.00	812.25	29.55	836.65	33.44
एमटार टेक्नोलॉजीज	3/3/2021	596.41	200.79	575.00	990.05	1082.25	88.22	1330.00	131.30
ईंजी ट्रिप प्लानर्स	8/3/2021	510.00	160.19	187.00	182.00	208.30	11.39	474.10	153.53
अनुप्रम रसायन	12/3/2021	760.00	45.21	555.00	534.70	525.90	-5.24	755.00	36.04
क्राप्टोकैन ऑटोमेशन	15/3/2021	823.70	3.82	1490.00	1440.00	1433.00	-3.83	1998.75	34.14
लक्ष्मी अॉर्गेनिक इंडस्ट्रीज	15/3/2021	600.00	106.74	130.00	173.00	164.60	26.62	339.75	161.35
कत्याण ज्वेलर्स	16/3/2021	1,174.82	2.61	87.00	73.90	75.30	-13.45	66.20	-23.91
नजारा टेक्नोलॉजीज	17/3/2021	582.69	175.46	1101.00	1971.00	1576.80	43.22	1689.25	53.43
सूर्योदय रम्भैल फाइनेंस	17/3/2021	580.84	2.37	305.00	274.75	276.20	-9.44	180.40	-40.85
बाबेक्यू नेशन	24/3/2021	452.87	5.98	500.00	492.00	590.40	18.08	1064.00	112.80
मैक्रोटेक डेवलपर्स	7/4/2021	2,500.00	1.36	486.00	439.00	463.15	-4.70	871.15	79.25
श्याम मेटलिक्स	14/6/2021	908.80	121.43	306.00	380.00	375.85	22.83	412.00	34.64
सोना बीएलडब्ल्यू प्रिसीजन	14/6/2021	5,550.00	2.33	291.00	302.40	362.85	24.69	501.70	72.41
डोला डेवरी	16/6/2021	520.18	45.62	428.00	550.00	609.10	42.31	596.25	39.31
कृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल	16/6/2021	2,143.74	3.86	825.00	1009.00	1096.80	32.95	1278.00	54.91
इंडिया पर्सीसाइड्स	23/6/2021	800.00	29.04	296.00	360.00	335.45	13.33	326.00	10.14
वर्लीन साईंस एंड टेक्नोलॉजी	7/7/2021	1,546.62	93.41	900.00	1784.40	1585.20	76.13	1611.80	79.09
जी. आर. इन्फ्राप्रोजेक्ट्स	7/7/2021	962.37	102.58	837.00	1700.00	1746.80	108.70	1664.70	98.89
जोमैटो	14/7/2021	9,375.00	38.25	76.00	115.00	125.85	65.59	137.55	80.99
तत्त्व चिंतन फार्मा	16/7/2021	500.00	180.36	1083.00	2111.80	2310.25	113.32	2157.90	99.25
व्हेनमार्क लाइफ साइंसेज	27/7/2021	1,513.60	45.08	720.00	752.00	748.20	3.92	757.75	5.24
रोलेक्स रिंग्स	28/7/2021	731.00	130.44	900.00	1249.00	1166.55	29.62	1149.20	27.69

गयी। वर्ही इससे पहले 2019-20 में केवल 13 आईपीओ से 20,350 करोड़ रुपये की पूँजी एकत्र हुई थी। वर्तमान वित्त वर्ष 2021-22 में अभी 10 अगस्त तक, यानी चार महीने से कुछ अधिक के आँकड़ों के अनुसार 20 आईपीओ आ चुके हैं, और इनसे जुटायी गयी कुल राशि 45,099 करोड़ रुपये की है।

डी. के. अग्रवाल कहते हैं, ‘हाल में आये अधिकांश आईपीओ ने अच्छा प्रदर्शन किया है। घाटे में होने के बाद भी जोमैटो को बाजार से बहुत जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, क्योंकि यह आधुनिक टेक्नोलॉजी कंपनी का एक प्रतीक है। लोगों में धारणा है कि एक सफल आधुनिक टेक्नोलॉजी कंपनी काफी तेजी से बढ़े स्तर पर विस्तार कर सकती है, काफी बड़ा मुनाफा कमा सकती है और इस सबके लिए उसे बहुत बड़े पूँजी निवेश की जरूरत नहीं होती। दवा, रसायन और टेक्नोलॉजी क्षेत्र की कंपनियाँ आगे भी अच्छा प्रदर्शन करेगी।’

प्रणव बताते हैं कि जब भी आईपीओ में तेजी का चक्र बनता है तो कहानी ऐसी ही रहती है, चाहे 2017 हो या 2010 हो या 2007 हो। वे कहते हैं, ‘प्राथमिक बाजार (प्राइमरी मार्केट) की खिड़की काफी छोटी होती है। एक छोटा काल

होता है जब बहुत सारे इश्यू आते हैं, और फिर दो-तीन साल तक बाजार ठंडा हो जाता है। जैसे 2007 में काफी इश्यू आने के बाद 2008 और 2009 में इश्यू काफी कम रहे। इसी तरह 2010 में अच्छी संख्या के बाद 2011 से 2014 तक इश्यू कम रहे। इसके बाद 2017 में बहुत इश्यू आये, तो 2018 और 2019 में कम हो गये। पिछले साल महामारी आने पर तीन महीने तक इश्यू बिल्कुल नहीं आये। जुलाई 2020 से लगातार इश्यू आ रहे हैं। उसमें भी एक खाली समय आया जब दूसरी लहर आयी। अब फिर से काफी इश्यू आ रहे हैं।’

हीरो गोटो से दोगुनी बड़ी जोनेटो!

बाजार में अभी क्या चल रहा है, इसे समझने के लिए हाल में आये जोमैटो के आईपीओ से बेहतर उदाहरण नहीं मिल सकता। कुछ जानकार इसे आईपीओ को लेकर अति-उत्साह के सबसे हास्यास्पद उदाहरणों में गिनते हैं, तो दूसरी ओर कुछ जानकार इसे भविष्य का सितारा मानते हैं।

फूड डिलीवरी यानी रेस्टोरेंटों से खाने के पैकेट लेकर उन्हें ग्राहकों तक पहुँचाने वाली कंपनी जोमैटो का 9,375 करोड़ रुपये का आईपीओ (इनिशियल पब्लिक ऑफर) 14 से 16 जुलाई

के बीच खुला था। इस आईपीओ को 38.25 गुण आवेदन मिले। निवेशकों के इस अति-उत्साह के कारण ही 76 रुपये के इश्यू भाव की तुलना में यह 23 जुलाई को बीएसई में 115 रुपये और एनएसई में 116 रुपये के भाव पर सूचीबद्ध (लिस्ट) हुआ और उस दिन बीएसई में आईपीओ भाव से 65.6% की उछाल के साथ 125.85 रुपये पर बंद हुआ। तब से यह 147.80 रुपये के ऊँचा स्तर तक जाने के बाद 12 अगस्त को 135.45 रुपये पर बंद हुआ है।

इस भाव पर जोमैटो की कुल बाजार पूँजी (मार्केट कैप) 1.06 लाख करोड़ रुपये है। बाजार पूँजी के मामले में यह डाबर इंडिया, टाटा मोटर्स, गोदरेज कंज्यूमर, बीपीसीएल, ग्रासिम, हिंडल्को, इंडियन ऑयल, महिंद्रा एंड महिंद्रा, कोल इंडिया, बर्ज एंट्स जैसी दिग्गज कंपनियों से भी आगे निकल चुकी है। सेल और हीरो मोटोकॉर्प जैसी कंपनियों की तुलना में इसकी बाजार पूँजी लगभग दोगुनी हो चली है।

हीरो मोटोकॉर्प से दोगुनी जोमैटो की बाजार पूँजी पर पर्फल्माइन इन्वेस्टमेंट के सीईओ पी. के. अग्रवाल कहते हैं, ‘अधिकांश आईपीओ महंगे हैं। निवेशकों को बाजार में चल रही चीजों के बदले ठोस व्यवसायों पर ध्यान देना चाहिए।’ इनके

इंटरमीडियरीज के एमडी विजय चोपड़ा भी मानते हैं कि जोमैटो का इतना ऊँचा मूल्यांकन टिक नहीं सकता। मगर खराब तिमाही नतीजे (लिस्टिंग के बाद) के दिन भी इसके शेयर में तेजी ही दिखी।

हालाँकि 2010 में गठित हुई जोमैटो इस समय अपने कामकाज का बहुत तेजी से विस्तार कर रही है। सूचीबद्ध होने के कुछ दिनों बाद पेश अपने तिमाही नतीजों में कंपनी ने बताया कि उसने अपनी एक अरबवीं डिलीवरी पिछले हफ्ते ही की है। इन एक अरब ऑर्डर में से 10' उसे बीते तीन महीनों में ही मिले हैं, इसलिए कंपनी को भरोसा है कि अगले एक अरब ऑर्डर वह बहुत जल्द हासिल कर सकेगी।

अप्रैल-जून 2021 की तिमाही में जोमैटो ने 916 करोड़ रुपये की आमदनी हासिल की है, जो पिछले वर्ष की समान तिमाही के 283.5 करोड़ रुपये की तुलना में तिगुनी से भी अधिक है। वहाँ कंपनी लगातार घाटे में ही चल रही है और यह घाटा अप्रैल-जून 2020 के 99.8 करोड़ रुपये से बढ़ कर अप्रैल-जून 2021 में 356 करोड़ रुपये हो गया है। जब एक कंपनी की आमदनी बढ़ने का मतलब उसका घाटा भी उसी अनुपात में बढ़ना हो, और बाजार उस कंपनी को लेकर इस तरह की दीवानगी दिखाये, तो इसे लेकर कुछ जानकारों में चिंता स्वाभाविक है। मगर दूसरी ओर इसके ऊँचे मूल्यांकन को उचित ठहराने वालों की भी कमी नहीं है। यूबीएस ने अपनी एक रिसर्च रिपोर्ट में कहा कि जोमैटो का मूल्यांकन 2023-24 (यानी दो साल आगे के वित्त वर्ष) की अनुमानित बिक्री के 17 गुणा (ईवी-सेल्स अनुपात) पर है जो सस्ता नहीं है, लेकिन इसकी बहुत तेज वृद्धि के कारण इसमें और तेजी की गुंजाइश बनती है। इसलिए यूबीएस ने जोमैटो का 12 महीने का लक्ष्य भाव 165 रुपये रखा है।

के. आर. चोकसी सिक्योरिटीज के एमडी देवेन चोकसी कहते हैं, '1997-1998 का समय अमेजन का था, 2001-2002 का समय ऐप्पल का था, 2003-2004 का समय गूगल का था, 2005 के बाद फेसबुक ने बाजार में कदम रखा। उसके बाद नेटफिल्मज और टेस्ला जैसी कंपनियां आयीं। उनके मूल्यांकनों को देखें कि वे इस युग में कैसे उभरी हैं। इन कंपनियों ने 70-80 पीई या 100 पीई से भी अधिक मूल्यांकनों पर शुरूआत की थी। समय के साथ उनमें वृद्धि होती रही और उनका पीई कम होता गया। अब उनके पीई 35-45 जैसे स्तरों पर हैं।'

4.51 में डीलिस्टिंग, 541 का आईपीओ

आईपीओ की इस बहती गंगा में अब ऐसी कंपनियाँ भी हाथ धोने उतर चुकी हैं, जिन्होंने कई साल पहले खुद को बाजार से डीलिस्ट करा लिया था। पीबीसी पेस्ट रेजिन बनाने वाली कंपनी केम्प्लास्ट सनमार का आईपीओ 530-541 रुपये प्रति शेयर के मूल्य पर 10 अगस्त को खुला है। इस कंपनी ने जून 2012 में बीएसई, एनएसई और एमएसई से खुद को डीलिस्ट करा लिया था और डीलिस्ट होने का भाव था 4.51 रुपये प्रति शेयर।



सेबी से अनुमति प्राप्त आगामी आईपीओ

कंपनी	आवेदन तिथि	स्वीकृति तिथि	अनु. इश्यू आकार (करोड़ रु.)
जयकुमार कंस्ट्रक्शन्स	2.6.20	10.9.20	72
सेवन आइलैंड्स शिपिंग	15.2.21	22.3.21	600
आरोहण फाइनेंशियल सर्विसेज	15.2.21	23.4.21	1800
उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक	4.3.21	3.6.21	1350
श्रीगम प्रॉपर्टीज	9.4.21	15.6.21	800
जन स्मॉल फाइनेंस बैंक	1.4.21	9.7.21	1100
एपर्मार्ड ऑर्गेनिक्स	5.6.21	19.7.21	350
सुषिया लाइफसाइंस	17.5.21	23.7.21	1200
विजय डायग्नोस्टिक सेंटर	7.6.21	23.7.21	500
फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक	10.5.21	28.7.21	1330
आदित्य बिल्डिंग सन लाइफ एमर्सी	22.4.21	5.8.21	2000
सनसेरा इंजीनियरिंग	9.6.21	6.8.21	1400
कुल			12502
(आत : प्राइम डेटाबेस)			

हालाँकि डीलिस्ट होने वाले शेयर 1 रुपये अंकित मूल्य (फेस वैल्यू) के थे और अभी लाये गये आईपीओ में शेयरों का अंकित मूल्य 5 रुपये है। फिर भी डीलिस्टिंग के भाव और आईपीओ के भाव में 24 गुणा अंतर है। हालाँकि आईपीओ बंद होने तक इसे 2.2 गुणा आवेदन मिल गये हैं। यह स्थिति तब है, जब गिरवी शेयरों, ऊँचे ऋण स्तर और नकारात्मक नेटवर्थ को लेकर तमाम जानकार इस आईपीओ के प्रति निवेशकों को सावधान रहने के लिए कहते रहे हैं। केम्प्लास्ट सनमार की सहायक कंपनी केम्प्लास्ट कुडलोर विनाइल्स (सीसीबीएल) की समूची शेयर पूँजी एचडीएफसी के पास गिरवी रखी हुई है। हालाँकि 2012 से 2021 के बीच कंपनी की वित्तीय

स्थिति में भी काफी बदलाव आया है, मगर ऐसे मुद्र कंपनी के प्रति भरोसे को कमज़ोर करते हैं।

लिस्टिंग के बाद की कहानी

प्रणव इस बात से बहुत सहमत नहीं दिखते कि पुराने आईपीओ के अब तक के प्रदर्शन को आईपीओ बाजार की हलचल मापने के लिए देखा जाये। उनका प्रश्न है कि यह कैसे तय किया जाये कि आईपीओ के बाद शेयर का प्रदर्शन एक हफ्ते बाद देखा जाये या एक महीने बाद या छह महीने बाद या एक साल बाद, यह समय कैसे तय किया जाये? वे कहते हैं, 'एक बार सूचीबद्ध हो जाने के बाद कोई शेयर वैसा ही हो जाता है, जैसे बाकी करीब 3,000 शेयर हैं जिनमें नियमित खरीद-बिक्री होती है। उसके बाद कंपनी के तिमाही नतीजे, उस क्षेत्र के प्रदर्शन, अर्थव्यवस्था की स्थिति जैसी तमाम बातें उस शेयर की चाल को प्रभावित करने लगती हैं।'

प्रणव आईपीओ बाजार के इतिहास को खंगल कर बताते हैं कि वर्ष 2007 में करीब 100 आईपीओ आये थे, जिनमें से आज बाजार के उच्चतम स्तर पर भी केवल 23 ऐसी कंपनियाँ हैं, जिनका सकारात्मक प्रतिफल (रिटर्न) दिखता है। इससे भी दिलचस्प यह है कि उन 100 आईपीओ में से 31 कंपनियों में अब खरीद-बिक्री ही नहीं होती। या तो वे डीलिस्ट हो गयी हैं, या निलंबित हो चुकी हैं। इसी तरह वर्ष 2010 में आये 64 आईपीओ में से आज केवल 17 ही सकारात्मक प्रतिफल पर हैं, जबकि 20 में खरीद-बिक्री नहीं हो रही है।

हालाँकि 2017 और उसके बाद के आईपीओ में से ज्यादा शेयर सकारात्मक चल रहे हैं। प्रणव के अनुसार इसका कारण यह भी है कि आईपीओ बाजार में आने वाली कंपनियों की गुणवत्ता अब सुधरी है, क्योंकि सेबी के नियम सख्त हुए हैं। उनके मुताबिक, 'अब जो कंपनियाँ शेयर बाजार में उतरती हैं, उनमें से अधिकांश में पहले प्राइवेट इक्विटी या वेंचर कैपिटल निवेशकों ने पैसा लगा रखा होता है। इससे भरोसा रहता है कि उनकी कुछ छानबीन पहले हो चुकी है, जबकि 1990 और 2000 के दशक में जो कंपनियाँ आती थीं, उनको लेकर यह भरोसा नहीं था। 1994-1995 के आस-पास आईपीओ लाने वाली अधिकांश कंपनियों का अब अता-पता ही नहीं है। अब इश्यूओं की संख्या उन दिनों की तुलना में कम हो गयी है, पर इश्यू लाने वाली कंपनियों की गुणवत्ता सुधरी है।'



कब तक चलेगी आईपीओ पार्टी

बहुत आसानी से यह माना जा सकता है कि जब तक शेयर बाजार में मजबूती बनी हुई है, तब तक आईपीओ बाजार में भी

इसी तरह का उत्साह बना रहेगा। जब भी किसी कारण से शेयर बाजार को झटका लगेगा, तो उसके साथ ही आईपीओ बाजार के उत्साह पर भी पानी फिरता हुआ दिखेगा। जो लोग केवल लिस्टिंग पर मुनाफे के लिए आईपीओ में आवेदन करते हैं, वे तो इस खेल में तब तक रह सकते हैं जब तक यह पार्टी चल रही है।

लेकिन जो निवेशक लिस्टिंग के बाद भी मुनाफा और बढ़ने की आशा में निवेशित रहते हैं, या आईपीओ में आवंटन नहीं मिलने के चलते लिस्टिंग के समय खरीदते हैं जिससे भाव और बढ़ने पर लाभ कमा सकें, उन्हें बहुत सावधानी से अपने शेयर चुनने चाहिए। जब भी

किसी कारण से शेयर बाजार में चल रही मौजूदा तेजी की चाल टूटेगी, तब सबसे ज्यादा नुकसान कमजोर गुणवत्ता वाले शेयरों में ही होगा। बाजार कभी भी लगातार ऊपर ही ऊपर नहीं चलता रह सकता है, इसलिए ऐसी गिरावट कभी-न-कभी तो आयेगी ही। उस गिरावट के समय की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, लेकिन ऐसी गिरावट कभी भी और किसी भी बहाने से आयेगी, यह बात लगभग पक्की है। जब एक पार्टी में म्यूजिकल चेयर का खेल चलता है, तो संगीत रुकने पर टोपी किसी-न-किसी के सिर पर टिकती ही है। प्रणव कहते हैं कि खुदरा निवेशकों को कंपनियों के

मूल्यांकन की बहुत समझ नहीं होती है। अगर कोई कंपनी आईपीओ लाते समय कीमत का दायरा 500-525 रुपये रखती है, तो खुदरा निवेशकों के लिए यह समझना मुश्किल है कि यह कीमत सही है या ज्यादा है। इसलिए प्रणव की सलाह है, 'खुदरा निवेशक संस्थागत निवेशकों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। वे यह देखें कि किसी आईपीओ में ऐकर निवेशकों और क्यूआईबी की ओर से खरीदारी कैसी है। वह कंपनी जिस क्षेत्र में है, उसी क्षेत्र की जो अन्य कंपनियाँ पहले से शेयर बाजार में सूचीबद्ध हैं, उनसे भी मूल्यांकन की तुलना की जा सकती है। कंपनी की विश्वसनीयता, उसकी वित्तीय स्थिति, मौजूदा निवेशकों, प्रमोटरों, कॉर्पोरेट गवर्नेंस आदि पहलुओं पर विचार करके ही किसी आईपीओ में निवेश करना चाहिए।'

ओएफएस की बहुतायत

केम्प्लास्ट सनमार के 3,850 करोड़ रुपये के आईपीओ में 2,550 करोड़ रुपये का हिस्सा ओएफएस का था, जबकि नये इक्किटी शेयर जारी करके 1,300 करोड़ रुपये जुटाये गये। ओएफएस में अधिकांशतः कंपनी के कनाडाई निवेशक प्रेम वत्स ने अपने शेयर बेचे। इसी तरह कोस्टा कॉफी, केएफसी और पिज्जा हट के फ्रेंचाइज पर रेस्टोरेंट चलाने वाली कंपनी देवयानी इंटरनेशनल के आईपीओ में इश्यू का आकार 1,838 करोड़ रुपये का था, जिसमें से नये शेयर केवल 440 करोड़ रुपये के थे और 1,398 करोड़ रुपये ओएफएस के तहत जुटाये गये। वित्त वर्ष 2020-21 में 1,153 करोड़ रुपये की आमदनी पर 55.21 करोड़ रुपये का घाटा दिखाने वाली इस कंपनी का यह आईपीओ कुल 10,823 करोड़ रुपये के मूल्यांकन पर आया।

प्राइम डेटाबेस का विश्लेषण है कि पिछले तीन-चार साल में आईपीओ से जुटायी गयी कुल राशि का लगभग 80% हिस्सा ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) का रहा है, जिसमें कंपनी के पुराने निवेशक या प्रमोटर अपने शेयर बेचते हैं। इस तरह नये शेयर जारी कर जुटायी गयी पूँजी केवल 20% ही है।

इस रुझान पर प्रणव कहते हैं कि अब किसी कंपनी को वृद्धि के लिए जरूरी पूँजी या कंपनी के आरंभिक चरण में जौखिम पूँजी (रिस्क कैपिटल) एंजेल, वेंचर कैपिटल और प्राइवेट इक्किटी निवेशकों से मिल जाती है। जब कंपनी एक बड़े आकार की हो जाती है, तब वह शेयर बाजार में उतरती है। इसलिए प्रणव कहते हैं कि

ओएफएस का चलन कोई बुरी बात नहीं है। यह पूँजी बाजार के परिपक्व होने का संकेत है, क्योंकि जौखिम पूँजी देने वाले एंजेल, वेंचर कैपिटल और प्राइवेट इक्किटी निवेशकों को भी अपने निवेश से निकलने का रास्ता देना होगा। उनकी लगायी हुई पूँजी अगर मुक्त नहीं होगी तो वे और नयी कंपनियों में निवेश कैसे करेंगे? लेकिन प्रणव निवेशकों को सचेत करते हैं कि आईपीओ में उन्हें यह ध्यान जरूर देना चाहिए कि पुराने निवेशक अपने सारे शेयर बेच कर निकल रहे हैं या कुछ हिस्सा बचा कर भी रख रहे हैं?

महँगे मूल्यांकन पर अंकुश नहीं

अब आईपीओ बाजार में कीमत का मसला पूरी तरह बाजार पर छोड़ दिया गया है। सेबी ने शेयर बाजार में उतरने वाली कंपनियों के बारे में काफी नियम सख्त किये हैं, मगर कीमत को लेकर अब वह कोई निगरानी नहीं करता। इसलिए 4.51 रुपये में डिलिस्टिंग करने वाली कंपनी जब 541 रुपये के भाव पर फिर से आईपीओ लाने के लिए सेबी के पास आती है तो सेबी उससे कीमत पर कोई सवाल नहीं पूछता।

आईपीओ लाने वाली कंपनियाँ और उनके मचेंट बैंकर किस कीमत पर इश्यू लाना चाहते हैं, यह अब उनके ऊपर ही छोड़ा गया है। कीमत तय करने की प्रक्रिया के बारे में प्रणव कहते हैं, 'आईपीओ लाते समय कंपनी के मचेंट बैंकर निवेशकों के लिए रोड शो करते हैं, संस्थागत निवेशकों से मिलते हैं, और उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर कीमत तय होती है। इसलिए अब यह पूरी तरह माँग और आपूर्ति का खेल है।'

आईपीओ बाजार के हर चक्र के आरंभिक चरण में ऐसे आईपीओ आते हैं, जिनमें कंपनी भी अच्छी होती है और मूल्यांकन भी उचित होता है। पर बाद के चरण में अच्छी कंपनियाँ महँगे मूल्यांकन पर आने लगती हैं। प्रणव बताते हैं कि पहले तीसरा चरण भी होता था, जिसमें बुरी कंपनियाँ ऊँचे मूल्यांकन पर आती थीं। पर अब ऐसा बहुत कम हो गया है, क्योंकि नियमन में काफी बदलाव हुए हैं। लेकिन बाजार में उत्साह के दौरान आईपीओ लाने वाली कंपनियाँ ऊँची से ऊँची कीमत रखना चाहेंगी। इस पर नियामक की ओर से कोई नियंत्रण नहीं है।

हालांकि कई जानकार मानते हैं कि अब भी इस बात को लेकर एकदम आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। शेयर बाजार में काफी कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन (गवर्नेंस) पर प्रश्न उठते रहे हैं। वहीं आईपीओ लाने वाली कंपनियाँ तो जब एक-दो साल पहले से तैयारियाँ शुरू करती हैं तो कई मामलों में बही-खातों को कृत्रिम रूप से संवारने की कोशिशें भी दिखती हैं। इसलिए जो निवेशक केवल लिस्टिंग पर बेच कर मुनाफा कमाने के लिए नहीं, बल्कि आगे भी निवेशित रहने के लिए आवेदन करते हैं, उन्हें कंपनियों के बुनियादी पहलुओं पर पूरा विचार करने के बाद पैसा लगाना चाहिए। यदि कंपनी अच्छी भी लगे तो कीमत सही होनी चाहिए। बाजार में हमेशा कहा जाता है कि अच्छा निवेश तभी होता है, जब कंपनी भी अच्छी हो और कीमत भी। अच्छी कंपनी के शेयर भी अगर महँगी कीमत पर खरीदे जायें तो निवेशक का लाभ बहुत कम होगा या नुकसान भी हो सकता है। ■

मूल्यांकन हो चले काफी ऊँचे

2-3 महीनों में बाजार में आ सकती है गिरावट

हर रोज निवेशक, कारोबारी और नित्र सभी आपसे यही पूछते होंगे कि बाजार को ये हुआ क्या है? क्या आपको खतरे के संकेत दिख रहे हैं?

अभी बाजार के सामने कई मसले हैं। पहला मसला माँग की बहाली का है, जो मुझे नहीं लगता कि पिछले साल जितना बेहतर होगा। जहाँ तक आर्थिक वृद्धि का सवाल है, हम 9-10% के आस-पास की विकास दर मान कर चले रहे थे, लेकिन लगता है कि विकास दर यहाँ से भी नीचे जा सकती है। बैंकिंग प्रणाली में हम जो एनपीए देख रहे हैं, पहले यह बड़ी कंपनियों से आता दिख रहा था। लेकिन इस बार शायद हम देखें कि यह पिरामिड के निचले सिरे से आये, जैसे खुदरा, माइक्रो और एसएमई श्रेणियों से हम भुगतान में चूक (डिफॉल्ट) देख सकते हैं। बीएफएसआई क्षेत्र से प्रबंधनों की जो टिप्पणियाँ आ रही हैं, वे उसी ओर संकेत दे रही हैं।

गोल्ड लॉन में बढ़ोतारी हुई है। जब आपके पास कुछ नहीं बचता, तब आप सोने को गिरवी रखना शुरू करते हैं। वहाँ भी हम डिफॉल्ट देख रहे हैं। तेल की कीमतें बढ़ रही हैं। संभव है कि यह 90-95 डॉलर प्रति बैरल तक पहुँच जाये। इससे महँगाई बढ़ोतारी। ब्याज दरें धीरे-धीरे वैश्विक स्तर पर बढ़ रही हैं। इसका असर भारत पर भी दिखेगा। जीएसटी संग्रह भी एक चेतावनी दे रहा है। इन सभी बातों को निवेशकों को ध्यान में रखना चाहिए। ये बाजार के लिए कमजोरी का कारण बन सकते हैं।

कृष्ण हरे निशान भी दिख रहे हैं क्या?

इसमें कई संदेह नहीं कि कुछ हरे निशान भी हैं। लेकिन मुझे लगता है कि हरे निशान लंबी अवधि में स्पष्टता के साथ दिखेंगे। चाइना प्लस बन हमारे लिए काफी सकारात्मक कारक है। स्पेशियलिटी केमिकल्स के क्षेत्र में यह दिख भी रहा है। जिनने भी वैश्विक खरीदार हैं, वे चीन के विकल्पों की ओर देख रहे हैं। कई ऐसे क्षेत्र दिख रहे हैं, जिनमें चीन के विकल्प के तौर पर भारत उभर सकता है। बड़ा विकल्प न सही, छोटा विकल्प ही सही।

अभी तक के जो तिमाही कारोबारी नतीजे आये हैं, उनको देख कर आपको क्या लग रहा है?

अभी तक हमने जो नतीजे देखे हैं, वे मिले-जुले कहे जा सकते हैं। हम जो भी प्रदर्शन देख



शेयर बाजार
लगातार नवी
ऊँचाइयों पर है और
आईपीओ बाजार में
बेहिसाब उत्साह
दिख रहा है। पर
क्या इसमें खतरे के
संकेत भी उमरने
लगे हैं? प्रस्तुत है
बाजार विश्लेषक
अंबरीश बालिगा से
बातचीत।

रहे हैं, हम पिछले आँकड़ों की तुलना में प्रदर्शन को नहीं देख रहे हैं, बल्कि हम विश्लेषकों की उम्मीदों की तुलना में प्रदर्शन देख रहे हैं। और विश्लेषकों की उम्मीदें इतनी बढ़ गयी हैं, क्योंकि कारोबारी साल 2020-21 की आखिरी तीन तिमाहियों के प्रदर्शन ने काफी चकित किया। इस बार भी विश्लेषकों की उम्मीदें काफी अधिक हैं। इसके मुकाबले यदि हम देखें तो रिटेल, फिल्म एविजिशन हो या रेस्टरां हो, ये तो लॉकडाउन में पूरी तरह बंद थे। इनको काफी घाटा हुआ। लेकिन कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जिनका प्रदर्शन बेहतर रहने की उम्मीद है, जैसे स्टील। वहाँ भी मार्जिन पर प्रभाव पड़ा है। ऑक्सीजन को मेडिकल जरूरतों की ओर मोड़े जाने की वजह से स्टील क्षेत्र पर इसका असर पड़ा। तिमाही नतीजों के मौसम का पहला हिस्सा आम तौर पर अच्छा रहता है। समस्या वाले नतीजे आते हैं दूसरे हिस्से में। खराब नतीजे बाद में आने की संभावना है।

अगर बड़ी कंपनियों की बात करें तो रिलायंस इंडस्ट्रीज के नतीजे अनुमान से बेहतर रहे। एलएंडटी का परिणाम ठीक रहा। आईसीआईसीआई बैंक, एसबीआई काइर्स, ऐक्सिस बैंक, यस बैंक के नतीजे भी अनुमान से अच्छे रहे। दूसरी ओर एचडीएफसी बैंक, कोटक बैंक, बजाज फाइनेंस के नतीजों ने निराश किया। टीसीएस और एचसीएल टेक के नतीजे अनुमान से कमतर रहे, जबकि इन्फोसिस का नतीजे कुल मिला-जुला रहा। एफएमसीजी के नतीजे कुल

मिला कर ठीक रहे। आईटीसी का नतीजा अनुमान के मुताबिक, जबकि एचयूएल का परिणाम अनुमान से बेहतर रहा। अगली तिमाही मोटे तौर पर सपाट रह सकती है। स्टील क्षेत्र का प्रदर्शन कुल मिला कर अच्छा रहा। लेकिन ऐसा लग रहा है कि यह अब अपने चरम पर पहुँच रहा है। सीमेंट क्षेत्र निरंतरता के साथ अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। अगली कुछ और तिमाहियों में इसका बेहतर प्रदर्शन जारी रह सकता है।

आपने बहुत सारे खतरे के संकेत गिनाये हैं। आप जिस तरह से बाजार में जोखिम देख रहे हैं, लेकिन उसके बाद भी जोमैटो और तामां दूसरे आईपीओ को लेकर अतिउत्साह हमें दिख रहा है। क्या इस अतिउत्साह में बाजार को एक खतरा देखना चाहिए?

खतरा तो देखना चाहिए। लेकिन ऐसा भी कहा जाता है कि जब कोई बुलबुला बनता है, तो यह बुलबुला अभी जिस आकार का है, फूटने से पहले उससे भी बड़ा हो सकता है। संभव है कि हम उस स्थिति में हों जब बुलबुला और बड़ा हो रहा है। यदि हम लोग निफ्टी का पीई देखें 2020-21 का, तो यह तकरीबन 30 का निकलता है। यदि जोमैटो को देखें, तो मूल्यांकन तो कुछ है नहीं इसमें। जोमैटो में तो पीई है ही नहीं। लेकिन यदि हम लोग उसकी आमदनी को ही देखते हैं, तो यह 50 गुने से अधिक चल रहा है। कुल मिला कर यह माँग और आपूर्ति में तालमेल बिगड़ने के कारण है।

क्या ये सारे संकेत आपको बता रहे हैं कि बाजार अतार्किक होता जा रहा है।

बिल्कुल।

अभी आगे भी बहुत-से आईपीओ आने हैं।
एलआईसी का भी आईपीओ आने वाला है, जो अब तक का सबसे बड़ा आईपीओ होगा। बाजार को तो सबसे अंत में उसका इंतजार होगा, क्या वह ऐसा चरण बिंदु होगा, जहाँ पर जाकर आप कहेंगे कि बुलबुला उस समय तक तो बढ़ता रहेगा, जब तक एलआईसी का आईपीओ निकल नहीं जाता।

इस बारे में बोलना मुश्किल है, क्योंकि बाजार किसी के नियंत्रण में नहीं है। जब तक एलआईसी का आईपीओ आता है, तब तक बाजार ऊपर रहे या नहीं रहे, या टिका रहे, इसके बारे में कहना मुश्किल है।

जैसा मैंने पहले कहा कि खतरे के कई संकेत हैं और वह चरम बिंदु कभी भी आ सकता है। पर यदि हम इसे आईपीओ के नजरिये से देखें तो जोमैटो सातवाँ सबसे बड़ा आईपीओ था। इन सात में से पाँच आईपीओ के दौरान या तो शेयर गिरा है या बाजार गिरे हैं।

यदि एलआईसी का आईपीओ आने तक बाजार में गिरावट नहीं आती है, तो ऐसी स्थिति में एलआईसी के आईपीओ के बाद चूँकि बाजार से पूँजी निकलेगी, तो उस समय बाजार में गिरावट आ सकती है। लेकिन यह कहना मुश्किल है कि बाजार एलआईसी के आईपीओ के पहले ही गिर जायेगा या बाद में। मेरी समझ से अगले दो-तीन महीनों के दौरान भारतीय बाजार में गिरावट आ सकती है, क्योंकि मूल्यांकन काफी ऊँचे हो गये हैं।

अभी तक जितने आईपीओ आये हैं, खास कर साल 2021 के अंदर, उनमें ऐसे कौन से शेयर हैं, जिनके बारे में आपकी सलाह होगी कि यदि निवेशक का पैसा बन रहा है तो वह उसमें से निकल जाये?

मैं तो ऐसा सभी आईपीओ के लिए कहूँगा। अगर आपका अच्छा पैसा बन रहा है तो एक बार मुनाफाकावसूली कर लीजिए। यदि बाजार गिरेगा तो कोई भी आईपीओ वाला शेयर अपने मौजूदा स्तरों पर नहीं टिक सकेगा। ये तमाम आईपीओ आये ही थे महंगे मूल्यांकन पर, और इसके बावजूद सूचीबद्ध होने (लिस्टिंग) के बाद और भी बढ़ गये हैं।

दरअसल यह माँग और आपूर्ति का मसला है। इस समय उन शेयरों की माँग काफी ज्यादा है, जो

बढ़ रहे हैं। जहाँ पर चाल (मोमेंटम) है, वहाँ पर निवेशक हैं या स्टोरियो (सेक्युलेटर) हैं। मूल्यांकन के लिहाज से देखें तो सारे ही काफी महंगे हैं। इस समय निवेशकों को चाहिए कि वे नये आईपीओ में आवेदन करें और आवंटन पाने के बाद शेयर बेच कर उसमें से निकल जायें। **ऐसे भी कई शेयर हैं, जिनके सूचीबद्ध होने के ठीक बाद के अतिरिक्त निवेशक यदि फँस गये हों, वे तो आज भी नुकसान नें होंगे।**

वही मैं बोल रहा हूँ। इस समय आईपीओ में जो रुचि है, वह शुरुआती दौर में दिख रही है क्योंकि उसमें चाल (मोमेंटम) आने की वजह से सभी लोग उसमें जुड़ जाते हैं। उसके बाद जब उसमें धीमापन आता है, तो लोग किसी और विकल्प की तलाश करने लगते हैं। और इतने अधिक आईपीओ आ रहे हैं कि लोग लगातार एक से निकल कर दूसरे में जा रहे हैं।



एलआईसी का आईपीओ आने तक बाजार में गिरावट नहीं आती है, तो ऐसी दिथिति में एलआईसी के आईपीओ के बाद चूँकि बाजार से पूँजी निकलेगी, तो उस समय बाजार में गिरावट आ सकती है। लेकिन यह कहना मुश्किल है कि बाजार एलआईसी के आईपीओ के पहले ही गिर जायेगा या बाद में। मेरी समझ से अगले दो-तीन महीनों के दौरान भारतीय बाजार में गिरावट आ सकती है, क्योंकि मूल्यांकन काफी ऊँचे हो गये हैं।

लेकिन कुछ नाम ऐसे भी हैं, जैसे हैप्पिएस्ट माइंड्स और एमटार टेक्नोलॉजीज, जिनकी लिस्टिंग उतनी धनाकेदार नहीं हुई, लेकिन बाद में उनमें काफी तेजी दिखी है। क्या यहाँ पर कहानी क्या कुछ अलग दिख रही है आपको?

यहाँ पर लंबी अवधि की कहानी तो बहुत अच्छी है। लेकिन मौजूदा स्तरों पर ये दोनों शेयर भी मुझे महंगे लग रहे हैं। और साथ ही नजारा भी। **अब अगर विनिवेश की कहानी पर आयें, तो अभी एलआईसी की हमने चर्चा की। सरकार को अपने राजकोषीय घाटे (फिस्कल डेफिसिट) को संभालने नें इस आईपीओ से बड़ा सहारा मिलेगा, यदि सरकार इसी वित्त-वर्ष के अंदर इसे ला पाती है। आपकी उम्मीद क्या है?**

सरकार के पास कोई विकल्प नहीं है। सरकार को यह आईपीओ लाना ही पड़ेगा। यदि वे बेहतर मूल्यांकन के लिए इंतजार कर रहे हैं, तो आज भी जो निजी क्षेत्र की कंपनियाँ हैं, वे जल्दी-जल्दी

आईपीओ ले कर आ रही हैं, ताकि उनको अच्छा मूल्यांकन मिल जाये। जितनी पूँजी अभी मिल रही है, उसे ले लेना बेहतर है। मेरा मानना है कि सरकार को कोशिश करके जल्दी-से-जल्दी एलआईसी का आईपीओ लाना चाहिए। जैसा अच्छा वक्त अभी चल रहा है, वैसा अच्छा वक्त ज्यादा लंबा नहीं चलता है। सरकार को इस मौके को भुना लेना चाहिए।

लेकिन एलआईसी में शायद कुछ कागजी तैयारी बची हुई है। जो पुरानी सूची है, वहाँ पर सरकार किस बात का इंतजार कर रही है? सरकार का इस साल का 1.75 लाख करोड़ रुपये के विनिवेश का बड़ा लक्ष्य बस एक ही आईपीओ से तो पूरा नहीं हो सकता है।

इसमें 70-80 हजार करोड़ रुपये हासिल करने का लक्ष्य एलआईसी से है। उसके बाद जो भी बाकी है, उनको सरकार को जल्द-से-जल्द लाना चाहिए। यदि अभी उनको बेहतर मूल्यांकन नहीं मिल रहा है, तो फिर कभी भी नहीं मिलेगा। इस बाजार में यदि किसी को बेहतर मूल्यांकन नहीं मिल रहा है, तो फिर कभी नहीं मिलेगा।

यदि सरकार आपसे याय माँगे कि सबसे पहले कौन-से आईपीओ लाने हैं, तो आप किन कंपनियों का नाम दिनेंगे?

पहले तो मैं बोलूँगा कि एलआईसी को ही जितना जल्दी हो सके, ले आयें। जो भी मसले हैं, उनको निबटा लीजिए, आपकी ही सरकार है। जितना जल्दी हो सके, सब कुछ निबटा कर एलआईसी का आईपीओ ले कर आइए। दरअसल यह ऐसा आईपीओ है, जो सरकार को राजकोषीय घाटे के मोर्चे पर भारी मदद कर सकता है।

लेकिन उससे पहले बीपीसीएल की बड़ी कहानी सुनी थी कि सब कुछ काम हो गया है, सारी तैयारी पूरी हो चुकी है। अब कहाँ अटका हुआ है नामला?

यह तो बोलना मुश्किल है कि मामला कहाँ अटका हुआ है। यह तो पिछले वित्त-वर्ष में ही आने वाला था। अगर यह नहीं हो रहा, तो बोलने के लिए कुछ बाकी नहीं है। वे कौन-से नाम हैं, जिनके बारे में आपको आश्वर्य होता है कि सरकार इनके आईपीओ को अभी तक लेकर रखो नहीं आयी?

हुड़को के बारे में घोषणा आयी है। उसके बाद एनबीसीसी है, जिसमें एक और पब्लिक इश्यू ला सकते हैं क्योंकि कंस्ट्रक्शन उद्योग का प्रदर्शन अच्छा चल रहा है। पिछले एक साल में इसका शेयर भी दोगुना हो चुका है। ■

बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक पहुँचा 5,000 के पार जुलाई 2020 की तलहटी से चौगुना हुआ बीएसई एसएमई

शेयर बाजार में तेजी की मौजूदा लहर में अगर आप सोच रहे हैं कि इसका सबसे ज्यादा फायदा मँझोले (मिडकैप) या छोटे (स्मॉलकैप) को मिला है, तो आपको बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक की चाल पर नजर डालने की जरूरत है। बीते एक साल में अगर सेंसेक्स ने 42%, बीएसई मिडकैप ने 58% और बीएसई स्मॉलकैप 87% उछाल दर्ज की है, तो इसी दौरान बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक ने 260% की जबरदस्त छलाँग लगायी है।



पिछले साल मार्च में कोरोना महामारी के फैलने के बाद पूरे शेयर बाजार में हाहाकार मचा था। उस दौरान बाजार के दिग्गज सूचकांकों - सेंसेक्स और निफ्टी ने तो जबरदस्त गिरावट झेली ही थी, साथ में शेयर बाजार के छोटे और मँझोले सूचकांक भी उसी तरह टूटे थे। इन सभी सूचकांकों ने 24 मार्च 2020 को अपनी एक तलहटी (बॉटम) बनायी थी। मगर उसके बाद बाजार सँभले और न केवल अपनी सारी गिरावट की भरपाई की, बल्कि अब तो नये रिकॉर्ड स्तरों को छू चुके हैं। 24 मार्च 2020 की तलहटी की तुलना में इस लेख के लिखे जाने तक 11 अगस्त 2021 के बंद स्तर पर सेंसेक्स ने 113%, निफ्टी 50 ने 117%, बीएसई मिडकैप ने 138% और बीएसई स्मॉलकैप ने 200% की बढ़त पायी है। मगर इन सबका प्रदर्शन फीका लगने लगता है, जब हम इसी दौरान बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक में आयी 258% की उछाल को देखते हैं।

जहाँ सेंसेक्स, निफ्टी और तमाम मिडकैप एवं स्मॉलकैप सूचकांकों ने मार्च 2020 में ही अपनी तलहटी बना ली थी और उसके बाद से ये सँभलने लगे थे, वहाँ बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक में कमजोरी कुछ समय आगे तक भी जारी रही थी। इसने साल 2020 की तलहटी 31 जुलाई 2020 को बनायी, जब यह 1,303 तक फिसला। अगर वहाँ से अभी 3 अगस्त 2021 को बने इसके रिकॉर्ड स्तर 5,450 तक चाल देखें, तो यह इस एक साल से बस थोड़े अधिक समय में चौगुना हो गया है।

बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक दरअसल बीएसई के मुख्य एक्सचेंज का हिस्सा

नहीं है, बल्कि यह बीएसई एसएमई नाम के अलग मंच (प्लेटफॉर्म) का सूचकांक है। बीएसई ने अपने बीएसई एसएमई प्लेटफॉर्म का गठन छोटे-मँझोले उद्यमों (स्मॉल एंड मीडियम एंटरप्राइजेज या एसएमई) को पूँजी बाजार से इक्विटी पूँजी जुटाने के लिए स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध (लिस्ट) होने का एक मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मार्च 2012 में किया था। इसके कुछ महीनों बाद एनएसई ने भी एनएसई इमर्ज नाम से अपना एसएमई एक्सचेंज शुरू किया। ये दोनों एसएमई एक्सचेंज ऐसी छोटी-मँझोली कंपनियों को शेयर बाजार में सूचीबद्ध होकर इक्विटी पूँजी जुटाने का अवसर देते हैं, जो बीएसई और एनएसई के मुख्य एक्सचेंजों (मेनबोर्ड) में सूचीबद्ध हो सकने की पात्रता नहीं रखती हैं।

बीएसई एसएमई पर अब तक सूचीबद्ध होने वाली कंपनियों की संख्या 343 है। इनमें से 112 कंपनियाँ अपना विस्तार करते हुए अब बीएसई के मुख्य एक्सचेंज (मेनबोर्ड) में जा चुकी हैं और अभी 231 कंपनियाँ बीएसई एसएमई में सूचीबद्ध हैं। इन 231 कंपनियों की कुल बाजार पूँजी (मार्केट कैपिटलाइजेशन) 11,396 करोड़ रुपये है। एनएसई इमर्ज में सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या 200 से ऊपर है।

दरअसल इस बाजार का छोटा आकार ही इसके ज्यादा लोकप्रिय होने में एक अड़चन है, हालाँकि बीते वर्षों में खास कर बीएसई एसएमई ने गति पकड़ी है। यदि बीएसई एसएमई पर सूचीबद्ध कंपनियों की कुल बाजार पूँजी की तुलना मुख्य एक्सचेंज से करें, तो बीएसई में सूचीबद्ध 100वाँ सबसे बड़ी (बाजार पूँजी में)

बालकृष्ण इंडस्ट्रीज ही अकेले 44,400 करोड़ रुपये से अधिक की बाजार पूँजी रखती है, यानी मुख्य एक्सचेंज की 100वाँ कंपनी अकेले ही बीएसई एसएमई में सूचीबद्ध सभी 231 कंपनियों की कुल बाजार पूँजी से चौगुनी है।

यही कारण है कि शेयर बाजार के अधिकांश बड़े खिलाड़ी और प्रतिष्ठित विश्लेषक एसएमई कंपनियों पर नजर ही नहीं डालते और एसएमई एक्सचेंजों में तरलता (लिकिविडिटी) एवं निवेशकों की सहभागिता अभी कम लगती है। एसएमई एक्सचेंजों में सूचीबद्ध कंपनियों के बारे में सूचनाओं और रिसर्च की उपलब्धता भी इसी बजह से अभी बहुत कम है। ऐसे में बीएसई एसएमई आईपीओ सूचकांक में आयी रिकॉर्ड तेजी को बहुत-से जानकार जरा सावधान नजर से देखना ही पसंद कर रहे हैं।

बाजार विश्लेषक अंबरीश बालिंग कहते हैं कि जब हर कोई नये या बाजार की नजर में नहीं आये विचारों की खोज में हो, तो लोग बड़ी कंपनियों से छोटी कंपनियों की ओर बढ़ते जाते हैं। जब एक बार चाल बन जाती है, तो फिर हर कोई बहती गंगा में हाथ धोने लगता है।

हालाँकि वैल्यूवाइज आईआर की पार्टनर शाहिना मुकद्दम कहती है कि बीते छह महीनों में ऐसे एसएमई शेयरों में काफी जानदार तेजी आयी है, जिन्होंने कोविड के चलते हुई तालाबंदी (लॉकडाउन) के बावजूद अच्छे कारोबारी नतीजे सामने रखे हैं। जिन एसएमई कंपनियों ने लाभ दिखाया और अच्छा प्रदर्शन किया, उनके शेयर एक साल में तीन से पाँच गुणा तक हो गये। इनमें एसएमई सूचकांक में शामिल कई प्रमुख एसएमई भी शामिल हैं। ■

शेयर बाजार में उछाल, खुदरा (रिटेल प्रतिभागियों से आयी तरलता (लिक्रिडिटी) और टीना फैक्टर (कम प्रतिफल या रिटर्न की संभावना के कारण अन्य परिसंपत्ति वर्गों के बीच कोई विकल्प नहीं होने) से न केवल सेसेक्स और निफ्टी को लाभ हुआ है, बल्कि एसएमई सूचकांक ने भी पिछ्ले 18 महीनों से लगभग 150% का शानदार प्रतिफल दिया है।

क्या यह सब केवल अति-उत्साह है? या फिर क्या यह भविष्य में विकास की ऊँची अपेक्षाओं के कारण हो रहा है? या यह केवल सुनी-सुनाई अटकलबाजी, अफवाहों और अवांछित सिफारिशों का परिणाम है?

सूचीबद्ध (लिस्टेड) एसएमई कंपनियों का क्षेत्र अपेक्षाकृत नया है। इसलिए इसके संक्षिप्त इतिहास को ध्यान में रखते हुए एसएमई एक्सचेंज पर अच्छा या खराब प्रदर्शन करने वाले व्यवसायों की एक विशेष प्रवृत्ति का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है।

हालांकि, मुख्य शेयर बाजारों (मेन बोर्ड) को देखें तो उनमें लगभग 5,300 सूचीबद्ध व्यवसाय हैं और उनकी कुल बाजार पूँजी (मार्केट कैप) में शीर्ष 100 व्यवसायों का लगभग 80% हिस्सा है। दूसरे शब्दों में, बीते वर्षों में (सेंसेक्स के अभी 42 वर्ष हुए हैं) जो बड़ा है वह और अधिक बड़ा हो गया है, जबकि छोटे या तो नष्ट हो गये हैं या बस किसी तरह परिधि पर अपना अस्तित्व बचाये हुए हैं।

भारत में 6.30 करोड़ से अधिक एसएमई और एमएसएमई हैं, जिन्हें आगे बढ़ने के लिए, व्यवसाय जमाने के लिए और कुछ मामलों में अस्तित्व बचाने के लिए भी पूँजी की आवश्यकता होती है। अधिकांश एसएमई एक मूल्य शृंखला का हिस्सा हैं।

इसका अर्थ यह है कि उनके कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता और उनके अंतिम उत्पादों के खरीदार दोनों ही बड़े व्यवसाय होते हैं। उदाहरण के लिए, पिस्टन जैसी एक छोटी वस्तु इस्पात (स्टील) या एल्युमीनियम से बनी होती है और इन दोनों धातुओं के निर्माता बड़े दिग्गज होते हैं। साथ ही, उनका खरीदार एक कार निर्माता है, जो फिर से एक बड़ी कंपनी है, जो कई स्रोतों से बड़ी मात्रा में पिस्टन खरीदती है।

जब कारोबारी चक्र में बदलाव के कारण या वृहत् आर्थिक (मैक्रो) कारकों के चलते कार की माँग कम हो जाती है, तो इसका तत्काल प्रभाव पिस्टन निर्माता पर होता है। वह पिस्टन निर्माता पूरी तरह से एक या दो बड़े खरीदारों पर निर्भर होता है। इसलिए पिस्टन निर्माण करने वाली

एसएमई शेयर हैं ऊँचा जोखिम ले सकने वाले निवेशकों के लिए

छोटा हमेशा सुंदर ही नहीं होता, छोटा कभी-कभी जोखिम भरा, कभी अप्रत्याशित और कभी बस झाग या बुलबुला भी होता है।

एसएमई के खरीदार उसके मार्जिन को एकदम निचोड़ लेगे। इसी तरह, अगर वैश्विक स्तर पर इस्पात की कीमतें बढ़ती हैं, तो पिस्टन निर्माता को उसकी गर्मी का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार एसएमई के पास न तो कीमत या मार्जिन को नियंत्रित करने की क्षमता है, न ही माँग-आपूर्ति का मेल अस्थायी रूप से बिगड़ने से उत्पन्न होने वाली असाधारण स्थितियों को झेलने की शक्ति है।

इसके अलावा, उसका व्यापार एसएमई एक्सचेंज पर एक छोटी मात्रा के साथ सूचीबद्ध (लिस्ट) होता है, जिसके चलते उनमें काफी हद तक तरलता (लिक्रिडिटी) की कमी बनी रहती है। इसका मतलब यह है कि जब किसी को खरीदने या बेचने की जरूरत होती है तो हमेशा बिड और आस्क में स्प्रेड होता है, यानी खरीदार और विक्रेता के भावों में काफी अंतर होता है।

सूचनाओं को लेकर विसंगतियाँ भी मौजूद रहती हैं, क्योंकि कॉर्पोरेट प्रशासन का स्तर और पारदर्शिता सीमित है। इन व्यवसायों पर नजर रखना भी एक चुनौती बन जाती है। बही-खाते, संख्याओं की प्रामाणिकता, शेयरों की समीक्षा करने और उनके व्यापारिक मॉडल में गहरा गोता लगाने वाले विश्लेषक, एकार्टिंग, टिकाऊ व्यापार कवच (मोट) आदि को लेकर भी कमी महसूस की जाती है। इसके चलते एसएमई शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनी का अध्ययन, विश्लेषण और उसका भविष्य परखने की कोशिश करने के दौरान निवेशकों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अधिकांश एसएमई के पास अभी भी पुरानी तकनीक है और सीमित पैमाने एवं सीमित कौशल के साथ वे श्रम-उन्मुख ज्यादा हैं, जो इन व्यवसायों में दीर्घकालिक निवेश के लिए एक और खतरा पैदा करता है।

पर एसएमई एक्सचेंज में सूचीबद्ध होने वाले इन व्यवसायों के बारे में सब कुछ नकारात्मक ही नहीं है, क्योंकि सूचीबद्ध होने पर कुछ एसएमई अपनी यात्रा का रास्ता बदल देते हैं। ऐसे एसएमई बाजार से जुटायी गयी इक्रिटी पूँजी का बुद्धिमानी

से उपयोग कर अपने उच्च लागत वाले कर्ज को चुका देते हैं और कार्यशील पूँजी की जरूरतें पूरी करते हैं। एक्सचेंज पर सूचीबद्ध हो जाने के चलते उन्हें अपने बही-खातों को डिजिटाइज करने और पारदर्शिता बढ़ाने पर ध्यान देता पड़ता है। इसलिए ऐसे एसएमई निवेश के लिए एक अच्छा विकल्प पेश कर सकते हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रख कर, जो निवेशक उच्च जोखिम, उच्च अस्थिरता और उच्च अनिश्चितता वाले इन शेयरों पर दाँव लगाने के इच्छुक हैं, उन्हें सूचीबद्ध एसएमई कंपनियों के लिए अपना 10% पूँजी आवंटन करना चाहिए। एसएमई एक्सचेंज उन लोगों के लिए एक उच्च जोखिम, उच्च प्रतिफल (रिटर्न) वाला विकल्प प्रस्तुत करता है, जिनके लिए इनमें लगायी गयी पूरी पूँजी ढूब जाने पर भी बहुत फर्क नहीं पड़ता है। खुदरा और विशेष रूप से छोटे निवेशकों को इनमें निवेश के लालच, मृगतृष्णा और मिथक से दूर रहना चाहिए क्योंकि यह क्षेत्र उनकी पूँजी और गाढ़ी मेहनत की कमाई को गंभीर खतरे में डाल सकता है। ■

सिद्धार्थ दस्तोवी
एमडी एवं सीओओ,
ऐबिट एसेट मैनेजमेंट



વિ ત્ત વર્ષ 2021-22 કી પહલી તિમાહી કે કારોબારી નતીજે સામને આને કે બાદ સે રિલાયંસ કે શેયર ભાવ થોડે ઊપર ચઢ્યે કે બાદ ઇસમેં એક નરમી કા હી રુઝાન બના। કંપની કે નતીજે જબ 20 જુલાઈ કો ઘોષિત હુએ, તો યહ 19 જુલાઈ કે બંદ ભાવ 2,098.95 રૂપયે કી તુલના મેં 0.25% કી ગિરાવટ કે સાથ 2,093.80 પર બંદ હુઅ થા। અગલે કુછ દિનોં મેં યહ 23 જુલાઈ કો 2,134 રૂપયે તક જાને કે બાદ 26 જુલાઈ કો 2,016 રૂપયે તક ફિસલા। ઉસકે બાદ યહ ફિર સે સંભળને કા રુઝાન દિખા રહા હૈ। અબ અગલે એક સાલ કે અવધિ કે લિહાજ સે કુછ પ્રમુખ બ્રોકિંગ ફર્મોની ઓર સે દિયે ગયે લક્ષ્યોં ઔર તિમાહી નતીજોં પર ઉની પ્રતિક્રિયાઓનો દેખેતે હૈને।

ક્રેડિટ સુઇસ કી ઉદાસીન રેટિંગ

- લક્ષ્ય : 2,020 રૂપયે
- સલાહ : ઉદાસીન
- 22-23 મેં ઈપીએસ અનુમાન : 100.86 રૂ.
- 22-23 કી ઈપીએસ પર પીઈ : 20.9

ક્રેડિટ સુઇસ ને રિલાયંસ કે તિમાહી નતીજોં પર અપની રિપોર્ટ મેં ઇસકા લક્ષ્ય 2,020 રૂપયે રહ્યા હૈ। રિપોર્ટ બનને કે સમય કે ભાવ 2,105 રૂપયે કી તુલના મેં કુછ નીચે કા લક્ષ્ય હોને કે કારણ ક્રેડિટ સુઇસ ને ઇસકે લિએ અપની સલાહ યા રેટિંગ ઉદાસીન (ન્યૂટ્રલ) રહ્યી હૈ। કંપની કી પ્રતિ શેયર આય (ઈપીએસ) કે લિએ ક્રેડિટ સુઇસ ને 2020-21 કે 76.54 રૂપયે કી તુલના મેં 2021-22 કે લિએ 81.64 રૂપયે, 2022-23 કે લિએ 100.86 રૂપયે ઔર 2023-24 કે લિએ 117.11 રૂપયે કા અનુમાન લગાયા હૈ। ઇસને 2022-23 કી અનુમાનિત ઈપીએસ પર 20.9 કે મૂલ્ય-આય અનુપાત (પ્રાઇસ અર્નિંગ યા પીઈ મલ્ટીપલ) કે આધાર પર લક્ષ્ય નિર્ધારિત કિયા હૈ।

ક્રેડિટ સુઇસ કો રિલાયંસ કે ઇન તિમાહી નતીજોં મેં યહ બાત અચ્છી લગી હૈ કિ જિઓ કી ગ્રાહક સંખ્યા ઔર સાથ હી ડિજિટલ ન્યૂ કોમર્સ કી આય મેં તેજ વૃદ્ધિ દિખ રહી હૈ। રિલાયંસ અપને જિયોમાર્ટ મેં માર્કેટપ્લેસ જોડને કી તૈયારી કર રહી હૈ। ઇસકા મતલબ યહ હૈ કિ અમેજન, ફિલપકાર્ટ આદિ કી તરહ હી જિયોમાર્ટ પર ભી અલગ-અલગ વિક્રેતા અપને સામાન બેચ સકંગે। મુખ્ય રૂપ સે જિયો કે પ્રદર્શન ઔર કંપની કે ડિજિટલ પ્રયાસોનો કો લેકર ક્રેડિટ સુઇસ કા નજરિયા સકારાત્મક હૈ। અપની પિછળી રિપોર્ટ મેં દિયે ગયે લક્ષ્ય સે ઇસ રિપોર્ટ મેં ક્રેડિટ સુઇસ ને લક્ષ્ય કો 1,930 રૂપયે સે બઢા કર 2,020 રૂપયે કિયા હૈ, હાલોંક બાજાર ભાવ ઇસસે ઊપર રહ્યે કી વજહ સે ઇસને ઉદાસીન (ન્યૂટ્રલ) રેટિંગ દી હૈ।

રિલાયંસ કે તિમાહી નતીજોં કે બાદ વધ્યા હૈ ઇસકે લક્ષ્ય ભાવ?

દેશ કી સબસે પ્રમુખ સૂચીબદ્ધ કંપની રિલાયંસ ઇંડસ્ટ્રીઝ કે તિમાહી કારોબારી નતીજે આને કે બાદ તમામ બ્રોકિંગ ફર્મોને અપની રિસર્ચ રિપોર્ટ મેં નયે લક્ષ્ય ભાવ સામને રખ્યે હૈને। ઇન બ્રોકિંગ ફર્મોને રિલાયંસ કે તિમાહી નતીજોં કો લેકર વધ્યા કહા હૈ ઔર આને વાલે સમય મેં હૈ રિલાયંસ કી કિન બાતોની પર ઉનકી સબસે જ્યાદા નજાર રહેગી, ઇસ બારે મેં પ્રસ્તુત હૈ એક વિશ્લેષણ।



ગોલ્ડમેન સૈક્સ : મજબૂત આય વૃદ્ધિ કા અનુમાન

- લક્ષ્ય : 2,435 રૂપયે
- સલાહ : ખરીદેં
- 22-23 મેં ઈપીએસ અનુમાન : 168.62 રૂ.
- 22-23 કી ઈપીએસ પર પીઈ : 12.5

ગોલ્ડમેન સૈક્સ ને રિલાયંસ કે લક્ષ્ય ભાવ 2,435 રૂપયે રહ્યા હૈ ઔર ઇસે ખરીદને કી સલાહ દી હૈ। કંપની કી ઈપીએસ કો લેકર ભી ઇસકે અનુમાન ક્રેડિટ સુઇસ કે મુકાબલે જ્યાદા સકારાત્મક હૈને। ઇસકા અનુમાન હૈ કિ રિલાયંસ કી ઈપીએસ 2020-21 કે 80.04 રૂપયે કી તુલના મેં 2021-22 મેં 121.26 રૂપયે,

2022-23 મેં 168.62 રૂપયે ઔર 2023-24 મેં 187.83 રૂપયે રહ સકતી હૈ। ઉસકે હિસાબ સે યદિ આપ 2022-23 કી અનુમાનિત આય પર પીઈ અનુપાત દેખેં તો યહ 12.5 ગુણ બનતા હૈ। ઉસ હિસાબ સે રિલાયંસ કે શેયર આપકો મહાંગા નહીં લગેગા।

ઇસ રિપોર્ટ મેં જિન મુખ્ય બાતોની ચર્ચા હૈ, ઉનમે પહલી ચીજ યહ હૈ કિ ઇન તિમાહી નતીજોને મેં કંસોલિડેટેડ કોર એબિટા ગોલ્ડમેન સૈક્સ કે અનુમાન સે થોડી કમ રહી હૈ। દૂસરે, ખુદરા (રિટેલ) વ્યવસાય મેં અચ્છી સંખ્યા મેં નયે સ્ટોર ખુલને કી સરાહના કી ગયી હૈ। નયે સ્ટોર ખુલને કી બાત કેવલ ગોલ્ડમેન સૈક્સ હી નહીં, કર્ડ અન્ય બ્રોકિંગ ફર્મોની રિપોર્ટ મેં ભી પ્રમુખતા સે

रखी गयी है। इसके अलावा, नयी श्रेणियाँ शुरू करके डिजिटल पेशकश में तेजी लायी गयी है।

गोल्डमैन सैक्स ने इस पर भी ध्यान दिया है कि जियो में ग्राहकों के जुड़ने की गति फिर से तेज हो रही है, जो बीच में थोड़ी धीमी पड़ी थी। गोल्डमैन सैक्स को आशा है कि जियो के आने वाले नये एंड्रॉयड फोन से ग्राहकों के जुड़ने की गति आगे और तेज हो सकती है। वहाँ घरेलू गैस की मात्रा में वृद्धि होने को भी इस फर्म ने प्रमुख सकारात्मक बातों में गिना है। साथ ही वृद्धि आर्थिक (मैक्रो-इकोनॉमिक) मोर्चे पर भी कई सकारात्मक पहलू कंपनी के पक्ष में जाने की आशा है। इन सबके चलते गोल्डमैन सैक्स का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2020-21 से 2022-23 के बीच कंपनी की आय (ईपीएस) में 41% चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़त हो सकती है।

मॉर्गन स्टैनले : आय वृद्धि का नया चक्र

- लक्ष्य : 2,269 रुपये
- सलाह : ओवरचेट
- 22-23 में ईपीएस अनुमान : 119.71 रु.
- 22-23 की ईपीएस पर पीई : 17.6

रिलायंस को लेकर मॉर्गन स्टैनले की आशाएँ गोल्डमैन सैक्स जैसी ऊँची नहीं हैं, लेकिन क्रेडिट सुइस की तरह बिल्कुल हल्की भी नहीं हैं। इस फर्म ने 2,269 रुपये का लक्ष्य भाव रखने में आगे आय वृद्धि चक्रवृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ोत्तरी दर्ज होगी। कंपनी की सकारात्मक बातों का जिक्र करते हुए इसने कहा है कि रसायन (केमिकल) व्यवसाय में तेजी है, टेलीकॉम में ग्राहकों की संख्या बढ़ रही है, तेल की कीमतें बढ़ने का भी फायदा कंपनी को मिल रहा है, गैस उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो रही है और न्यू कॉमर्स बिक्री में तेजी ने चौंकाया है। कंपनी के डिजिटल प्रयासों यानी जियो प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से कंपनी जो बिक्री कर रही है, उसमें कुछ अच्छी बातें होती हुई नजर आ रही हैं।

आने वाले संकेतों पर मॉर्गन स्टैनले का कहना है कि रसायन (केमिकल) की कीमतों में काफी

अच्छी तेजी बन रही है, जिसका फायदा कंपनी को आने वाले समय में भी मिलेगा। गैसोलिन यानी पेट्रोल पर मार्जिन कई वर्षों के ऊपरी स्तर पर है।

मोबाइल ग्राहकों की संख्या बढ़ने का जिक्र तो कई फर्मों ने अपने रिपोर्ट में किया है, पर मॉर्गन स्टैनले ने इस बात को भी प्रमुखता दी है कि ब्रॉडबैंड ग्राहकों की संख्या बढ़नी शुरू हुई है। इसका मतलब यह है कि ब्रॉडबैंड पर कंपनी ने जो निवेश कर रखा है, उसका मुद्रीकरण अब तेजी से होना शुरू हो जायेगा। साथ ही फर्म का कहना है कि मोबाइल ग्राहक कोविड के चुनावी के बावजूद यानी विपरीत परिस्थितियों में बढ़े हैं, इसलिए यह एक ज्यादा सकारात्मक पहलू बन जाता है। गैस उत्पादन बढ़ना और गैस की कीमतों में भी वृद्धि होना मॉर्गन स्टैनले के हिसाब से एक और सकारात्मक पहलू है।

नोम्युरा : आगे सभी श्रेणियों में सुधार

- लक्ष्य : 2,400 रुपये
- सलाह : खरीदें

नोम्युरा ने रिलायंस के लिए 2,400 रुपये का लक्ष्य भाव रखते हुए खरीदारी की सलाह दी है। इसने अपनी रिसर्च रिपोर्ट में कहा है कि कंपनी का कंसोलिडेटेड एबिटा उसके अनुमान के मुताबिक और शुद्ध लाभ उसके अनुमान से 14% ज्यादा रहा है। खुदरा (रिटेल) व्यवसाय में कुछ कमजोरी रही है क्योंकि अप्रैल-जून तिमाही के बीच सीमित ही सही, लेकिन लॉकडाउन का असर तमाम जगहों पर रहा है। नोम्युरा के मुताबिक ऊर्जा (एनर्जी) व्यवसाय और जियो के प्रदर्शन ने रिटेल में आयी कमजोरी की भरपाई की है। आगे चलकर सभी श्रेणियों में कारोबार में सुधार होने की आशा नोम्युरा के हिसाब से बनती है। साथ ही कंपनी के ओ2सी व्यवसाय में आगे चल कर रिफाइनिंग मार्जिन बढ़ने का फायदा कंपनी को मिलेगा।

जेफरीज : जियो का लाभ बेहतर

- लक्ष्य : 2,580 रुपये

जेफरीज ने रिलायंस के शेयर के लिए 2,580 रुपये का काफी सकारात्मक लक्ष्य दिया है। इस फर्म ने अपनी रिपोर्ट में खास तौर पर जियो व्यवसाय की समीक्षा की है। इसके मुताबिक जियो व्यवसाय की आमदनी और एबिटा अनुमान के मुताबिक रही है, जबकि शुद्ध लाभ अनुमान से अधिक रहा है। जियो ने बीती तिमाही में शुद्ध रूप से 1.43 करोड़ नये ग्राहक जोड़े हैं, यानी यह संख्या कुल वृद्धि में से उसी अवधि में हट जाने वाले ग्राहकों को घटाने के बाद की है।

मोतीलाल ओसवाल : जियो और रिटेल की ताकत

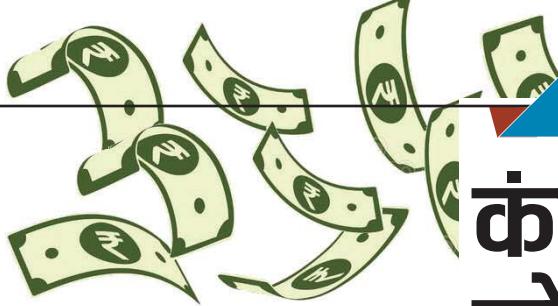
- लक्ष्य : 2,485 रुपये
- सलाह : खरीदें
- 22-23 में ईपीएस अनुमान : 113.7 रु.
- 22-23 की ईपीएस पर पीई : 18.9

मोतीलाल ओसवाल फाइनैशियल सर्विसेज ने अपनी रिपोर्ट में रिलायंस का लक्ष्य 2,485 रुपये का दिया है और खरीदारी की सलाह दी है। इसकी रिपोर्ट के अनुसार रिलायंस की प्रति शेयर आय (ईपीएस) 2020-21 के 67.70 रुपये की तुलना में 2021-22 में 88.70 रुपये और 2022-23 में 113.70 रुपये रहने वाली है। 2022-23 की इस अनुमानित ईपीएस के हिसाब से पीई अनुपात 18.9 गुणा बनता है। मोतीलाल ओसवाल की रिपोर्ट में आकलन है कि जियो फोन नेक्स्ट आने के बाद नये ग्राहकों की मासिक संख्या औसतन 71 लाख पर पहुँच सकती है, जो जियो व्यवसाय के लिए काफी अच्छा संकेत होगा। वहाँ रिटेल में बीती तिमाही में 123 नये स्टोर तो खुले हैं, पर 700 और नये स्टोर काफी हद तक तैयार हो चुके हैं।

कंपनी के मूल्यांकन के लिए इस फर्म ने सम ऑफ द पार्ट्स (एसओटीपी) यानी अलग-अलग व्यवसायों का अलग-अलग मूल्यांकन करके जोड़ने की पद्धति अपनायी है। इन व्यवसायों का मूल्यांकन ओ2सी यानी तेल से लेकर रसायन व्यवसाय के लिए 776 रुपये प्रति शेयर, ईएंडपी के लिए 68 रुपये प्रति शेयर, जियो व्यवसाय के लिए 875 रुपये प्रति शेयर और रिटेल के लिए 771 रुपये प्रति शेयर आँका गया है।

दिलचस्प है कि एक समय कंपनी के मुख्य व्यवसाय ओ2सी और ईएंडपी की तुलना में अब ज्यादा मूल्यांकन जियो और रिटेल व्यवसायों का हो गया है। जियो और रिटेल का मूल्यांकन जुड़ना पिछले कुछ वर्षों की ही देन है, हालाँकि इनमें निवेश काफी पहले शुरू हो गया था।

वहाँ हाल की सालाना आम बैठक (एजीएम) में कंपनी के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने जितने नये व्यवसायों की बात की है, उनमें से किसी का भी मूल्य अभी कंपनी के कुल मूल्यांकन में नहीं जोड़ा जा रहा है। जब उन व्यवसायों में निवेश होगा और उसके बाद जब उनसे आमदनी शुरू होने की उम्मीद बन जायेगी, तब जाकर बाजार उन व्यवसायों की कीमत आँकना शुरू करेगा। अभी न्यू एनर्जी और गोगा फैक्ट्री आदि की जो भी बातें हो रही हैं, इन सबका मूल्यांकन भी आगे चल कर जुड़ेगा, पर उसमें कई वर्षों का इंतजार करना पड़ सकता है। ■



કંપનિયોં કે કૈપેક્સ ચક્ર કો ભુનાને કે લિએ રહેણે તૈયાર

અભી જિસ તરહ સે ધાતુ (મેટલ), વિત્તીય સેવાઓ (ફાઇનેશિયલ સર્વિસેજ) ઔર બુનિયાદી ઢાંચા (ઇન્ફ્રા) ક્ષેત્રોં કી સ્થિતિ હૈ, જૈસે ઉનકે ઑર્ડર બુક હૈનું, ખાસ કર ઇન ક્ષેત્રોં કી સ્માલ્લકેપ કંપનિયોં કે જો ઑર્ડર બુક હૈનું,



શોનેશ કુમાર
બાજાર વિલેષક

ઔર જિસ તરહ સે ઇનકે સાથ નયે ઑર્ડર જુડ રહે હૈનું, ઉસસે પૂંજીગત વ્યય ચક્ર (કૈપેક્સ સાઇકલ) કો લેકર મેરી ઉમ્મીદેં બઢ રહી હૈનું। કિસી ક્ષેત્ર કી બડી કંપનિયોં કે ઑર્ડર બુક બઢને પર ચકિત નહીં હોના ચાહિએ।

લેકિન ઉસી ક્ષેત્ર કી છોટી કંપનિયોં કે ઑર્ડર બુક મેં યદિ બઢોતરી હો રહી હૈ, તો ઇસસે ઉમ્મીદ જગતી હૈ કી કૈપેક્સ સાઇકલ કી થીમ યા કહાની ઉભર કર સામને આયોગી। પૂંજીગત વ્યય ચક્ર કી કહાની શુરૂ મેં બનું ધીરે બઢતી હૈ। જબ તક હમ સમજી સકેંગે, તબ તક બનું ધીરે રહેંગે। ઇસકે બાદ અચાનક સે ઇસકી ગતિ બનું બઢ જાતી હૈ। લેકિન જબ તક સમજી મેં આયોગ, તબ તક શેયરોં કી કીમતે ઊપર નિકલ ચુકી હોતી હૈનું। ઇન કંપનિયોં કે નતીજે દેખ કર મુજ્જે એસા લગ રહા હૈ કી કૈપેક્સ થીમ કી ઉમ્મીદ શાયદ અબ સચ બન સકતી હૈ।

સામાન્યત: કંપનિયોં અપની શત-પ્રતિશત ઉત્પાદન ક્ષમતા કા ઉપયોગ નહીં કરના ચાહતી હૈનું, ઇનકા ઉપયોગ સ્તર 80-85% કે દાયરે મેં રહતું હૈ। કંપનિયોં ઇસી દાયરે મેં રહના ચાહતી હૈનું, તાકિ ઇનની જગહ બચી રહે કી કબી અતિરિક્ત ઇસ્તેમાલ કરના પડે તો ઇસ્તેમાલ હો સકે। લેકિન કુછ ટેક્સ્ટાઇલ કંપનિયોં મેં અબ 100% સે અધિક ક્ષમતા પર ભી કામ હો રહા હૈ। ઇનકો દેખ કર લગતી હૈ કી ઇનકો અબ ક્ષમતા વિસ્તાર કી જરૂરત પડેગી, કયોકિ ઇનકે ઑર્ડર બુક બેહતર હો રહે હૈનું। જબ ઇન્હેં ઔર આદેશ મિલ રહે હૈનું તો ઉસ હિસાબ સે બિના ક્ષમતા વિસ્તાર કિયે યહ સંભવ નહીં હૈ કી આગે કી ચીજોં કો સહી તરીકે સે પ્રબંધન કિયા જા સકે। યદિ ક્ષેત્રોં કી બાત કરેં

તો મુખ્ય રૂપ સે મુજ્જે મશીન ટૂલ્સ ઔર કુછ ઇન્ફ્રા કંપનિયોં મેં એસા દિખ રહા હૈ કી ઇનમે પૂંજીગત વ્યય ચક્ર (કૈપેક્સ સાઇકલ) અબ શરૂ હોના ચાહિએ।

જિન કંપનિયોં કે ઑર્ડર બુક ઇને અછે હૈનું કી ઉનકો નયા કૈપેક્સ કરને કી યાની ક્ષમતા વિસ્તાર કરને કી જરૂરત પડેગી, સબસે પહલે તો યહ ઉનકે લિએ સકારાત્મક હૈ। દૂસરે, ઉસ પૂંજીગત વિસ્તાર કે લિએ યે

સ્થિતિ શુરૂ કે સંકેત) નજર આ રહે થે, તબ કોરોના મહામારી આ ગયી। અબ જા કર કાફી સંભવ હૈ કી જો કંપોનેન્ટ સપ્લાયર હૈનું, ઇન સબકો અબ લાભ મિલને વાલા હૈ। ઉનકો અપના વિસ્તાર કરના હોગા। છોટી કંપનિયોં જબ તક જરૂરત નહીં પડે, તબ તક ક્ષમતા વિસ્તાર નહીં કરતીં। અબ ઉનકા વક્ત આ ગયા હૈ ક્ષમતા વિસ્તાર



કંપનિયોં જિનકો

આદેશ દેંગી, ઉનકે લિએ ભી યહ ફાયદેમંદ હૈ। તો સવાલ યહ હૈ કી કિ કિસ તરહ કે પ્રતિફળ (રિટર્ન) કહાઁ સે મિલતે હૈનું? જો કંપનિયોં પૂંજીગત વિસ્તાર કર રહી હૈનું, જો વાસ્તવ મેં ઉત્પાદન કર રહી હૈનું, વહાઁ પર પ્રતિફળ પહલે આતે હૈનું। લેકિન વહાઁ પર પ્રતિફળ જ્યાદા બડે નહીં હોતે। લેકિન ઉનકે જો આપૂર્તિકર્તા (સપ્લાયર) હોતે હૈનું, વહાઁ પર કૈપેક્સ કા કાફી અસર હોતા હૈ। વહાઁ પર વાસ્તવિક માંગ પૈદા હોતી હૈ, અસલ નિવેશ માંગ વહાઁ પર બનતી હૈ, ઔર વહાઁ પર પ્રતિફળ જ્યાદા બડા હોતો હૈ।

એક ઉદાહરણ સે ઇસે દેખોં। ટાટા સ્ટીલ જેસી એક બડી કંપની કો ઉસકી રિફેક્ટ્રી કે લિએ, અન્ય કામોં કે લિએ આપૂર્તિકર્તાઓં કી જરૂરત હોતી હૈનું। અગાર ટાટા સ્ટીલ કી વૃદ્ધિ હોતી હૈ તો ઉસકા ફાયદા ઉસકે ઇન આપૂર્તિકર્તાઓં કી ભી હોતા હૈ। વૈસે હી મુજ્જે જો લગતા હૈ કી જો ઉત્પાદક કંપનિયોં હૈનું, ઉનકે આપૂર્તિકર્તાઓં કી શેયરોં મેં અભી બનું જગહ બાકી હૈનું।

સાલ 2017 સે હમ પૂંજીગત વ્યય ચક્ર કા આરંભ હોને કી પ્રતીક્ષા કર રહે થે। ઇસકે આધાર પર સ્માલ્લ કૈપ શેયરોં મેં, ઉન આપૂર્તિકર્તાઓં મેં નિવેશ બને હુએ થેં। વહ આશા તો અસલ મેં સચ હો નહીં પણી, કયોકિ જબ જનવરી 2020 કે આસ-પાસ થોડે નવાંકુર (ગ્રીન શૂટ્સ યા બેહતર

કરને કા।

અભી એસી સ્થિતિ હૈ કી આપને કિસી ચીજ કો એક ડિલ્બે મેં બંદ કરકે રહા હુએ હૈ ઔર વહ નિકલને કી કોશિશ કર રહા હૈ। જિસ દિન ઇસ ડિલ્બે કા ઢકન ખુલેગા, વહ બડી તેજી સે નિકલેગા ઔર બેહતરીન પ્રદર્શન આરંભ હો જાયેગા। અભી પૂરી અર્થવ્યવસ્થા અટકી હુઈ હૈ। જો પ્રદર્શન હમ દેખના ચાહ રહે હૈનું, વહ આ નહીં રહા હૈ। એક બાર કોરોના પૂરી તરહ સે ખત્મ હો જાયે, તો જિતને લોગ અભી પીછે બચે હુએ હૈનું, વે બડી તેજી સે આગે આયેગો, પૂરી કૈપેક્સ વૃદ્ધિ સામને આયોગી ઔર જિસ તરહ સે વૈશ્વિક સ્તર પર બુનિયાદી ઢાંચા (ઇન્ફ્રા) ક્ષેત્ર મેં વ્યય કી યોજનાએં હૈનું, ઉસકે હિસાબ સે દેખા જાયે તો ઊપર કી ઓર ઇસકે લિએ કોઈ સીમા હી નહીં હૈ।

અગાર આપ કૈપેક્સ થીમ કો ભુનાના ચાહતે હૈનું, ઉસ પર પહલે સે નજર જમા કર બૈઠના ચાહતે હૈનું, તો વે કૌન-સી ચીજેં હૈનું, જિન પર ધ્યાન દે કર આપકો પૈસે લગાને હૈનું? કૈપેક્સ થીમ મેં મુખ્યત: દો ચીજેં દેખની હોતી હૈનું, એક યા કિ ઇનવેન્ટરી કેસે નિકલ રહી હૈનું, ઔર દૂસરી યા કિ ઑર્ડર બુક કૈસા બન રહી હૈનું। આમ તૌર પર હમ દેખતે હૈનું કી ઉસ કંપની કા ઑર્ડર બુક ટૂસેલ્સ કા અનુપાત કિસ તરહ કે સંકેત દે રહી હૈનું। અગાર વહ ઑર્ડર બુક ટૂસેલ્સ અનુપાત હર બાર થોડા બેહતર હોતા જાતા હૈ, ઔસત કે ઊપર બઢતા જાતા હૈ ઔર કંપની મેં ક્રિયાન્વયન કે મોચે પર કબી કોઈ મસલા નહીં રહી હૈનું, તો વૈસી કંપની મેં નિવેશ કરને સે આપકો ફાયદા હો સકતા હૈ। ■

महीने के सबसे तेज/कमजोर शेयर (बीएसई ए समूह)

सबसे तेज	बंद भाव 30.7.21	बंद भाव 29.6.21	बदल (%)
आइनॉव्स विंड	139.35	82.05	69.84
जेएसब्लू एनर्जी	250.5	162.35	54.30
अरविंद फैशंस	210.35	136.45	54.16
जिंदल स्टेनलेस	162.2	107.4	51.02
तैजस नेटवर्क्स	258.3	171.5	50.61
शंकर बिल्डिंग प्रोडक्ट्स	654.25	440.35	48.57
हिमरांगिंग का सीड	265.65	180.1	47.50
वेलस्पन इंडिया	133.35	93.7	42.32
जिंदल स्टेनलेस (हिसार)	295.55	207.9	42.16
वर्धमान टेक्सटाइल्स	1,909.80	1,368.55	39.55
गायत्री प्रोजेक्ट्स	43.9	31.65	38.70
जीएसीएल	372.85	269.2	38.50
जेनसार टेक्नोलॉजीज	416.9	303.2	37.50
वी-मार्ट रिटेल	3,867.70	2,820.10	37.15
रेन इंडस्ट्रीज	261.15	192.7	35.52
इविटास होल्डिंग्स	128.5	94.95	35.33
कैपिलन प्लाइट	884.45	659.45	34.12
महिंद्रा लॉजिस्टिक्स	748.2	558.55	33.95
लक्ष्मी मधीन	8,632.45	6,529.15	32.21
इंडियाबुल्स रियल एस्टेट	151.5	115.2	31.51
महिंद्रा लाइफस्ट्रेस	762.45	590.65	29.09
एलएंडटी टेक्नोलॉजी	3,710.25	2,892.50	28.27
मनपुरम फाइबर्स	207.3	162.65	27.45
आईआईएफएल फाइबर्स	304.5	239.55	27.11
इडेलवाइज फाइबरिशियल	91.75	72.2	27.08
ट्राइडेंट	20.65	16.25	27.08
कोफोर्ज	5,087.30	4,062.05	25.24
जैन इंटरेशन	32.35	25.9	24.90
शेफलर इंडिया	6,923.95	5,543.85	24.89
शोभा	596.55	478.8	24.59
एमफैसिस	2,597.60	2,085.00	24.59
रेडिंग्टन	327.3	262.9	24.50
सनटेक रियल्टी	381.35	306.95	24.24
कैपीआर मिल	1,885.10	1,522.75	23.80
नोसिल	261.25	211.8	23.35
ईक्लर्क्स सर्विसेज	2,242.05	1,824.10	22.91
टाटा स्टील	1,433.75	1,172.45	22.29
सीसीएल प्रोडक्ट्स	442.75	362.2	22.24
एसआरएफ	8,660.00	7,084.50	22.24
ऑलकार्गो लॉजिस्टिक्स	197.85	162	22.13
महिंद्रा हॉलिडेर्ज	309.7	253.95	21.95
बिला कॉर्पोरेशन	1,494.00	1,229.05	21.56
जुबिलैंट फूडवर्क्स	3,775.60	3,107.65	21.49
फोर्स मोटर्स	1,497.90	1,235.80	21.21
नाल्को	93.4	77.15	21.06
पीएसी इक्फ्राटेक	314.2	259.9	20.89
ओरेकल फाइबरिशियल	4,315.75	3,573.05	20.79
मोतीलाल ओसवाल	943.25	781.5	20.70
कैएनआर कंस्ट्रक्शंस	272.75	226.35	20.50
जेके लक्ष्मी सीमेंट	691.6	574.05	20.48

सबसे कमजोर	बंद भाव 30.7.21	बंद भाव 29.6.21	परावरत (%)
रिलायंस कैपिटल	18.15	25.19	-27.95
सद्ग्राव इंजीनियरिंग	69.75	89.45	-22.02
चेहर्झ एट्रेलियम	114.3	144.55	-20.93
रिलायंस पावर	12.05	15.2	-20.72
अदाणी शीन एनर्जी	888.2	1,117.95	-20.55
एलेबिक फार्मा	787.65	987.6	-20.25
साउथ इंडियन बैंक	10.74	13.3	-19.25
अदाणी ट्रांसमिशन	903.75	1,118.85	-19.23
सुजलॉन एनर्जी	6.27	7.67	-18.25
वोडाफोन आईडिया	8.27	10.09	-18.04
हुडको	45.25	55.2	-18.03
अदाणी पावर	95.75	116.6	-17.88
अदाणी टोटल गैस	891.55	1,073.40	-16.94
रिलायंस इन्फ्रा	76.85	91.85	-16.33
इन्फोबीम एवेन्यूज़	44.1	52.25	-15.60
वेंकीज	3,093.10	3,608.05	-14.27
टाटा मोटर्स	293.95	341.55	-13.94
एमआरपीएल	44.65	51.85	-13.89
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	21.9	25.35	-13.61
एलआईसी हाईसिंग	410.55	473.35	-13.27
डॉ. रेड्डीज लैब	4,712.70	5,431.95	-13.24
बंधन बैंक	291.3	335.7	-13.23
क्रोडेट एक्सेस ग्रामीण	663.3	756.25	-12.29
ईपीएल	246.15	280.5	-12.25
फ्यूचर कंज्यूमर	8.24	9.38	-12.15
हिमाङ्गी स्पैशियलिटी कैमिकल	51.9	59	-12.03
जीई शिपिंग	339.6	385.9	-12.00
जीआईसी इंडिया	180.6	204.2	-11.56
सिटी यूनियन बैंक	150.4	169.85	-11.45
टाटा मोटर्स डीवीआर	139.7	157.65	-11.39
एचपीसीएल	261.35	292.75	-10.73
टीवी18 ब्रॉडकास्ट	39.05	43.45	-10.13
रेल विकास निगम	29.65	32.9	-9.88
डीबी कॉर्प	92.6	102.5	-9.66
रेपको होम	339.65	374.65	-9.34
सिंफनी	942.15	1,038.05	-9.24
आरबीएल बैंक	192.95	211.85	-8.92
पीसी जेलर	24.55	26.95	-8.91
स्पाइसजेट	75.15	82.2	-8.58
कैडिला हेल्थकेयर	585.95	640.55	-8.52
बीएचईएल	59.45	64.9	-8.40
चोलमंडलम इन्वेस्टमेंट	476	519.25	-8.33
पीएनबी	39.5	43.05	-8.25
इरकॉन इंटरनेशनल	44	47.95	-8.24
गेल	139.55	151.95	-8.16
इंडस टावर्स	222.15	241.75	-8.11
वैरॉक इंजीनियरिंग	339.35	368.45	-7.90
यूको बैंक	13.8	14.97	-7.82
बैंक ऑफ बडौशा	80.3	87.1	-7.81
टाइम टेक्नो	82.35	89.25	-7.73

भारतीय शेयर बाजार के 50 दिग्गज

क्रम	कंपनी	भाव (30.7.2021)	52 हफ्ते का शिखर	शिखर से नीचे (%)	52 हफ्ते की तलहटी	तलहटी से ऊपर (%)	बाजार पूँजी (करोड़ रु.)
1	रिलायंस	2,035.40	2,368.80	-14.07	1,830.00	11.22	1,311,836
2	टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज	3,167.50	3,399.00	-6.81	2,217.05	42.87	1,171,675
3	एचडीएफसी बैंक	1,425.80	1,650.00	-13.59	994.00	43.44	788,770
4	इन्फोसिस	1,610.25	1,623.45	-0.81	912.60	76.45	685,819
5	हिंदुस्तान यूनिलीवर	2,334.05	2,531.50	-7.80	2,001.00	16.64	548,406
6	आईसीआईसीआई बैंक	682.70	693.00	-1.49	334.00	104.40	472,849
7	एचडीएफसी	2,443.90	2,895.35	-15.59	1,623.00	50.58	441,308
8	भारतीय स्टेट बैंक	431.70	444.35	-2.85	175.55	145.91	385,275
9	बाजाज फाइनेंस	6,228.90	6,430.60	-3.14	3,008.85	107.02	375,973
10	कोटक महिंद्रा बैंक	1,654.95	2,048.95	-19.23	1,231.20	34.42	328,123
11	विप्रो	586.60	601.50	-2.48	269.00	118.07	321,412
12	भारती एयरटेल	561.90	623.00	-9.81	394.05	42.60	308,597
13	एशियन पेंट्स	2,958.55	3,180.00	-6.96	1,697.50	74.29	283,783
14	एचसीएल टेक	1,025.45	1,073.55	-4.48	678.00	51.25	278,273
15	आईटीसी	205.00	239.15	-14.28	163.40	25.46	252,331
16	एवेन्यु सुपरमार्ट्स	3,500.55	3,535.00	-0.97	1,949.30	79.58	226,757
17	बाजाज फिनसर्व	14,221.30	14,925.10	-4.72	5,401.00	163.31	226,314
18	लार्सन ऐंड डुब्ले	1,601.40	1,647.00	-2.77	842.50	90.08	224,942
19	अल्ट्राटेक सीमेंट	7,650.00	7,727.75	-1.01	3,755.00	103.73	220,822
20	ऐक्सिस बैंक	709.00	800.00	-11.38	400.00	77.25	217,343
21	मारुति सुजुकी	6,978.70	8,400.00	-16.92	6,130.00	13.85	210,813
22	सन फार्मा	774.00	780.10	-0.78	452.60	71.01	185,709
23	जेएसडब्ल्यू स्टील	737.25	773.00	-4.62	213.25	245.72	178,210
24	नेस्ले इंडिया	17,725.00	18,821.45	-5.83	15,104.25	17.35	170,897
25	टाटा स्टील	1,433.75	1,481.25	-3.21	343.00	318.00	161,510
26	अदाणी एंटरप्राइजेज	1,420.90	1,718.45	-17.32	116.25	1122.28	156,272
27	टाइटन कंपनी	1,714.50	1,800.00	-4.75	1,033.00	65.97	152,211
28	ओएनजीसी	115.25	128.45	-10.28	64.15	79.66	144,988
29	अदाणी ग्रीन एनर्जी	888.20	1,394.00	-36.28	198.85	346.67	138,916
30	अदाणी पोर्ट्स ऐंड एसईजेड	674.65	901.00	-25.12	309.00	118.33	137,747
31	हिंदुस्तान जिंक	321.00	362.40	-11.42	197.55	62.49	135,633
32	एचडीएफसी लाइफ	665.10	746.00	-10.84	556.25	19.57	134,493
33	डिविस लैब्स	4,885.80	4,944.85	-1.19	2,555.50	91.19	129,703
34	पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन	171.05	188.63	-9.32	115.99	47.47	119,315
35	टेक महिंद्रा	1,209.45	1,237.00	-2.23	643.00	88.09	117,210
36	पिडिलाइट इंडस्ट्रीज	2,277.90	2,335.00	-2.45	1,307.05	74.28	115,752
37	एनटीपीसी	118.20	122.00	-3.11	78.10	51.34	114,615
38	वैदांत	301.65	306.35	-1.53	91.25	230.58	112,129
39	बाजाज आँटो	3,831.05	4,361.20	-12.16	2,823.35	35.69	110,858
40	एसबीआई लाइफ इश्योरेंस	1,099.70	1,147.95	-4.20	755.55	45.55	109,986
41	डाबर इंडिया	598.65	605.00	-1.05	472.10	26.81	105,832
42	जोगेटो	133.35	147.80	-9.78	76.00	75.46	104,615
43	गारिम	1,550.95	1,599.95	-3.06	601.90	157.68	102,065
44	श्री सीमेंट्स	28,236.45	32,050.00	-11.90	18,214.40	55.02	101,879
45	गोदरेज कंज्यूमर	990.75	1,009.95	-1.90	641.65	54.41	101,308
46	हिंडात्को	444.45	461.00	-3.59	155.00	186.74	99,864
47	अदाणी ट्रांसमिशन	903.75	1,647.70	-45.15	221.00	308.94	99,395
48	अदाणी टोटल गैस	891.55	1,680.00	-46.93	96.80	821.02	98,054
49	टाटा मोटर्स	293.95	360.65	-18.49	102.35	187.20	97,600
50	एसबीआई कार्ड्स	1,036.45	1,149.00	-9.80	724.10	43.14	97,543

52 हप्ते के शिखर/तलहटी के सबसे पास

क्रम	नाम	मौजूदा भाव (30.7.21)	52 हप्ते का शिखर	शिखर के पास (%)	क्रम	नाम	मौजूदा भाव (30.7.21)	52 हप्ते की तलहटी	तलहटी के पास (%)
1	निधि ग्रेनाइट्स	105.30	105.35	-0.05	1	टाइम्स ग्रीन	61.05	61.00	0.08
2	लक्ष्मी मशीन	8728.00	8734.45	-0.07	2	यूरेनस इन्फा	5.32	5.31	0.19
3	नागपुर पावर	49.30	49.35	-0.10	3	आदेश्वर मेडिक्स	25.05	25.00	0.20
4	हवा इंजीनियर्स	46.95	47.00	-0.11	4	इंड-एग्रीव कॉर्मस	18.05	18.00	0.28
5	सूरज प्रोडक्ट्स	63.90	64.00	-0.16	5	जीसीएम सिक्योरिटीज	1.91	1.90	0.53
6	एकम लीजिंग	6.00	6.01	-0.17	6	खेमानी इस्ट्रीब्यूटर्स	37.00	36.75	0.68
7	जेटीएल इन्फ्रा	600.00	601.00	-0.17	7	फोटॉन कैपिटल	23.15	22.75	1.76
8	रैक्न स्टील्स	58.05	58.15	-0.17	8	एल्बीक फार्मा	787.65	774.00	1.76
9	प्रिंवि स्पेशल	1594.75	1598.20	-0.22	9	सर्वोत्क इंडस्ट्रीज	2.85	2.80	1.79
10	कुवर हंड.	8.99	9.01	-0.22	10	पर्यावरण लाइफ्केयर	19.05	18.70	1.87
11	ग्लोबल ऑफशोर	26.30	26.36	-0.23	11	शालीमार प्रोडक्शंस	0.50	0.49	2.04
12	अश्वार टेक्स्टाइल	34.65	34.75	-0.29	12	डेकोरस इन्वेस्टमेंट्स	15.21	14.85	2.42
13	अरिहंत्स सिक्योरिटीज	10.16	10.19	-0.29	13	अद्विता टेक	27.95	27.20	2.76
14	आरेक्स इंडस्ट्रीज	129.15	129.55	-0.31	14	मेगालॉन इन्फ्रा	3.60	3.50	2.86
15	सिटिजन इन्फो	6.37	6.39	-0.31	15	ऑक्टल क्रेडिट	3.72	3.61	3.05
16	एक्सप्रो इंडिया	321.55	322.75	-0.37	16	बिटानिया	3420.05	3317.90	3.08
17	इंडो यूएस बायोटेक	77.70	78.00	-0.38	17	मेरस्ट्रोज इलेक्ट्रॉनिक्स	61.00	59.10	3.21
18	चोकसी लैब्स	18.08	18.15	-0.39	18	माइंडस्पेस रीट	283.70	274.00	3.54
19	पैटरिपन इंडिया	12.80	12.85	-0.39	19	हीमो ऑर्गेनिक	10.30	9.94	3.62
20	लुक्स हेल्थ	22.00	22.09	-0.41	20	भित्ति जेम्स	17.50	16.80	4.17
21	एफ एंटरप्राइजेज	22.15	22.25	-0.45	21	कृष्ण फिल्मेंट	3.10	2.96	4.73
22	श्री ग्लोबल	8.16	8.20	-0.49	22	सबरीमाला इंडस्ट्रीज	3.36	3.20	5.00
23	सुपरशक्ति मेटालिक्स	403.00	405.00	-0.49	23	द्रांस एशिया	3.61	3.43	5.25
24	आंध्र पेट्रो	171.25	172.10	-0.49	24	हेमंग रिसोर्स	4.80	4.56	5.26
25	एस. एम. गोल्ड	107.85	108.40	-0.51	25	वार्ड इन्फ्रा	1.37	1.30	5.38
26	मेहता इंटीग्रेटेड	9.40	9.45	-0.53	26	हीरो मोटोकार्प	2764.10	2622.50	5.40
27	डेकोरस इन्वेस्टमेंट	15.21	15.30	-0.59	27	राधाराओंबिंद कमर्शियल	7.59	7.19	5.56
28	स्टारलाइनेस्स एंटरप्राइजेज	42.20	42.45	-0.59	28	संतोष फाइन-फैब	7.71	7.30	5.62
29	एसआरएफ	8665.00	8720.20	-0.63	29	पेट्रोनेट एलएनजी	219.20	207.40	5.69
30	बैंगान असम कंपनी	1925.45	1938.00	-0.65	30	ईंडर कॉर्प	4.67	4.41	5.90
31	हेल्थकेयर ग्लोबल	253.70	255.55	-0.72	31	बायोकॉन	386.55	363.30	6.40
32	विलओ इन्फोटेक	2.73	2.75	-0.73	32	अमारा राजा बैटरीज	719.95	675.80	6.53
33	सन टीवी नेटवर्क	579.35	583.60	-0.73	33	यस बैंक	12.75	11.85	7.59
34	गैविटा इंडिया	186.15	187.55	-0.75	34	इंडियन ब्राउट	18.05	16.75	7.76
35	बीएक्स कैपिटल	197.50	199.00	-0.75	35	जुबिलैंट फार्मोवा	686.10	635.05	8.04
36	सन फार्मा	774.00	780.10	-0.78	36	टिओ मर्केंटाइल	3.08	2.84	8.45
37	ध्रुव कैपिटल	6.25	6.30	-0.79	37	उज्जीवन स्मॉल	28.80	26.50	8.68
38	इन्फोसिस	1610.25	1623.45	-0.81	38	भारत एयरी	158.15	145.50	8.69
39	श्री जगदंबा	1684.00	1698.00	-0.82	39	स्टरलाइट पावर	12.50	11.50	8.70
40	टोक्यो फाइनेंस	11.90	12.00	-0.83	40	सूरोदाय स्मॉल	203.45	187.00	8.80
41	स्टाइलम इंडस्ट्रीज	1188.80	1198.85	-0.84	41	वोडाफोन आईडिया	8.27	7.60	8.82
42	एंड्युरेस टेक्नोलॉजीज	1734.00	1748.90	-0.85	42	आरटेक सोलोनिक्स	33.80	31.00	9.03
43	गोदरेज एग्रोवेट	694.00	700.00	-0.86	43	वौएसटी	3423.40	3125.00	9.55
44	एलएंडटी इन्फोटेक	4684.80	4726.00	-0.87	44	पारले इंडस्ट्रीज	9.23	8.42	9.62
45	स्टील स्ट्रिप्स व्हील्स	1371.00	1383.35	-0.89	45	श्री निवास लीजिंग	8.13	7.41	9.72
46	एसीसी	2393.15	2414.85	-0.90	46	गैंडियर प्रोडक्ट्स	188.90	172.00	9.83
47	आरटी डेनिम	27.25	27.50	-0.91	47	स्वोई-एज कमर्शियल	4.45	4.05	9.88
48	ऑलकारों	197.85	199.70	-0.93	48	एस्कॉटर्स	1184.40	1077.55	9.92
49	बी-एम केमिकल	31.90	32.20	-0.93	49	यूनिमोड औवरसीज	12.09	10.99	10.01
50	अंबुजा सीमेंट्स	411.05	415.00	-0.95	50	जेटमॉल स्पाइसेज	16.75	15.20	10.20

सबसे ज्यादा/कम पीई अनुपात वाले शेयर

क्रम	नाम	मौजूदा भाव (30.7.21)	सीईपीएस	ईपीएस	ज्यादा पीई	क्रम	नाम	मौजूदा भाव (30.7.21)	सीईपीएस	ईपीएस	कम पीई
1	बीएफएल एसेट फिनवेस्ट	94.50	0.01	0.01	9,450	1	गोपाला पॉटी	92.75	1311.49	1080.57	0.09
2	लिंक पेन ऐंड प्लास्टिक्स	216.50	8.56	0.03	7,217	2	मैजेस्को	90.55	885.08	884.85	0.10
3	खान एनर्जी	146.95	0.26	0.03	4,898	3	तातिया कंस्ट्रक्शन्स	7.81	73.20	71.17	0.11
4	दीप एनर्जी	47.80	0.03	0.01	4,780	4	शरद फाइबर्स	9.61	34.64	34.31	0.28
5	पोकरन	394.90	3.36	0.09	4,388	5	सी ऐंड सी कंस्ट्रक्शन्स	3.77	21.02	8.37	0.45
6	फोर्टिस हेल्थ	250.70	1.52	0.06	4,178	6	विलियम्सन मेगर	22.60	46.15	46.11	0.49
7	बीएलएस इंटरनेशनल	151.45	0.22	0.04	3,786	7	प्रकाश स्टीलैग	1.57	2.99	2.90	0.54
8	आकाशदीप मेटल	36.00	0.11	0.01	3,600	8	बेडमुथा इंडस्ट्रीज	41.80	71.75	60.68	0.69
9	बॉम्बे बर्मा	1239.55	1.65	0.40	3,099	9	चेन्नई फेरस	11.69	17.06	14.04	0.83
10	लुडलो जूट	89.05	7.04	0.03	2,968	10	कंफर्ट कॉम्प्रेड	10.25	11.94	11.91	0.86
11	इजमो	141.80	0.83	0.06	2,363	11	सिद्ध वेचर	2.49	2.52	2.52	0.99
12	फेडरल-मोगल	312.60	14.44	0.14	2,233	12	एसटीएल ग्लोबल	14.62	14.12	13.63	1.07
13	हाईकैसल	264.00	7.11	0.14	1,886	13	बनास फाइनेंस	7.20	6.58	6.58	1.09
14	प्रोजेन इन्डु	34.50	0.06	0.02	1,725	14	द्रांस फेट	13.14	12.00	11.93	1.10
15	इंडियानिवेश	16.35	0.01	0.01	1,635	15	सत्र प्रॉपर्टीज	1.11	0.98	0.97	1.14
16	धनवर्षा फिनवेस्ट	725.00	1.23	0.45	1,611	16	मृगिंगा सिक्योरिटीज	3.87	3.18	3.15	1.23
17	टेक्नोविजन	213.50	0.79	0.15	1,423	17	वरेंड्र प्रॉपर्टीज	18.00	14.00	13.97	1.29
18	पिरामल एंटरप्राइजेज	2323.00	3.05	1.67	1,391	18	इकोबोर्ड इंडस्ट्रीज	8.25	6.84	6.31	1.31
19	डालभिया भारत	2138.75	2.14	1.55	1,380	19	द्रांसकेम	27.65	19.83	19.73	1.40
20	क्लासिक लीजिंग	13.23	0.01	0.01	1,323	20	फाइकॉम इंडस्ट्रीज	52.00	34.43	34.32	1.52
21	स्पैन डायर्नोस्टिक	13.21	1.21	0.01	1,321	21	एचओवी सर्विसेज	75.55	50.14	49.65	1.52
22	बजाज फिनसर्व	14221.30	11.49	11.19	1,271	22	धूत इंडस्ट्रियल फाइनेंस	80.25	53.65	52.60	1.53
23	पटेल इंटीग्रेटेड	24.60	0.93	0.02	1,230	23	एचबी रॉकहॉल्डिंग्स	25.65	16.75	16.54	1.55
24	टीसीआई डेवलपर्स	355.00	1.62	0.29	1,224	24	केसर एंटरप्राइजेज	140.00	108.28	89.12	1.57
25	वनलाइफ कैपिटल	12.11	0.58	0.01	1,211	25	इंटेक कैपिटल	19.10	10.68	10.36	1.84
26	लिबर्टी थूज	179.50	20.35	0.15	1,197	26	इंडो एथियन फाइनेंस	7.15	3.60	3.56	2.01
27	आईटीआई	127.60	0.57	0.12	1,063	27	जी मीडिया	11.84	7.12	5.74	2.06
28	पर्ल ग्लोबल	367.40	8.73	0.36	1,021	28	बीसीएल एंटरप्राइजेज	8.24	3.66	3.66	2.25
29	स्ट्रैटमैट इंडस्ट्रीज	20.40	0.02	0.02	1,020	29	बिही मिल्स	166.80	69.85	69.79	2.39
30	उज्जीवन फाइनेंशियल	239.75	0.24	0.24	999	30	नेटिलिंक सॉल्यूशंस	22.50	9.29	9.12	2.47
31	आईडीएफसी	57.95	0.07	0.06	966	31	ओडिशी कॉर्प	4.29	1.70	1.65	2.60
32	ड इंडियन वुड	47.60	0.67	0.05	952	32	एलकेपी फाइनेंस	126.20	48.33	48.32	2.61
33	जयहिंद सिंथेटिक्स	9.46	0.01	0.01	946	33	एमबीएल इनफा	23.40	13.93	8.91	2.63
34	शानगर डेकॉर	9.00	0.77	0.01	900	34	वीलकंठ रॉकमिनरल्स	8.10	3.04	3.04	2.66
35	केपेसाइट इनफ्रा	228.35	13.54	0.26	878	35	इंटीग्रेटेड फाइनेंशियल	61.55	23.04	23.04	2.67
36	राज टेलीविजन	42.75	1.37	0.05	855	36	उषदेव इंटरनेशनल	0.93	0.55	0.34	2.74
37	वेस्ट कोस्ट पेपर	261.05	23.55	0.31	842	37	पीएनबी गिल्ट्स	72.10	25.33	25.23	2.86
38	टोक्यो प्लास्ट	106.40	2.96	0.13	818	38	की कॉर्पोरेशन	68.35	23.92	23.86	2.86
39	जी जी इंजीनियरिंग	24.25	0.09	0.03	808	39	आलोक इंडस्ट्रीज	24.60	9.13	8.55	2.88
40	श्री गणेश बायो	126.35	0.16	0.16	790	40	बर्विं इन्वेस्ट	17.50	5.86	5.86	2.99
41	राणे होल्डिंग्स	743.00	3.09	0.95	782	41	राणा शुगर्स	31.10	12.03	10.27	3.03
42	टाइटन सिक्योरिटीज	22.55	0.06	0.03	752	42	मधुसूदन इंडस्ट्रीज	20.25	6.85	6.67	3.04
43	डुकॉन इंडस्ट्रीज	14.95	0.04	0.02	748	43	ऋषिरूप	94.00	31.42	30.92	3.04
44	वार्डिंग्जार्ड इनोवेशंस	67.10	0.11	0.09	746	44	सिमरन फार्म्स	105.00	38.47	32.93	3.19
45	आर्टीमिस	50.20	0.98	0.07	717	45	चौगुले स्टीम	9.00	2.98	2.81	3.20
46	एजीसी नेटवर्क्स	1219.90	4.05	1.76	693	46	झुमेधा फिस्कल	33.90	11.07	10.43	3.25
47	पेन्नार इंडस्ट्रीज	40.90	3.42	0.06	682	47	वैबसोल एनर्जी	65.10	24.34	19.84	3.28
48	रूट मोबाइल	2063.10	4.84	3.04	679	48	वीएलएस फाइनेंस	231.65	70.60	70.40	3.29
49	वेस्ट लीजर	227.35	0.35	0.34	669	49	गारनेट कंस्ट्रक्शन	30.45	9.34	9.10	3.35
50	मैक चार्ट्स	540.00	3.53	0.81	667	50	हिंदुस्तान मिल	353.00	132.61	102.99	3.43

जून 2021 में म्यूचुअल फंडों ने क्या खरीदा क्या बेचा

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले लाजकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
इंडस टावर्स	311	208	130	86
हैवेल्स इंडिया	1836	1520	187	147
एसबीआई काइर्स	5044	4510	520	432
जेएसडब्लू स्टील	3946	3542	577	498
मुथूट फाइनेंस	4166	3215	281	245
एचडीएफसी लाइफ साइंसेज	6536	5721	952	859
गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स	1807	1623	208	190
पंजाब नेशनल बैंक	1112	1018	2628	2402
बायोकॉन	1276	1119	315	288
टेक महिंद्रा	10203	8740	931	855

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले लाजकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
हिंदुस्तान जिंक	136	165	40	50
एनएमडीसी	1972	2434	1071	1336
अदाणी एंटरप्राइजेज	1351	1309	90	99
डाबर इंडिया	2188	2256	385	417
टाइटन कंपनी	6206	6161	357	386
ओएनजीसी	8725	9101	7413	8008
पश्चियन पैट्स	7485	7991	250	268
इंडियन ऑयल	4115	4458	3814	4081
अदाणी ट्रांसमिशन	136	202	13	14
ग्रासिम इंडस्ट्रीज	4556	4782	304	325

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले भिडकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
सोना बीएलडब्लू	2500	-	728	-
श्रीराम ट्रांसपोर्ट फाइनेंस	1747	880	130	62
इंडियन बैंक	835	422	577	302
टीवीएस मोटर	4633	3329	747	541
जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज	1671	1280	778	611
मणपुरम फाइनेंस	1416	1168	839	717
गोदरेज हंडरट्रीज	116	95	20	18
आईडीएफरी फर्स्ट बैंक	1266	1230	2336	2103
एस्कॉर्ट्स	932	810	76	69
अमारा राजा बैटरीज	1000	909	134	123

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले भिडकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
जेएसडब्लू एनर्जी	151	229	90	195
वोडाफोन आईडिया	250	266	2516	3072
सन टीवी नेटवर्क	767	944	145	174
पेट्रोनेट एलएनजी	1671	2106	740	872
अल्काइल एमीन्स केमिकल्स	161	192	4	5
आवास फाइनेंशियर्स	656	642	24	28
दीपक नाइट्रोइट	2873	3235	159	181
एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस	1986	2236	422	480
आरटी इंडस्ट्रीज	2680	2924	307	349
डॉ. लाल पैथलबस	1219	1231	37	42

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा खरीदारी वाले स्मॉलकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
डोडला डेपर्टी	328	-	57	-
कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	863	-	91	-
ऑर्केड फार्मा	91	-	10	-
श्याम मेटालिक्स	159	-	43	-
जेनसार टेक्नोलॉजीज	651	102	209	36
वेइट इंडिया	53	18	1	1
ग्रैन्यूल्स इंडिया	237	152	71	48
मिंडा कॉर्पोरेशन	83	55	65	44
महिंद्रा सीआईई ऑटोमोटिव	478	274	201	136
कल्याण ज्वेलर्स	114	71	145	106

म्यूचुअल फंडों की सबसे ज्यादा बिकवाली वाले स्मॉलकैप शेयर	बाजार मूल्य (क.रु.)		शेयर (लाख में)	
	जून 2021	मई 2021	जून 2021	मई 2021
ट्रिप्पलार्स	82	134	21	41
राणे होल्डिंग्स	54	79	8	14
स्पाइसजेट	87	135	108	170
गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स	190	253	50	67
हैपिएस्ट माइंड्स	473	542	47	62
पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस	181	184	27	35
हैथवे केबल	308	401	1188	1564
नजारा टेक्नोलॉजीज	112	164	7	10
केपेसाइट इन्फ्राप्रोजेक्ट्स	119	165	61	78
विलिएंट ऑर्गेनिक्स	74	90	5	6

भारत सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) का अब तक का हर वक्तव्य और हर कदम बिटकॉइन और इसके जैसी विभिन्न क्रिप्टोकरेंसी को मान्यता नहीं देने और इसके लेन-देन पर सख्त अंकुश लगाने की ही बात कहता रहा है। मगर क्रिप्टोकरेंसी के फैलते मायाजाल के बीच जिनके हित इसके कारोबार से जुड़े हैं, वे लगातार आशावादी संकेतों को तलाशते रहते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी ऐंड रेगुलेशन ऑफ ऑफिशियल डिजिटल करेंसी बिल, 2021 मानसून सत्र में भी संसद के सामने नहीं रखे जाने के बाद यह वर्ग ऐसे ही आशावादी संकेतों से प्रफुल्लित है। क्रिप्टोकरेंसी कारोबार पर अंकुश के लिए विधेयक काफी लंबे समय से प्रस्तावित है, पर इसका बार-बार टलना इसके समर्थकों में आशा जगा रहा है कि सरकार इस बारे में बहुत सख्त नियम बनाने की जल्दी में नहीं है।

मगर लोक सभा में शशि थरूर के प्रश्न के उत्तर में 2 अगस्त 2021 को वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा, '2018-19 के बजट भाषण में घोषित किया गया था कि भारत सरकार

क्रिप्टोकरेंसी को कानूनी
टेंडर या सिक्का नहीं
मानती है और
अब वे ध



क्या बिटकॉइन पर नरम पड़ रही है भारत सरकार?

संसद के मानसून सत्र में बिटकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी के नियमन (या रोक?) से संबंधित विधेयक पेश न होने से क्रिप्टोकरेंसी से अपना हित जोड़ चुके तबके में काफी राहत और खुशी देखी जा रही है। तो क्या भारत सरकार क्रिप्टोकरेंसी पर अपने सख्त दबावों में कुछ नरमी लाने जा रही है? लोक सभा और राज्य सभा में पूछे गये प्रश्नों पर सरकार के उत्तर तो कुछ और ही संकेत दे रहे हैं।

गतिविधियों के वित्तपोषण या भुगतान प्रणाली के हिस्से के रूप में इन क्रिप्टो-संपत्तियों के उपयोग को समाप्त करने के लिए सभी उपाय करेगी।'

वित्त राज्य मंत्री ने अपने उत्तर में यह भी ध्यान दिलाया कि 'आभासी मुद्राओं (वर्चुअल करेंसी) से जुड़े मुद्राओं के अध्ययन और इस संबंध में उठाये जाने वाले कदमों के बारे में सुझाव देने के लिए एक उच्च स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय समिति (आईएमसी) का गठन आर्थिक कार्य विभाग के सचिव की अध्यक्षता में किया गया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में सुझाव दिया था कि सरकार की ओर से जारी होने वाली किसी क्रिप्टोकरेंसियों पर भारत में प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। सरकार उचित प्रक्रिया का पालन करते हुए आईएमसी के सुझावों पर निर्णय लेगी और विधायी प्रस्ताव यदि कोई हो तो उसे संसद में प्रस्तुत करेगी।'

क्रिप्टोकरेंसी और इसके लेन-देन के संबंध में वर्तमान नियामक व्यवस्था क्या है, इस प्रश्न के उत्तर में वित्त मंत्री ने

बताया कि आरबीआई के नियमन के अंतर्गत अनेक बाली सभी संस्थाओं को नो योर कस्टमर (केवाईसी), एंटी मनी लॉन्डरिंग (एएमएल), कॉम्बिटिंग ऑफ फाइनेसिंग ऑफ टेररिज्म (सीएफटी), और प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्डरिंग ऐक्ट (पीएमएलए) के साथ-साथ फॉरेन एक्सचेंज मैनेजमेंट ऐक्ट (फेमा) में निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करने की सलाह दी गयी है।

हालांकि यह वर्तमान नियामक व्यवस्था क्रिप्टोकरेंसी पर रोक के लिए पर्याप्त नहीं है, यह इस बात से स्पष्ट है कि आरबीआई को क्रिप्टोकरेंसी में लेन-देन पर अंकुश लगाने के बारे में अपने एक आदेश पर सर्वोच्च न्यायालय से मुँह की खानी पड़ी थी। उसके बाद से ही सरकार ने नया कानून बनाने की दिशा में अपने प्रयास तेज किये। लोक सभा में दिये गये उत्तर को ही सरकार ने 10 अगस्त को राज्य सभा में भी देहस्थाया। दोनों सदनों में सरकार ने जो उत्तर दिये हैं, वे क्रिप्टोकरेंसी पर कहीं से भी सरकार का रुख नरम पड़ने के संकेत नहीं देते हैं। ऐसे में यह प्रश्न जरूर खड़ा होता है कि जब सरकार इस पर सख्ती करना चाहती है तो फिर यह काम बरसों से ब्यां टलता आ रहा है।

इस बारे में सरकार की ओर से एक स्पष्ट कानून बनाये जाने में जितनी देरी हो रही है, देश में क्रिप्टोकरेंसी का मायाजाल उतना ही फैलता जा रहा है। ब्लॉकचेन संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण करने वाली कंपनी चेनलिसिस के अनुसार भारत में क्रिप्टोकरेंसी में कुल निवेश अप्रैल 2020 के 92.3 करोड़ डॉलर से छह गुणा बढ़ कर मई 2021 में 6.6 अरब डॉलर का हो गया। ऐसे में सरकार कानून बनाने में जितना अधिक समय लेगी, उतने समय में और अधिक लोग इसके लालच में फँसते जायेंगे। ज्यादा समय निकलने पर अगर इस कथित आभासी मुद्रा

(वर्चुअल करेंसी) के फेर में फँस चुके लोगों की संख्या काफी बढ़ गयी तो सरकार के ऊपर इस बात का दबाव बनाया जाने लगेगा कि वह इतनी बड़ी संख्या में लोगों को नुकसान पहुँचाने वाला कोई निर्णय न करे।

यदि सरकार दबाव में न भी आये, तो बड़ी संख्या में लोगों को चोट लगने के चलते एक असंतोष तो फैलेगा ही। संभव है कि उससे देश की वित्तीय प्रणाली को भी एक हल्का झटका लगे। बेहतर है कि क्रिप्टोकरेंसी का मायाजाल देश की वित्तीय प्रणाली को प्रभावित कर सकने वाली स्थिति तक फैल जाने से पहले ही सरकार अपने अनिर्णय या टालमटोल से बाहर निकल कर क्रिप्टोकरेंसी पर प्रस्तावित कानून संसद से पारित करा कर लागू कर दे।

इससे पहले सरकार ने 2019 में भी क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने और इसके लेन-देन को अपराध घोषित करने के लिए विधेयक का मसौदा तैयार किया था। इसका नाम था बैनिंग ऑफ क्रिप्टोकरेंसी ऐंड रेगुलेशन ऑफ ऑफिशियल डिजिटल करेंसी बिल, 2019, किंतु यह उस समय संसद के सामने नहीं रखा जा सका। इस विधेयक में क्रिप्टोकरेंसी के प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपयोग पर जुर्माना या एक से 10 साल तक की जेल या दोनों सजा का प्रावधान रखा गया था।

इस साल 30 जनवरी को जब बजट सत्र का आरंभ हुआ था, तो सत्र की कार्य सूची में सभी निजी क्रिप्टोकरेंसियों पर प्रतिबंध लगने वाला विधेयक भी शामिल था। पर यह विधेयक न तो बजट सत्र में रखा जा सका और न ही मानसून सत्र में। बजट सत्र में इसके प्रस्तुत न होने का कारण यह बताया गया कि कोरोना महामारी के कारण सत्र को छोटा किया गया है। वहीं 19 जुलाई को मानसून सत्र आरंभ होने के समय ही स्पष्ट हो गया था कि क्रिप्टोकरेंसी विधेयक इस सत्र में भी नहीं आने वाला है। जो 23 विधेयक मानसून सत्र के दौरान लोक सभा में रखे जाने के लिए प्रस्तावित थे, उनकी सूची में यह विधेयक नहीं था।

हालाँकि मानसून सत्र शुरू होने से एक सप्ताह पहले ही वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि सभी सहभागियों के विचार और उनकी प्रतिक्रियाएँ जानने के बाद क्रिप्टोकरेंसी विधेयक 2021 मानसून सत्र में रखे जाने के लिए तैयार है। ऐसे में अंतिम समय में यह विधेयक क्यों टल गया, यह एक पहेली है।

तो क्या यह अटकलें सही हैं कि क्रिप्टोकरेंसी पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने के बारे में सरकार एक दुविधा में फँसी हुई है? कुछ खबरों में बताया गया कि आरबीआई क्रिप्टोकरेंसी पर पूरी तरह रोक के पक्ष में है, लेकिन सरकार संपूर्ण प्रतिबंध नहीं चाहती है और इसे खरीदे-बेचे एवं निवेश किये जा सकने लायक संपदा वर्ग के रूप में इसका नियमन करना चाहती है। लेकिन अगर सरकार ऐसा करती है तो यह न केवल सुभाष चंद्र गर्ग की अध्यक्षता वाली आईएमसी के सुझावों के विपरीत होगा, बल्कि क्रिप्टोकरेंसी पर सरकार के अब तक के सभी आधिकारिक वक्तव्यों से भी एकदम अलग होगा। संसद के दोनों सदनों में सरकार के सबसे ताजा वक्तव्य भी निजी क्रिप्टोकरेंसी को मान्यता नहीं देने के रुख की ही पुष्टि करते हैं।

मगर इस पर विधेयक लाये जाने में देरी को क्रिप्टोकरेंसी समर्थक वर्ग अपने लिए सकारात्मक

दरअसल, अभी 26 जुलाई को ही अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) ने अपने एक ब्लॉग में देशों को क्रिप्टोएसेट को राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वीकार करने के खतरों के प्रति सावधान किया है। इसने कहा है कि क्रिप्टोएसेट मुद्रा के डिजिटल रूप को उपलब्ध कराने और उसके विनियमन में सरकारी और निजी क्षेत्रों की भूमिका को लेकर मुश्किल नीतिगत विकल्प सामने रखते हैं। आईएमएफ ने इस ब्लॉग में कहा है कि क्रिप्टोएसेट को राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वीकार करने के संभावित लाभों की तुलना में इसके खतरे और लागत अधिकांशतः कहीं ज्यादा हैं। आईएमएफ ने ध्यान दिलाया है कि क्रिप्टोएसेट के मूल्य में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव आता रहता है। उदाहरण के लिए, बिटकॉइन ने अप्रैल में लगभग 65,000 डॉलर का चरम छू लिया और दो महीने बाद ही इसका मूल्य घट कर इसके आधे से भी कम रह गया।

आईएमएफ ने सावधान किया है कि बिटकॉइन जैसे क्रिप्टोएसेट को व्यापक रूप से स्वीकार किये जाने का सबसे सीधा नुकसान मैक्रो-इकोनॉमिक स्थिरता को होगा। यदि वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें एक वास्तविक मुद्रा (जैसे रुपया) और एक क्रिप्टोएसेट (जैसे बिटकॉइन) दोनों में निर्धारित होंगी तो व्यक्तियों और व्यापारों को अपना काफी समय एवं संसाधन उत्पादक गतिविधियों में लगाने के बदले यह चुनने में लगाना पड़ेगा कि वे किस मुद्रा को अपने पास रख कर चलें।

आईएमएफ ने इस ब्लॉग में आगे कहा है कि बिटकॉइन कुछ लोगों के लिए अज्ञात रूप से लेन-देन करने का अवसर उपलब्ध कराता है - जो अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी। वस्तुतः यह भी एक ऐसा पहलू है, जो भारत सरकार के लिए एक बड़ी चिंता होनी चाहिए। भारत सरकार ने बीते वर्षों में लगातार ऐसी नीतियाँ अपनायी हैं, जिससे काले धन का लेन-देन रुके। विदेशों में काला धन रखने के संबंध में कानून को बहुत कड़ा कर दिया गया है। बेनामी संपत्तियों पर भी सरकार ने बहुत सख्त कानून बनाया है। क्रिप्टोकरेंसी को एक संपत्ति के रूप में मान्यता देने से भी गुप्त लेन-देन के लिए चोर दरवाजा खुल जायेगा और यह काले धन पर अंकुश लगाने के लिए मोदी सरकार के अब तक के सारे प्रयासों पर पानी फेर सकता है। यहाँ तक कि आतंकवादियों और अपराधियों के लिए सरकारी तंत्र की निगरानी से बाहर रह कर लेन-देन करना काफी आसान हो जायेगा। ■

क्या यह अटकलें सही हैं कि क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के बारे में सरकार दुविधा में फँसी हुई है? कुछ खबरों में बताया गया कि आरबीआई पूरी तरह रोक के पक्ष में है, लेकिन सरकार संपूर्ण प्रतिबंध नहीं चाहती है और इसे खरीदे-बेचे एवं निवेश किये जा सकने लायक संपदा वर्ग के रूप में इसका नियमन करना चाहती है। लेकिन अगर सरकार ऐसा करती है तो यह सुभाष चंद्र गर्ग की अध्यक्षता वाली आईएमसी के सुझावों के विपरीत होगा।

संकेत मान कर खुश है। इस वर्ग की दलील है कि सरकार क्रिप्टोकरेंसी को वैध मुद्रा के रूप में नहीं, बल्कि खरीदे-बेचे जा सकने लायक संपत्ति (एसेट) के रूप में इसके व्यापार की अनुमति दे। क्रिप्टो-समर्थकों का यह भी कहना है कि जब आईएमसी ने क्रिप्टो पर पूरी तरह प्रतिबंध का सुझाव दिया था, उसके बाद से स्थिति बदली है और हाल में ही अल सल्वाड़ेर ऐसा पहला देश बन गया है, जिसने बिटकॉइन को एक वैध मुद्रा के रूप में स्वीकार कर लिया है। मगर भारत जैसी उभरती महाशक्ति क्या मात्र 65 लाख की आबादी वाले एक देश का उदाहरण सामने रख कर अपनी नीतियाँ निर्धारित करेगी, जिससे कई गुण बढ़े तो हमारे विभिन्न शहरों के नगर-निगम हैं! अल सल्वाड़ेर ने पहले भी अपनी कोई मुद्रा नहीं चला रखी थी, बल्कि अमेरिकी डॉलर को ही अपनी वैध मुद्रा के रूप में स्वीकार कर उससे काम चलाता रहा है।

हाल में लगातार काफी न्यूचुअल फंड एनएफओ बाजार में आ रहे हैं। अभी शेयर बाजार में आईपीओ की भी झड़ी लगी है और उन्हें जबरदस्त आवेदन भी मिल रहे हैं। वया यह बाजार में अति-उत्साह के चलते खतरे का संकेत है?

यह माहौल बीते 15-18 महीनों से चल रहा है। कोविड-19 की पहली लहर के बाद आयी गिरावट के बाद से निपटी दोगुना हो चुका है। इस दौरान लगातार नये निवेशक आ रहे थे, चाहे ब्रोकरों के माध्यम से इक्विटी में हों या न्यूचुअल फंडों में। वैश्विक निवेशक भी आ रहे थे। जिस तरह से भारत में इक्विटी में निवेश के जरिये संपदा निर्माण हो रहा है, उससे निवेशकों की सोच बदल रही है।

इक्विटी के प्रति अभी निवेशकों का झुकाव बढ़ने का सबसे बड़ा कारण यह है कि ब्याज दरें कम हो गयी हैं। एफडी या बचत खातों पर महँगाई दर घटाने के बाद का वास्तविक प्रतिफल (रियल रिटर्न) तो नकारात्मक चल रहा है। साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था में आगे 3-5 साल या 10 साल में जो वृद्धि होने वाली है, अगर उसमें भागीदारी नहीं करेंगे तो संपदा निर्माण कैसे होगा?

अभी बाजार में काफी सारे एनएफओ आ रहे हैं, कुछ हमने भी किये हैं। जो भी एनएफओ आ रहे हैं, वे कुछ अलग थीम के साथ आ रहे हैं। बाजार में जो नये रुझान उभर रहे हैं, उन्हें एनएफओ में जल्दी पकड़ा जा सकता है, क्योंकि इनमें नया पोर्टफोलिओ बनता है और नयी सोच आ जाती है। इसलिए बीते छह महीनों में ज्यादा एनएफओ आने लगे हैं।

आप पलेक्सीकैप फंड का जो एनएफओ लेकर आये, उसके पीछे क्या एक कारण यह भी रहा कि हाल में सेबी ने मल्टीकैप फंड के नियम बदले और पलेक्सीकैप की यह नयी श्रेणी शुरू की।

सेबी बहुत सोच-समझ कर कोई नयी चीज लाता है। मल्टीकैप श्रेणी में जब उन्होंने तय किया कि इसमें लार्जकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप तीनों में कम-से-कम 25-25% निवेश रखना होगा, तो यह दिशानिर्देश मल्टीकैप फंडों में एकरूपता लाने के लिए था। हमने अपने मल्टीकैप फंड को उसी श्रेणी में चलाते रखा। जब फ्लेक्सीकैप श्रेणी शुरू की गयी, तो हमने कहा कि वहाँ नये रुझानों को पकड़ने के लिए फंड मैनेजर के कौशल को प्रदर्शित करते हैं।

आप आरंभ में इस पलेक्सीकैप फंड का पोर्टफोलिओ कैसा बनायेंगे, उसमें लार्जकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप का अनुपात क्या रखेंगे?

निप्पॉन इंडिया पलेक्सी कैप फंड बाजार के नये लङ्गानों को पकड़ने की सोच



निप्पॉन इंडिया ने अपने पलेक्सी कैप फंड का न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) प्रस्तुत किया है। यह एनएफओ 26 जुलाई से 9 अगस्त 2021 तक खुला। इन्हें के बाद 24 अगस्त से यह फंड लगातार खट्टी-बिक्री के लिए दोबारा खुलेगा। इस फंड की निवेश रणनीति पर प्रस्तुत निप्पॉन इंडिया न्यूचुअल फंड के को-चीफ बिजनेस ऑफिसर सौगत चटर्जी से बातचीत।

बीएसई 500 इसमें हमारा मानक (बेंचमार्क) है। इसमें हम लार्जकैप को 40% से 80% के दायरे में रखेंगे। इसकी यात्रा की शुरुआत हम 50% लार्जकैप से करेंगे। बाकी 50% में लगभग 30% मिडकैप और 20% स्मॉलकैप से शुरुआत होगी।

वर्ष 2020 में मिडकैप और स्मॉलकैप ने 25-26% का अच्छा प्रतिफल दिया और लार्जकैप में करीब 16% मिला। साल 2021 के लिए आपकी उम्मीदें क्या हैं? यूंकि आप 50% लार्जकैप के साथ यह फंड शुरू करना चाहते हैं, तो क्या आपका ज्यादा भरोसा लार्जकैप पर ही रहेगा?

हाँ। लार्जकैप वाले हिस्सों में भी उसका आधा हम मेगाकैप शेयरों को रखेंगे, जो बाजार पूँजी में शीष पाँच कंपनियाँ हैं भारत की। बाकी आधे में दूसरे लार्जकैप शेयरों को रखेंगे। इसमें हम मानक सूचकांक से थोड़ा अलग चलते हुए लार्जकैप में भी थोड़ा आक्रामक रहेंगे। मिडकैप और स्मॉलकैप के 50% हिस्से में हमारा रिसर्च काम आयेगा। निवेश में सब कुछ रिसर्च पर निर्भर है

कि हम कैसे संभावित कंपनियों को चुनते हैं। भारत में अवसर इतने अधिक हैं कि यह अच्छा है कि हम भविष्य में उभरने वाले अवसरों को पहचान कर एकदम शून्य से नया पोर्टफोलिओ बना सकेंगे।

इसने आपने बॉटम-अप नजरिया रखने की बात कही है, यानी क्षेत्रवार चयन की प्रक्रिया पर आप नहीं चलेंगे, सीधे शेयरों का ही विठ्ठलण करके चुनेंगे। पर कुछ-न-कुछ थीम तो आपकी नजर में होंगी, जो आपके हिसाब से आने वाले 2-4 साल में चलेंगी।

हम इसे तीन हिस्सों में बाँट सकते हैं। भारत में और वैश्विक स्तर पर एक बड़ा आर्थिक बदलाव यह हो रहा है, कि लोग उपभोक्तावाद की ओर बढ़ रहे हैं, चाहे वह ऑटो में हो या अन्य विविध क्षेत्रों में हो। खपत (कंजंशन) से जुड़े क्षेत्रों पर बड़ा जोर चल रहा है। हम उसमें कुछ खास तरीकों से निवेश करेंगे। दूसरा पक्ष बैंकिंग का है। इसमें भी भारत और विश्व दोनों स्तरों पर वित्तीय सेवाओं के डिजिटाइजेशन के रूप में बड़ा

बदलाव हो रहा है। हमारी सोच है कि बड़े बैंकों या वित्तीय सेवा कंपनियों की आगे की योजनाएँ अगर डिजिटाइजेशन को लेकर बहुत दमदार है तो हम उन्हें भी अपने पोर्टफोलिओ में रखेंगे।

अगले हिस्से में मिडकैप में हेल्थकेयर, केमिकल, इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में बड़े अवसर आ रहे हैं। भारत का विविध क्षेत्रों में निर्यात काफी सुधर रहा है। ब्याज दरें कम होने से हाउसिंग क्षेत्र में माँग फिर से बढ़ने लगी है। इसलिए हम उससे जुड़े कई क्षेत्रों, जैसे सीमेंट, इस्पात वगैरह पर ध्यान दे रहे हैं।

स्मॉलकैप में ऐसे शेरयों पर ध्यान होगा जो आगे चल कर मिडकैप बन सकते हैं, चाहे वे डिजिटल में हों, या केमिकल, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे क्षेत्रों में हों। बीमा क्षेत्र में भी संभावनाएँ सुधर रही हैं। होटल जैसे क्षेत्र भले ही ऐसे दिखते हैं, जो सबके पास हैं, लेकिन उनमें हमारी चुनी हुई कंपनियाँ अलग होती हैं। **आपने जिन क्षेत्रों का जिक्र किया, उनके अंदर आपको इस गहराई वाली रिसर्च के चलते कहाँ नये अवसर दिख रहे हैं?**

मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) में है या केवल एक जगह ही दिख रही है।

इस तरह का रिसर्च हर तिमाही में फिर से किया जाता है। इसके चलते प्रमोटर, व्यवसाय, व्यापार-चक्र, माँग आदि को लेकर हमारा विश्वास बहुत अलग होता है। अपने रिसर्च में हम केवल एक कंपनी ही नहीं, उसके प्रतिस्पर्धी का भी विश्लेषण करते हैं। यह भी देखते हैं कि असंगठित क्षेत्र में जो माँग आ रही थी, उसकी अब क्या स्थिति है। इसलिए हमारे चुने हुए क्षेत्र भले ही ऐसे दिखते हैं, जो सबके पास हैं, लेकिन उनमें हमारी चुनी हुई कंपनियाँ अलग होती हैं। **आपने जिन क्षेत्रों का जिक्र किया, उनके अंदर आपको इस गहराई वाली रिसर्च के चलते कहाँ नये अवसर दिख रहे हैं?**

जैसे मैंने आपको रसायन (केमिकल) क्षेत्र के बारे में बताया, तो यह एक बड़ा क्षेत्र है जहाँ चाइना प्लस वन की कहानी चल रही है। इसके

बीते 15-20 वर्षों में ऐसे रुझानों को पकड़ने में कैसा काम किया है। अब आगे जाकर इस फंड से भी ऐसे अवसरों को पकड़ेंगे।

आपके जो लार्जकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप फंड हैं, व्या वहीं से नाम देखे जा सकते हैं कि जो शेयर उन फंडों में हैं, उन्हीं में से चुन कर आप इस प्लेक्सीकैप फंड में भी डालेंगे? या फिर यहाँ एकदम नयी शुरुआत हो रही है तो बिल्कुल नये तरह के नाम होंगे?

जरूर इसके पोर्टफोलिओ में कुछ ताजगी आयेगी! हम 550 कंपनियों पर रिसर्च करते हैं। जब इस नये फंड का पोर्टफोलिओ बनेगा तो निश्चय ही आपको कुछ नये नाम मिलेंगे जो दिलचस्प होंगे।

अभी निचली ब्याज दरों का दौर चल रहा है। इसके चलते बाजार में तरलता (लिकिवडिटी) या नकदी उपलब्धता काफी है। यह चीज अभी और कितनी चलने वाली है, व्याकिं अब महँगाई दर की चिंता हमारे यहाँ भी होने लगी है और विकसित बाजारों में भी दिखने लगी है? निचली ब्याज दरों का यह चक्र कितने समय में प्लेट सकता है?

अभी ब्याज दरें कम क्यों हैं? जब से कोविड महामारी फैली, तालाबंदी (लॉकडाउन) से अर्थव्यवस्था में धक्का लगा, तो उसे सहारा देने के लिए सारे केंद्रीय बैंकों और सरकारों ने ऐसा किया। वृद्धि को वापस लाने के लिए खपत की वापसी और बुनियादी ढाँचे पर खर्च करना जरूरी था। इसलिए ब्याज दरें कम की जाने लगीं। अब यह पिछले 3-6 महीनों से लगभग स्थिर है। अभी भी आरबीआई और

अर्थसास्त्रियों से जो कुछ सुनने को मिल रहा है, उससे लगता है कि फिलहाल ब्याज दरें निचले स्तरों पर ही रहेंगी।

पर ऐसा कितने समय तक रहेगा? तब तक, जब तक भारत में वृद्धि वापस नहीं लैटेगी। जब भी आरबीआई गवर्नर की टिप्पणियाँ आती हैं, तो उसमें यही संदेश होता है कि वृद्धि दर फिर तेज होनी चाहिए। इसके लिए ब्याज दरों का नीचे रहना जरूरी है, क्योंकि उसी से खपत और माँग में वृद्धि होगी। वहाँ महँगाई दर भले ही कुछ बढ़ रही है, पर यह आपूर्ति संबंधी कारणों से ज्यादा है न कि माँग बढ़ने के चलते। जब माँग के चलते महँगाई दर बढ़ती दिखेगी, तब आरबीआई का रुख बदलेगा कि अब वृद्धि आ रही है और महँगाई बढ़ रही है तो ब्याज दरों पर फिर से सोचा जाये। अगले 6-12 महीनों तक तो ब्याज दरें नीचे ही रहेंगी। ■

“

स्मॉलकैप में ऐसे शेरयों पर ध्यान होगा जो आगे चल कर मिडकैप बन सकते हैं, चाहे वे डिजिटल में हों, या केमिकल, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे क्षेत्रों में हों। बीमा क्षेत्र में भी संभावनाएँ सुधर रही हैं। होटल जैसे क्षेत्र और क्षेत्र हैं। खपत वाली माँग दोबारा उभरेगी, यात्राएँ शुरू हो जायेंगी। टेलीकॉम बड़े बदलाव से गुजर रहा है। इस फंड में 50-60 शेरयों का पोर्टफोलिओ होगा। काफी ऐसे अवसर दिख रहे हैं, जिन्हें हम इस फंड के जरिये पकड़ने की कोशिश करेंगे।

चलते चीन से हट कर भारत में इसका उत्पादन शुरू हो रहा है। एपीआई और दूसरी कई चीजों में भारत उत्पादन का एक बड़ा केंद्र बन रहा है। इसके अलावा, भारत सरकार ने जो पीएलआई योजना शुरू की है, वह काफी बड़ी चीज है।

इससे कई क्षेत्रों में भारत वैश्विक उत्पादन का एक केंद्र बनने जा रहा है, चाहे इलेक्ट्रॉनिक्स हो या मोबाइल फोन हो या कई और चीजों के लिए हो। स्वास्थ्य-सेवा (हेल्थकेयर) भी बड़े स्तर पर उभर रहा है। इसके अंदर डिजिटाइजेशन बड़ी चीज बन रही है। डॉक्टर अब फोन पर सलाह देने लगे हैं। मुंबई में रहने वाला कोई व्यक्ति भारत में किसी भी स्थान पर बैठे सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ से बात कर सकता है। जो कंपनियाँ इन अवसरों को तेजी से पकड़ रही हैं, उन्हें बेहतर मूल्यांकन मिलेगा। ऐसी बहुत सारी चीजें हैं। हमारे मिडकैप और स्मॉलकैप फंड इस बात के उदाहरण हैं कि हमने

अभी किन बातों से आपको लगा कि एक फोकस्ट फंड लाने का यह एक सही समय है?

हमारे काफी फंड हैं और कुछ तो 30-35 साल पुराने भी हैं। इनके जो पोर्टफोलिओ अभी हैं, उनमें 50-60 शेराव होते हैं। इसलिए यह सबाल आता था कि सबसे अधिक भरोसे वाले शेरावों को लेकर क्यों न एक 30 शेरावों वाला फोकस्ट फंड लाया जाये। हम इसका कोई समय नहीं छुन रहे हैं।

इसने फोकस कहाँ रहेगा?

हम अपने रिसर्च में करीब 350 कंपनियों का विश्लेषण करते हैं। इनमें सभी क्षेत्रों और हर तरह की बाजार पूँजी में से जिनको हम सबसे अच्छा मानते हैं, उन पर हम फोकस करेंगे। इसमें पोर्टफोलिओ का मुख्य हिस्सा टिकाऊ (स्टेनेबल) व्यवसायों का होगा। ये ऐसे व्यवसाय होते हैं, जिनमें वृद्धि का रनवे लंबा होता है। ये कंपनियाँ ज्यादातर कामकाजी पूँजी और पूँजीगत खर्च अपनी आंतरिक पूँजी से जुटा लेती हैं, जिससे उनका व्यवसाय टिकाऊ रहता है।

इसके बाद हम परिवर्तनकारी (ट्रांसफॉर्मेशनल) अवसरों को देखेंगे। जहाँ कारोबारी रणनीति में बदलाव के चलते उस व्यवसाय के नतीजे आगे चल कर टिकाऊ हो सकते हैं, उनमें हम निवेश करेंगे। तीसरा हिस्सा चक्रीय (साइक्लिकल) अवसरों का होगा। ये ऐसी कंपनियाँ हैं, जहाँ औसतन 4-5 साल के प्रतिफल (रिटर्न) टिकाऊ व्यवसायों की तरह होते हैं, पर 1-2 साल ऐसे हो सकते हैं जहाँ परिणाम टिकाऊ नहीं दिखते। इनमें हम तब निवेश करेंगे, जब इनके मूल्यांकन बहुत आकर्षक हों। यह फंड किसी भी तरह की बाजार पूँजी वाले शेरावों में निवेश कर सकता है। पर लंबी अवधि में हम पोर्टफोलिओ का एक चरित्र बना कर रखेंगे। हम 60-70% लार्जेकैप रखेंगे और 30-40% स्मॉलकैप और मिडकैप रखेंगे।

क्या इसने क्षेत्रों के लिहाज से चयन होगा, या पूरी तरह बॉटम-अप नजरिया रखा जायेगा?

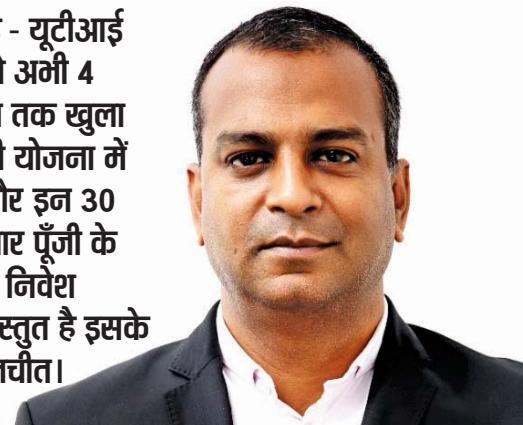
इसका पोर्टफोलिओ पूरी तरह बॉटम-अप होगा। हमें क्षेत्रों के आधार पर कोई आग्रह नहीं रखना है। इसका अपना कारण है। उदाहरण के लिए देखें तो बीते 10 साल में एनबीएफसी में एक अच्छी कंपनी 42 गुणा हो गयी, और एक दूसरी कंपनी सिर्फ चार गुणा हुई है। प्लास्टिक पाइप्स में एक कंपनी 175 गुणा हुई है, दूसरी एक कंपनी आठ गुणा हुई है। लोग सोचते हैं कि कोई क्षेत्र चलेगा तो उसकी सभी कंपनियाँ प्रतिफल देंगी। पर वह सही तरीका नहीं है।

आपके पोर्टफोलिओ की रचना को समझना चाहें तो इसने टिकाऊ व्यवसाय, परिवर्तनकारी

यूटीआई फोकस्ट इविवटी फंड

दमदार भरोसे वाले चुने हुए 30 शेरावों पर दाव

यूटीआई म्यूचुअल फंड के नये फंड - यूटीआई फोकस्ट इविवटी फंड का एनएफओ अभी 4 अगस्त को खुला है और 18 अगस्त तक खुला रहेगा। खुली अवधि की इस इविवटी योजना में अधिकतम 30 शेराव रखे जायेंगे और इन 30 शेरावों का चयन सभी तरह की बाजार पूँजी के वर्गों से किया जायेगा। इस फंड की निवेश दण्डनीति कैसी रहेगी, इस बारे में प्राप्तुत है इसके फंड नैनेजर सुधार्य अस्थाना से बातचीत।



अवसर और चक्रीय अवसर के उदाहरण क्या होंगे?

सिर्फ उदाहरण के लिए जैसे एशियन पेंट्स को लें, तो यह सालों से अच्छा प्रतिफल दे रहा है, आकार बढ़ते जाने के साथ भी। तो आप ऐसी कंपनियाँ भी ढूँढ़े जो टिकाऊ हों और बढ़ रही हों। कुछ कंपनियाँ जब छोटी होती हैं तो बाजार उन पर ध्यान नहीं देता है। जब वे बड़ी होने लगती हैं और अपनी वृद्धि क्षमता साबित करती हैं, तो वैसी कंपनियाँ भी इस पोर्टफोलिओ का हिस्सा होंगी।

टिकाऊ व्यवसाय वे हैं, जिन्हें नयी इविवटी पूँजी जुटाने या बहुत उधारी लेने की जरूरत नहीं होती है। इस श्रेणी में कुछ नये नाम भी होंगे और कुछ ऐसे भी होंगे जो बीते वर्षों में कई गुणा हो गये हैं।

परिवर्तनकारी अवसरों को देखें, तो जैसे एक बड़ा बैंक है जिनकी संपदा गुणवत्ता 10 साल पहले काफी खराब हो गयी थी। उनकी कम लागत बाली जमाएँ (कासा डिपोजिट) बहुत कम थीं। उनका व्यवसाय खराब हो रहा था। पर पिछले 5-7 साल में उस बैंक ने अपने लोन-बुक का विविधीकण कर लिया। अब उनकी 66% लोन-बुक खुदरा श्रेणी में है। अब उनका कासा डिपोजिट अनुपात 46% हो गया है। उनकी कॉर्पोरेट लोन-बुक में भी दबाव काफी कम हो गया है। तो अब इस बैंक की व्यावसायिक

रणनीति बदल गयी है। यह परिवर्तनकारी अवसर का एक उदाहरण है। इसमें अल्फा यानी बाजार से ऊँचा प्रतिफल काफी अच्छा बनता है।

चक्रीय अवसरों में काफी क्षेत्र हैं। एक उदाहरण लें तो वाणिज्यिक वाहनों (सीवी) का चक्र 2019 में एकदम से गिर गया और करीब 50% बिक्री घट गयी। सीवी का 5-6 साल का चक्र होता है। एक सीवी कंपनी अपने क्षेत्र की दिग्गज है, लागत के मामले में बहुत सक्षम है, औसतन 4-5 साल में अच्छा प्रतिफल देती है और बाजार में अभी भी इसका मूल्यांकन उचित स्तरों पर है। ऐसा लगता है कि दो साल में ये 2019 में हासिल ऊँची बिक्री के स्तर पर लौट आयेगी। ऐसे काफी अवसर उपलब्ध हैं। चक्रीय अवसरों में महत्वपूर्ण है कि मूल्यांकन आकर्षक होना चाहिए।

फोकस्ट थीम पर कई फंड पहले से चल रहे हैं। आपका यह फंड इसी थीम वाले दूसरे फंड से किस तरह अलग होगा?

हम दूसरों से एकदम अलग होने के लिए यह फंड शुरू नहीं कर रहे हैं। हमारा जो रिसर्च है, उसमें हमने देखा है कि कई शेरावों पर हमारा भरोसा काफी होता है। हम अपनी इस रिसर्च क्षमता का लाभ उठा कर अपने फोकस्ट फंड को शुरू कर रहे हैं। अगर इस फंड की विशिष्टता आप देखना चाहेंगे तो यही है कि हमारी रिसर्च प्रक्रिया काफी मजबूत है। ■

सबसे पहले आपके इस फंड के बारे में समझना चाहेंगे और खास कर इस समय यह फंड वयों लाया जा रहा है?

बाजार के शीर्ष 250 शेयरों को लार्जकैप और मिडकैप शेयर माना जाता है, और उसके बाद के करीब-करीब चार हजार से ज्यादा ऐसे शेयर हैं, जिनको स्मॉलकैप माना जाता है। अगर एक या दो साल की अवधि में देखा जाये, तो स्मॉलकैप श्रेणी का मूल्यांकन आज मिडकैप और लार्जकैप से कहीं महँगा (ओवरवैल्यूड) कहा जा सकता है। हमने यह देखा है कि जब तक तीन या पाँच साल की अवधि में स्मॉलकैप का मूल्यांकन निपटी से ज्यादा न दिखे, तो अवसर अब भी बाकी हैं। यह हुआ पहला कारण।

दूसरी बात, जब हम एक पोर्टफोलिओ बनाना चाह रहे हैं स्मॉलकैप का, अगर हम 4,000 से अधिक शेयरों में से 40 से 50 शेयर रखना चाहते हैं पोर्टफोलिओ में, तो एक पेशेवर फंड प्रबंधक के पास बिल्कुल मौके उपलब्ध हैं। हम परख कर देख सकते हैं कि कौन-से शेयरों में हमें मौके दिख रहे हैं। और यह श्रेणी ऐसी है, जहाँ लार्जकैप या मिडकैप श्रेणी की तुलना में रिसर्च बहुत कम होती है। यह श्रेणी अल्प-स्वामित्व वाली (अंडरओड) भी रही है और अभी है भी। तो हमारे हिसाब से मौके हैं। जिस तरीके से इस श्रेणी की काफी सारी कंपनियाँ पिछले दो या तीन साल में अपनी बैलेंसशीट की मरम्मत करने या अपने कामकाजी नकद प्रवाह (ऑपरेटिंग कैश फ्लो) को बेहतर करने में लगी हुई हैं, उस कारण भी हम मानते हैं कि इस मुकाम पर भी हम एक स्मॉलकैप फंड शुरू कर सकते हैं।

लेकिन कई बार लोगों के मन में यह सवाल आता है कि यदि आप जनवरी से अभी तक देखें तो लार्जकैप सूचकांक कम चले हैं, मिडकैप सूचकांक का प्रदर्शन उससे बेहतर है और स्मॉलकैप सूचकांक का प्रदर्शन उससे भी अच्छा है। तो कहीं बाजार में चलती गाड़ी पर सवार होने की कोशिश तो नहीं है यह?

नहीं, बिल्कुल नहीं। एक म्यूचुअल फंड के तौर पर निवेशकों को सलाह दें तो यह बात तो है ही कि हम स्मॉलकैप श्रेणी में पाँच साल से अधिक अवधि का नजरिया ले कर निवेश करते हैं। छोटी अवधि का नजरिया लेना बिल्कुल असंभव है। वैश्विक या घरेलू अर्थव्यवस्था में कुछ स्पष्टता दिख रही है, कोरोना के खिलाफ टीकाकरण (वैक्सिनेशन) के मोर्चे पर भी स्पष्टता दिख रही है, तो बिल्कुल एक मौका है, यदि हमारा नजरिया पाँच साल से अधिक का है।
यानी अभी आप यह नहीं मानते कि स्मॉलकैप श्रेणी हट से ज्यादा गर्ने हो गयी है और वहाँ

पीजीआईएम इंडिया स्मॉलकैप स्मॉलकैप श्रेणी में अभी भी उपलब्ध है अच्छे अवसर

पीजीआईएम इंडिया म्यूचुअल फंड ने अभी हाल में 9 जुलाई से 23 जुलाई 2021 के बीच अपने स्मॉलकैप फंड का एनएफओ प्रस्तुत किया था। यह फंड अब लगातार खरीद-बिक्री के लिए दोबारा खोला जा चुका है। इस फंड की खासियतों और निवेश रणनीति पर प्रस्तुत है पीजीआईएम इंडिया म्यूचुअल फंड के सीईओ अर्जीत मेनन से यह बातचीत।



आपको अवसर दिख रहे हैं। कुल मिला कर स्मॉलकैप श्रेणी का विषय अभी आपको कैसा दिख रहा है?

कई क्षेत्र हैं, जो उभर कर आ रहे हैं। अगर हम कागज (पेपर), चीनी, रसायन (केमिकल), कपड़ा (टेक्स्टाइल) आदि क्षेत्रों को देखें, तो वहाँ मौके उपलब्ध हैं। सियल एस्टेट क्षेत्र में भी कुछ अवसर हैं। दरअसल कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिनका प्रतिनिधित्व बड़े सूचकांकों में अधिक नहीं होता। वहाँ हमें मौके दिख रहे हैं। अगर एक निवेशक के नजरिये से देखा जाये, तो स्मॉलकैप में एक विविधीकरण (डाइवर्सिफिकेशन) बिल्कुल मिलता है और जब समयावधि सही हो, तो एक पेशेवर फंड प्रबंधक के जरिये किसी भी समय आप इस श्रेणी में प्रवेश कर सकते हैं।

आपका यह नया फंड किस तरह निवेश करेगा, इसमें रणनीति क्या रहेगी?

सेबी के नियमों के मुताबिक इस स्मॉलकैप फंड में कम-से-कम 65% स्मॉलकैप शेयर हो सकते हैं, बाकी में लार्जकैप और मिडकैप शेयर भी लिये जा सकते हैं। इसमें शेयरों के चयन की रणनीति बॉटमअप तरीके से होगी। शेयर चुनने का पहला आधार है कामकाजी नकद प्रवाह। हम मानते हैं कि कंपनी के वित्तीय इतिहास में 70% स्थितियों में नकद प्रवाह (कैश फ्लो) सकारात्मक होना चाहिए। अगर विभिन्न व्यावसायिक चक्रों (बिजनेस साइकल) में किसी

कंपनी का नकद प्रवाह सकारात्मक रहा हो, तो यह उस कारोबार की अच्छी मजबूती को दिखाता है। उसके बाद कंपनी में उधारी (लेवरेज) नहीं होना और डेब्ट-इक्विटी अनुपात तीन के नीचे होना भी शेयर का चयन करने के अहम आधार हैं। अच्छा आरओई और बेहतर गवर्नेंस तो महत्वपूर्ण हैं ही।

चूंकि आपका फंड स्मॉलकैप फंड है, तो क्या आप इसमें स्मॉलकैप की 65% हिस्सेदारी को आगे चल कर 80-90% की तरफ ले जायेंगे?

हम बिल्कुल इस 65% को 80-90% की तरफ ले जायेंगे, कम से कम 80% तक तो ले ही जायेंगे। हमारा निवेश नजरिया पाँच साल का है और धीरे-धीरे हम इस अनुपात को बढ़ायेंगे। लेकिन यह फंड मैनेजर का फैसला रहेगा कि उसकी टाइमिंग कैसी रहेगी और कैसे वहाँ तक पहुँचेंगे।

आप इस फंड में किन क्षेत्रों को अधिक महत्व देने वाले हैं?

क्षेत्रों के बारे में हमने अभी तय नहीं किया है। दरअसल हम इस फंड में क्षेत्रवार नजरिये से काम नहीं कर रहे हैं। हालाँकि जो रक्षात्मक (डिफॉसिव) क्षेत्र हैं, जैसे वित्तीय क्षेत्र, आईटी, फार्मा आदि के शेयर इस फंड के पोर्टफोलिओ में कम मिलेंगे। केमिकल, टेक्स्टाइल और छोटी आईटी कंपनियों में से हम कुछ अच्छे शेयर ले सकते हैं। ■

दुनिया में ईटीएफ को लेकर बढ़ती रुचि

संदीप ग्रोवर

अमेरिका में 2021 ईटीएफ के इतिहास में सबसे बेहतरीन साल साबित हो सकता है, क्योंकि इसके पहले सात महीनों में ही 2020 के पूरे वर्ष के कुल ईटीएफ निवेश के लगभग बराबर निवेश आ चुका है। यह आँकड़ा बहुत जल्द 500 अरब डॉलर के पार निकल जायगा। वर्ष 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट के बाद प्रसिद्ध होने वाले ईटीएफ में इतिहास एक बार फिर अपने आप को दोहरा रहा है और पिछले साल कोरोना के चलते आयी गिरावट के बाद ईटीएफ में फिर से लोगों की रुचि बढ़ी है।

ईटीएफ की बढ़ती लोकप्रियता में भारत भी पीछे नहीं है। हाल में एनएसई ने 100 ईटीएफ सूचीबद्ध (लिस्ट) होने का मील का पत्थर पार किया है। हालांकि इसमें 19 साल का समय लग गया, लेकिन पिछले केवल एक साल में भारत में 21 ईटीएफ सूचीबद्ध हुए हैं। भारत में पहला ईटीएफ 2002 में निष्पान इंडिया म्यूचुअल फंड (तब बेंचमार्क एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड) ने निफ्टी 50 सूचकांक (इंडेक्स) को आधार बना कर शुरू किया था। भारत का यह प्रथम ईटीएफ 8 जनवरी 2002 को सूचीबद्ध हुआ था। पिछले पाँच साल में भारत में ईटीएफ की प्रबंधन अधीन संपदा (एयूएम) में करीब 14 गुना बढ़ि हुई है। अप्रैल 2016 में भारत में ईटीएफ की कुल एयूएम 23,000 करोड़ रुपये थी, जो मई 2021 में बढ़ कर 3.16 लाख करोड़ रुपये हो गयी।

कोरोना के चलते बाजार टूटने के बाद से लार्जकैप इक्विटी म्यूचुअल फंडों ने मानक सूचकांक (बेंचमार्क इंडेक्स) की तुलना में फीका प्रदर्शन किया है। इसके चलते खुदरा निवेशकों का रुझान ईटीएफ की ओर बढ़ा है। भले ही ईटीएफ की कुल प्रबंधन अधीन संपदा (एयूएम) में खुदरा निवेशकों का करीब 1.5% ही योगदान है और ज्यादातर योगदान संस्थागत निवेशकों से आता है, पर पिछले एक साल में खुदरा निवेशकों के फोलिओ में 126% की बढ़ती रही हुई है। बीते एक साल में खुदरा निवेशकों के फोलिओ की संख्या 18.3 लाख से बढ़ कर 41.4 लाख हो गयी है।

इसी तरह ईटीएफ में लेन-देन करने वाले निवेशकों की संख्या वित्त-वर्ष 2019-20 में 20.4 लाख के मुकाबले 2020-21 में 96% बढ़ कर 40.1 लाख हो गयी है। वित्त-वर्ष

ईटीएफ



ईटीएफ वर्यों हो रहे हैं लोकप्रिय

- लार्जकैप इक्विटी फंडों का प्रदर्शन मानक सूचकांक से फीका रहना
- खुदरा निवेशकों की बढ़ती रुचि और जागरूकता
- विनिवेश के लिए ईटीएफ लाना
- सामान्य म्यूचुअल फंडों के मुकाबले ईटीएफ का शुल्क कम
- सेबी और म्यूचुअल फंडों के शिक्षण और जागरूकता बढ़ाने वाले कदम

2021-22 की पहली तिमाही में ही यह आँकड़ा 22 लाख के पार निकल चुका है।

2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद गोल्ड ईटीएफ में सुरक्षित निवेश के तौर पर बड़ा निवेश आया था। 2009 में जहाँ ईटीएफ के कुल एयूएम में गोल्ड ईटीएफ का 51% योगदान था, वहीं 2013 में यह आँकड़ा बढ़ कर 88% हो गया। इसके बाद 2013 के बजट में भारत सरकार ने इक्विटी ईटीएफ में निवेशकों की रुचि बढ़ाने के लिए सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स (एसटीटी) घटा कर 0.001% कर दिया, जो सिर्फ बेचने पर लगता था। इसके अलावा गैर-इक्विटी ईटीएफ पर एसटीटी लागू ही नहीं होता।

इसी बजट में सरकार ने पेशन फंडों को ईटीएफ में निवेश की मंजूरी दे दी, जिससे ईटीएफ को नयी मजबूती मिली। वर्ष 2014 में सरकारी कंपनियों में विनिवेश के लिए सरकार ने खुद सीपीएसई ईटीएफ का रास्ता चुना और इससे 3000 करोड़ रुपये की रकम जुटायी। वर्ष 2020 और 2021 में कोरोना काल के दौरान बड़े फंडों के धीमेपन से भी ईटीएफ का आकर्षण बढ़ा।

इस समय देश के 17 म्यूचुअल फंड घराने निफ्टी 50 सूचकांक पर आधारित ईटीएफ चला

रहे हैं। इसके अलावा निफ्टी बैंक और निफ्टी नेक्स्ट 50 कुछ और प्रचलित इंडेक्स हैं, जिन पर ईटीएफ लाये जा चुके हैं। हाल में खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी और रुचि के अनुसार फंड घराने अलग-अलग विषयों पर आधारित ईटीएफ शुरू कर रहे हैं, जैसे हेल्थकेयर और खपत (कंजंपशन) जैसे क्षेत्र आधारित ईटीएफ या फिर निफ्टी 50 वैल्यू 20 इंडेक्स, निफ्टी 100 लो वॉलेटिलिटी 30 इंडेक्स, निफ्टी अल्फा लो वॉलेटिलिटी 30 इंडेक्स और निफ्टी 200 व्हालिटी 30 इंडेक्स जैसे रणनीति आधारित ईटीएफ शामिल हैं।

फिलहाल सोने पर आधारित 11 ईटीएफ हैं। कोरोना के महेनजर 2020-21 में गोल्ड ईटीएफ में रिकॉर्ड भागीदारी हुई थी। वित्त-वर्ष 2020-21 में 12 लाख निवेशकों ने गोल्ड ईटीएफ में लेन-देन किया। पिछले पाँच साल में गोल्ड ईटीएफ का एयूएम द्वाई गुना होकर 16,624 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। जन 2021 में भी गोल्ड ईटीएफ में करीब 360 करोड़ रुपये का रिकॉर्ड शुद्ध निवेश हुआ है। अब सेबी चाँदी पर आधारित ईटीएफ लाने को भी मंजूरी देने पर विचार कर रहा है। ऋण (डेब्ट) बाजार से जुड़े 13 ईटीएफ भारत में चल रहे हैं, जिनका कुल एयूएम करीब 40,000 करोड़ रुपये का है।

ईटीएफ सरल और कम खर्च वाला निवेश विकल्प है, खास कर पहली बार शेयरों में निवेश करने वाले छोटे निवेशकों के लिए। फिलहाल भारत में निवेशकों के पास चार तरह के ईटीएफ में निवेश करने का विकल्प है, जिनमें इक्विटी, डेब्ट, गोल्ड और ओवरसीज ईटीएफ शामिल हैं। अगर आप भी लंबी अवधि के लिए कम खर्च वाले निवेश विकल्प की तलाश में हैं और बाजार पर हर दिन बारीकी से नजर नहीं रख सकते हैं तो ईटीएफ आपके वित्तीय लक्ष्यों को पाने के लिए संपदा सृजन का अच्छा रास्ता है। ■



इकिवटी और ऋण में संतुलन वाले फंड

बा जार में जब शेयरों में काफी तेजी आ जाये तो उसके बाद हाथ में आ चुके लाभ को सुरक्षित करना भी जरूरी होता है। इस दिशा में म्यूचुअल फंडों की इकिवटी और ऋण (डेब्ट) दोनों की मिश्रित योजनाएँ (हाइब्रिड स्कीम) उपयोगी होती हैं। सेबी ने म्यूचुअल फंडों का जो वर्गीकरण किया है, उनमें इकिवटी और ऋण (डेब्ट) योजनाओं के अलावा कुछ अन्य श्रेणियाँ भी बनायी गयी हैं। इनमें मिश्रित योजनाएँ (हाइब्रिड स्कीम), समाधान आधारित (सॉल्यूशन ओरिएंटेड) योजनाएँ और अन्य योजनाएँ शामिल हैं। मिश्रित (हाइब्रिड) योजनाओं के सात प्रकार तय किये गये हैं।

जो निवेशक अधिक जोखिम उठा सकते हैं, वे इकिवटी और ऋण के मिश्रण में इकिवटी की अधिक हिस्सेदारी वाली योजना को चुन सकते हैं। जिन निवेशकों को कम जोखिम उठाना हो, उनके लिए ऋण का हिस्सा अधिक रखने वाली योजनाएँ अनुकूल होती हैं। निवेशकों के लिए अच्छा रहता है कि शेयर बाजार जब काफी महंगा लगने लगे, यानी मूल्यांकन बहुत ऊँचा हो जाये, तो वे अपने पोर्टफॉलिओ में ऋण का अनुपात बढ़ाने के लिए इन हाइब्रिड योजनाओं को चुनें। वहीं जो निवेशक फंड मैनेजर के विवेक पर चलना चाहते हैं, उनके लिए डायनामिक एसेट एलोकेशन या बैलेंस्ड एडवार्टेज फंड के नाम से प्रचलित योजनाएँ अच्छी रहती हैं।

मिश्रित (हाइब्रिड) योजनाएँ

रुद्धिवादी मिश्रित (कंजर्वेटिव हाइब्रिड) फंड : यह खुली अवधि वाली ऐसी योजना है, जिसमें मुख्यतः ऋण प्रपत्रों में निवेश किया जाता है। इसमें ऋण प्रपत्रों में होने वाला निवेश कुल संपदा के 75% से 90% के बीच हो सकता है। वहीं इकिवटी और इकिवटी संबंधी प्रपत्रों में 10% से 25% तक निवेश होता है।



संतुलित मिश्रित (बैलेंस्ड हाइब्रिड) फंड/आक्रामक मिश्रित (एग्रेसिव हाइब्रिड) फंड : संतुलित मिश्रित (बैलेंस्ड हाइब्रिड) फंड इकिवटी और ऋण दोनों में निवेश करने वाली संतुलित योजना है। इसमें इकिवटी एवं इकिवटी संबंधी प्रपत्रों में निवेश कुल संपदा का 40-60% तक हो सकता है, जबकि ऋण प्रपत्रों में निवेश भी 40-60% तक हो सकता है। सेबी ने स्पष्ट किया है कि इस योजना में आर्बिट्रेज की अनुमति नहीं होगी।

आक्रामक मिश्रित (एग्रेसिव हाइब्रिड) फंड खुली अवधि वाली ऐसी मिश्रित योजना है, जिसमें मुख्यतः इकिवटी एवं इकिवटी संबंधी प्रपत्रों में निवेश किया जाता है। इसमें इकिवटी का हिस्सा 65-80% तक रखा जाता है, जबकि बाकी 20-35% तक हिस्सा ऋण का होता है। एक म्यूचुअल फंड को संतुलित मिश्रित और आक्रामक मिश्रित में से किसी एक तरह का ही फंड प्रस्तुत करने की अनुमति है।

डायनामिक एसेट एलोकेशन या बैलेंस्ड एडवार्टेज फंड : यह खुली अवधि वाली योजना है, जिसमें डायनामिक एसेट एलोकेशन यानी

सक्रिय रूप से संपदा आवंटन किया जाता है। इसमें फंड मैनेजर बाजार स्थितियों के अनुरूप सक्रिय रूप से फंड का प्रबंधन करते हुए इकिवटी एवं ऋण में अपने विवेक से निवेश करता है।

मल्टी एसेट एलोकेशन : यह खुली अवधि वाली योजना है जिसमें कम-से-कम तीन अलग-अलग तरह की संपदाओं में निवेश किया जाता है। एमसी को को पहले से यह निर्धारित करना होता है कि उसके ऐसे फंड में किन-किन संपदाओं में निवेश होगा। ऐसे फंड में चुने गये सभी संपदा-वर्गों में न्यूनतम 10% निवेश रखना होता है।

आर्बिट्रेज फंड : यह खुली अवधि वाली ऐसी योजना है, जिसमें आर्बिट्रेज रणनीति अपनाते हुए निवेश किया जाता है। इसमें इकिवटी एवं इकिवटी संबंधी प्रपत्रों में कुल संपदा का कम-से-कम 65% निवेश किया जाता है।

इकिवटी सेविंग्स : यह खुली अवधि वाली ऐसी योजना है, जो इकिवटी, आर्बिट्रेज और ऋण में निवेश करती है। इसमें इकिवटी एवं इकिवटी संबंधी प्रपत्रों में न्यूनतम 65% और ऋण में न्यूनतम 10% निवेश किया जाता है। ■

अस्वीकरण (डिस्कलेमर) : निवेशकों को केवल पंजीकृत म्यूचुअल फंडों के साथ लेन-देन करना चाहिए, जिनके विवरणों की पुष्टि सेबी की वेबसाइट (<https://www.sebi.gov.in>) पर 'Intermediaries/Market Infrastructure Institutions' वाले भाग में की जा सकती है। कृपया एक बार केवाईसी (नो योर कस्टमर) प्रक्रिया पूरी करने और पते, फोन नंबर, बैंक विवरण आदि में बदलाव के लिए म्यूचुअल फंडों की वेबसाइट देखें। निवेशक पंजीकृत इंटरमीडियरी के विरुद्ध शिकायत दर्ज करने और बाद में उसकी स्थिति देखने की सुविधा उपलब्ध कराता है। स्कोर्स आपको सेबी में ऑनलाइन शिकायत दर्ज करने और बाद में उसकी स्थिति देखने की सुविधा उपलब्ध कराता है।

पै जी बाजार के नियामक सेबी ने 26 जुलाई 2021 को परिपत्र (सर्कुलर) जारी करके सभी रजिस्ट्रार एंड ट्रांसफर एजेंटों (आरटीए) को एक साझा मंच (कॉमन प्लेटफॉर्म) बनाने का निर्देश दिया है। इस साझा मंच के आने के बाद म्यूचुअल फंडों में निवेश करने और उपसे जुड़ी काफी प्रक्रियाओं को लेकर निवेशकों की जिंदगी आसान हो जाने की आशा जगी है।

सेबी ने इस साझा मंच (प्लेटफॉर्म) को बनाने की जिम्मेदारी रजिस्ट्रार एंड ट्रांसफर एजेंटों (आरटीए) को सौंपी है। दरअसल अभी दो ही आरटीए सक्रिय हैं - केफिन टेक्नोलॉजीज (केफिनटेक) और कंप्यूटर एज मैनेजमेंट सर्विसेज (कैम्प्स), यानी इन दोनों को ही मिल कर यह साझा मंच बनाना है। इसे तैयार करने के लिए सेबी ने उन्हें 31 दिसंबर 2021 तक की समय-सीमा दी है। ये दोनों आरटीए इस मंच के लिए अपने व्यवहारों के मानक (स्टैंडर्डाइज्ड प्रैक्टिसेज) बनायेंगे और अपनी-अपनी प्रणाली को आपस में जुड़ने लायक (इंटरऑपरेबल) बनायेंगे।

सेबी ने अपने परिपत्र में कहा है कि इस साझा मंच से निवेशकों को पूरे म्यूचुअच फंड उद्योग में एक जैसा एकीकृत, सुसंगत और बेहतर अनुभव उपलब्ध कराने के लिए बाजार नियामक सेबी ने जिस साझा मंच को बनाने का निर्देश दिया है, वह निवेशकों के लिए निश्चित रूप से बहुत लाभग्राह होने वाला है। पर इस साझा मंच को लेकर म्यूचुअल फंड उद्योग में अभी कई उलझाने बाकी हैं।

सेबी के परिपत्र के अनुसार यह साझा मंच कई चरणों में बनेगा। शुरूआती चरण में इस पर म्यूचुअल फंडों से संबंधित गैर-वित्तीय लेन-देन की सुविधाएँ उपलब्ध करायी जायेंगी और 31 दिसंबर 2021 तक यह मंच पूरी तरह चालू हो जायेगा।

सेवा संबंधी विभिन्न अनुरोध इस मंच पर किये जा सकेंगे, जैसे इमेल आईडी, संपर्क के लिए फोन नंबर, बैंक खाता आदि को बदलना, प्रश्न और शिकायतें करना, निवेश संबंधी रिपोर्ट पाना, लेन-देन की रिपोर्ट पाना, कैपिटल गेन, अनक्लेम्ड डिविडेंड/रिडेंशन आदि की जानकारी पाना। इस एक ही मंच से सभी म्यूचुअल फंडों के लिए ये सब सुविधाएँ पाना संभव होगा। इसे संभव बनाने के लिए सेबी ने निर्देश दिया है कि सभी एएमसी, आरटीए और डिपॉजिटरी इस मंच को तत्काल आधार (रियल टाइम) पर अपने आँकड़े देंगे। आरटीए, डिपॉजिटरी आपस में भी आँकड़ों के फीड साझा करेंगे, जिससे निवेश संबंधी रिपोर्ट तैयार हो सकें। आगे चल कर वितरकों, निवेश सलाहकारों, एएमसी, स्टॉक एक्सचेंज प्लेटफॉर्म और डिजिटल प्लेटफॉर्म को भी इस मंच की सेवाएँ मिलेंगी।

साझा मंच

से म्यूचुअल फंड निवेशकों को मिलेगी बड़ी सुविधा

पूरे म्यूचुअच फंड उद्योग में निवेशकों को एक जैसा एकीकृत, सुसंगत और बेहतर अनुभव उपलब्ध कराने के लिए बाजार नियामक सेबी ने जिस साझा मंच को बनाने का निर्देश दिया है, वह निवेशकों के लिए निश्चित रूप से बहुत लाभग्राह होने वाला है। पर इस साझा मंच को लेकर म्यूचुअल फंड उद्योग में अभी कई उलझाने बाकी हैं।



म्यूचुअल फंडों में निवेशक अलग-अलग तरीकों से पैसे लगाते हैं। अधिकांश लोग वितरकों (डिस्ट्रीब्यूटर) की मदद लेते हैं, चाहे वे व्यक्तिगत वितरक हों या बैंक, कॉर्पोरेट या फिनटेक के रूप में। बीएसई ने स्टार एमएफ और एनएसई ने म्यूचुअल फंड प्लेटफॉर्म नाम से अपने ऑनलाइन मंच बनाये हैं, जिनके जरिये वितरक सभी म्यूचुअल फंड

कंपनियों से जुड़ कर अपने ग्राहकों को निवेश संबंधी तमाम सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं। स्वयं म्यूचुअल फंड कंपनियों की अपनी वेबसाइटों पर जाकर भी निवेशक म्यूचुअल फंडों की यूनिटें खरीद सकते हैं।

लगभग सभी म्यूचुअल फंड कंपनियों ने आपस में मिल कर बराबर हिस्सेदारी में म्यूचुअल फंड यूटिलिटीज (एमएफयू) नाम का एक उपक्रम भी खड़ा किया है, जो सभी म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेश और अन्य संबंधित सेवाएँ उपलब्ध कराता है। सारे निवेशकों के खाते संभालने के लिए म्यूचुअल फंडों को किसी आरटीए और डिपॉजिटरी से भी जुड़ना होता है।

अब ऐसा जान पड़ता है कि सेबी की योजना एक ऐसा नया ढाँचा खड़ा करने की है, जो इन सबके ऊपर एक छतरी की तरह काम करे और सभी उससे जुड़े रहें, ताकि निवेशकों को अपने म्यूचुअल फंड निवेश संबंधी सारे काम एक ही जगह निपटाने की सहूलियत मिल जाये।

हालांकि सेबी की इस पहल से निवेशकों को काफी आसानी हो जायेगी, पर म्यूचुअल फंड उद्योग में सक्रिय फिनटेक और स्वयं म्यूचुअल फंड कंपनियों के साझा उपक्रम एमएफयू को इस नये साझा मंच से प्रतिस्पर्धा झेलनी पड़ सकती है। बहुत-से नये उभे फिनटेक काफी कुछ वैसा ही काम कर रहे हैं, जो प्रस्तावना इस साझा मंच की है, बल्कि यह साझा मंच सेबी के समर्थन और सभी म्यूचुअल फंडों, आरटीए और डिपॉजिटरियों से एक साथ जुड़ होने के चलते कहीं ज्यादा प्रभावी तरीके से काम कर सकता है।

एमएफयू के बारे में भी ऐसे ही प्रश्न उठने लगे हैं कि इस साझा मंच के बनने के बाद उसकी प्रासंगिकता कितनी बच जायेगी। म्यूचुअल फंड उद्योग में यह भी चर्चा है कि एमएफयू को ही वह सारी जिम्मेदारियाँ क्यों नहीं सौंप दी गयीं, जिनके लिए यह साझा मंच बनाया जा रहा है, क्योंकि वैसा ही काफी काम एमएफयू पहले से कर रहा है।

ऐसे में क्या म्यूचुअल फंड उद्योग में पहले से सक्रिय विभिन्न मंचों के लिए सेबी के निर्देश पर बन रहा यह नया साझा मंच एक बड़ी प्रतिस्पर्धा बन कर उभेरेगा? या फिर यह पूरे उद्योग के लिए मूलभूत ढाँचे की भूमिका अपना कर पहले से मौजूद खिलाड़ियों को अपना कामकाज बेहतर बनाने की सुविधा देगा और उनके लिए एक मजबूत सहारा बन जायेगा? यह तस्वीर अगले कुछ महीनों में ही स्पष्ट हो सकेगी। ■

पूँजी बाजार के नियामक सेबी ने हाल ही में एक परिपत्र (सर्कुलर) निकाल कर कहा है।

कि देश में जो रजिस्ट्रार ऐंड ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) हैं, वे मिल कर एक नया मंच (प्लेटफॉर्म) बनायेंगे और यह पूरे म्यूचुअल फंड उद्योग का एक साझा मंच होगा। म्यूचुअल फंड के जितने भी निवेशक हैं, वे इस मंच पर हर तरह की सुविधाएँ हासिल कर सकेंगे। इस मंच को बनाने की समय सीमा 31 दिसंबर 2021 रखी गयी है।

यह मंच सबके लिए एक नयी सहूलियत की तरह है। म्यूचुअल फंड उद्योग के स्तर पर यदि इस मंच को बढ़ावा दिया जायेगा तो इससे म्यूचुअल फंडों के बारे में जागरूकता बढ़ने वाली है। मैं इसे एक अवसर के तौर पर देख रहा हूँ। कौन-से अवसर या कौन-से विकल्प इस मंच पर रहेंगे, इसके बारे में आज बात करना मुश्किल है। हमें कहीं सुनने में आ रहा है कि पहले इसमें गैर लेन-देन (नॉन-ट्रॉन्जैक्शनल) वाले प्रयासों पर ध्यान दिया जायेगा, तो कोई कह रहा है कि लेन-देन पर भी ध्यान दिया जायेगा। जैसे-जैसे चीजें आगे बढ़ेंगी, वैसे-वैसे हमें इसके बारे में पता चलेगा। ऐसे बहुत सारे मंच पहले से उपलब्ध हैं। इनके साथ एक और नया मंच आ जायेगा। हम इसका स्वागत कर रहे हैं।

मुझे नहीं लगता कि हमारे जैसी फिनटेक कंपनियों के लिए यह चुनौती है। 'म्यूचुअल फंड सही है' के नारे से एक अभियान चला था, सारे उद्योग ने मिल कर इसे चलाया था। इसका फायदा पूरे उद्योग को हुआ। इस मंच के साथ भी ऐसा ही होगा। अभी देश में दो आरटीए हैं - केफिनटेक और कैम्स। इनके खुद के मंचों पर भी कोई भी निवेशक अभी जाकर निवेश कर सकता है। इनके ऐप भी हैं, जिनका इस्तेमाल निवेशक करते हैं। दोनों के पास पहले से तकनीक उपलब्ध है। नये मंच में अहम होने वाली है इन दोनों आरटीए की प्रणालियों का आपस में जुड़ने लायक बनना (इंटरऑपरेबिलिटी)।

बहुत सारे निवेशक ऐसे हैं जो एक एमसी की किसी म्यूचुअल फंड योजना से पैसा निकालते हैं और दूसरे एमसी की किसी फंड योजना में पैसे लगाते हैं। इसके लिए एक फंड से निकासी (रिडीम) करने के बाद पैसा बैंक खाते में आता है, फिर वह पैसा दूसरे फंड में लगता है। किसी एक एमसी के भीतर स्विच करना आसान है, लेकिन उद्योग के स्तर पर स्विच करना उतना आसान नहीं है।

उम्मीद है कि सेबी के परिपत्र के बाद बनने वाले इस नये मंच के आने से उद्योग के स्तर पर भी स्विच करना आसान हो जायेगा। हालाँकि

म्यूचुअल फंड के साझा मंच से फिनटेक को चुनौती नहीं



बाजार नियामक सेबी ने सभी रजिस्ट्रार ऐंड ट्रांसफर एजेंटों (आरटीए) को म्यूचुअल फंड उद्योग के लिए एक साझा मंच (प्लेटफॉर्म) बनाने का निर्देश दिया है। इस साझा मंच से निवेशकों को पूरे म्यूचुअल फंड उद्योग में एक जैसा एकीकृत, सुसंगत और बेहतर अनुभव मिलेगा। यह मंच किस तरह बनेगा और निवेशकों को क्या सुविधाएँ मिलेंगी, इस बारे में बता रहे हैं मार्फ वेल्थ गोथ के संस्थापक **र्षद घेटनगाला।**

अभी मैं इस बात का केवल अंदाजा लगा रहा हूँ, क्योंकि पूरे विवरण नहीं पता हैं।

जहाँ तक इस मंच की कार्यप्रणाली की बात है, सेबी के परिपत्र में साफ कहा गया है कि एमसी, आरटीए और डिपॉजिटरी इसे तत्काल (रियल टाइम) आधार पर अपने आँकड़े देंगे। आगे चल कर वितरकों, निवेश सलाहकारों, एमसी, स्टॉक एक्सचेंजों के प्लेटफॉर्म और डिजिटल प्लेटफॉर्म को भी इसकी सेवाएँ मिलेंगी। परिपत्र में कहा गया है कि यह प्लेटफॉर्म सेवा संबंधी अनुरोध भी देखेगा, मसलन ईमेल आईडी, फोन नंबर, बैंक खाता आदि बदलना। इसके अलावा, प्रश्न, शिकायतें, निवेश संबंधी रिपोर्ट, लेन-देन की रिपोर्ट, कैपिटल गेन या लॉस, अनक्लेम्ड डिविडेंड/ रिडिप्लान जैसी चीजों को भी यह मंच देखेगा।

म्यूचुअल फंड यूटिलिटी (एमएफयू) हो या स्टॉक एक्सचेंजों के अपने प्लेटफॉर्म हों या फिनटेक हों, इनके जरिये लेन-देन (ट्रॉन्जैक्शन) से संबंधित काम अभी भी हो ही रहे हैं। लेकिन एक बड़ा पहलू है सेवाओं (सर्विस) से संबंधित। इस नये मंच से इसकी समस्या काफी हद तक सुलझ सकती है।

आज किसी को अगर अपने फोलिओ को अपडेट करना है, क्योंकि यह किसी एक एमसी

की ओर से दिया गया होता है। अब एमएफयू ने एक कदम आगे लिया है। इन्होंने कैन बना दिया है, जिसमें निवेशक का पूरा विवरण है। वही विवरण अलग-अलग एमसी में जा रहा है। ऐसे में कोई निवेशक अपना विवरण बदलता है, तो वह बदलाव अलग-अलग एमसी को चला जाता है। मेरा मानना है कि यह मंच सेवा संबंधी दिक्कतों को सुलझायेगा। अगर ऐसा होता है तो निवेशक की काफी मेहनत और उनका काफी समय बच सकता है, खास तौर पर उन निवेशकों का, जो अपना सारा काम खुद करते हैं।

बहुत सारे निवेशकों को तब खास तौर पर दिक्कत आती थी, जब उनको अपने गैर लेन-देन या सेवा संबंधी अनुरोध का समाधान चाहिए होता था। उदाहरण के तौर पर, अगर किसी निवेशक को अपना नामिती (नोमिनी) बनाना है, तो हर एमसी को इसकी जानकारी अलग-अलग देनी होती है। ऐसे में अगर यह नया मंच आता है तो इस मोर्चे पर निवेशकों के लिए काफी सहूलियत हो जायेगी। मान लीजिए किसी के परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती है और उनका दस म्यूचुअल फंडों में निवेश है। अभी उनके परिवार को दिक्कत आयेगी, उनको दस जगह जा कर हस्तांतरण का अनुरोध देना होगा। नया मंच आने से यह दिक्कत दूर सकती है। ■

म्हूऱुअल फंड योजनाओं का प्रदर्शन

	औसत पयूरम (करोड़ रु)	एवरी (रु.) (30.7.2021)	1 माह (%)	6 माह (%)	1 साल (%)	3 साल (%)	5 साल (%)
मर्टीकैप इक्विटी							
क्वांट ऐक्टिव फंड	498.67	385.29	7.27	45.69	93.06	28.43	23.40
निप्पॉन इंडिया मर्टीकैप फंड	9295.54	130.45	4.47	34.47	73.76	12.32	11.94
महिंद्रा मनुलाइफ मर्टी कैप बढ़त योजना रेगुलर प्लान	509.30	18.86	4.85	38.83	71.11	19.85	
इचेको इंडिया मर्टीकैप फंड	1268.14	76.39	5.69	32.74	70.93	15.58	14.82
आईसीआईसीआई प्रौद्योगिक्य मर्टीकैप फंड	5944.95	421.35	5.22	29.23	64.38	13.24	13.37
बॉडेर मर्टी कैप फंड प्लान ए	1001.27	154.31	6.29	31.53	64.00	15.54	13.69
प्रिसिपल मर्टी कैप ग्रोथ फंड	736.22	212.87	4.51	29.67	61.27	13.85	15.57
बीएलपी पारिचा मर्टीकैप फंड	532.22	71.43	4.67	30.49	58.68	15.32	13.94
आईटीआई मर्टीकैप फंड रेगुलर प्लान	232.59	14.23	0.90	20.67	48.80		
आदित्य बिडला सन लाइफ मर्टीकैप फंड रेगुलर प्लान	1292.75	11.45	5.14				
फ्लेक्सीकैप							
बीओआई एक्सा फ्लेक्सीकैप फंड रेगुलर	81.39	18.32	4.99	35.91	74.14		
पीजीआईएम इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड	1044.96	24.89	6.05	33.03	68.86	23.09	18.28
यूटीआई फ्लेक्सीकैप फंड	17843.29	240.77	3.95	23.52	64.96	18.40	16.94
फैक्टिन इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड	9375.06	864.66	2.45	22.31	63.17	13.43	12.44
एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड	24217.31	900.04	1.50	25.19	62.11	12.42	13.15
डीएसपी फ्लेक्सीकैप फंड रेगुलर प्लान	5259.07	63.61	4.00	26.14	61.12	18.01	16.50
पराग पारिख फ्लेक्सीकैप फंड	9750.81	45.94	6.76	28.66	58.40	22.74	20.50
आदित्य बिडला सन लाइफ फ्लेक्सीकैप फंड रेगुलर प्लान	13744.37	1078.84	2.88	24.08	57.79	14.63	14.71
इडेलवाइज फ्लेक्सीकैप फंड रेगुलर प्लान	709.13	21.44	4.36	26.41	56.80	13.39	15.33
यूनियन फ्लेक्सीकैप फंड	520.61	31.03	3.40	26.40	56.32	16.53	14.18
लाजकैप इक्विटी							
फैक्टिन इंडिया ब्लूचिप फंड	6127.84	663.36	1.72	22.37	59.49	12.76	11.44
निप्पॉन इंडिया लाजकैप फंड	10159.75	45.10	2.04	21.32	53.91	10.53	12.61
टाटा लाजकैप फंड रेगुलर प्लान	922.26	304.73	2.07	22.72	49.41	12.28	11.72
एसबीआई ब्लूचिप फंड रेगुलर प्लान	27430.83	56.26	2.25	18.77	49.28	12.83	12.06
आदित्य बिडला सन लाइफ फ्रॅंटलाइन इक्विटी फंड रेगुलर	19895.36	312.82	2.68	19.61	48.86	11.73	11.84
यूटीआई मास्टरसेवर यूनिट स्कीम	7984.62	177.67	1.58	19.09	48.65	13.39	13.38
आईडीबीआई इंडिया टॉप 100 इक्विटी फंड	442.85	35.89	2.40	22.24	48.61	13.68	11.74
एचडीएफसी टॉप 100 फंड	19296.44	626.41	0.26	18.35	47.65	10.48	11.79
महिंद्रा मनुलाइफ लाजकैप प्रगति योजना रेगुलर	113.96	14.38	1.00	19.84	47.35		
कोटक ब्लूचिप फंड	2539.23	345.75	1.29	19.42	47.03	13.96	13.19
लार्ज एंड मिडकैप इक्विटी							
फैक्टिन इंडिया इक्विटी एडवांटेज फंड	2549.90	113.81	1.18	25.49	70.56	12.19	11.58
यूटीआई कोर इक्विटी फंड	987.04	93.59	3.67	32.99	69.17	13.93	12.66
एचडीएफसी लार्ज एंड मिडकैप फंड रेगुलर	2253.97	169.78	3.36	30.47	67.83	14.63	13.39
मोतीलाल औसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड रेगुलर	639.02	15.72	7.24	31.02	67.23		
मिरेड एसेट इमर्जिंग ब्लूचिप फंड	17282.46	90.99	3.73	28.09	66.41	22.26	20.71
एसबीआई लार्ज एंड मिडकैप फंड रेगुलर	3901.81	339.75	2.73	27.62	66.24	16.67	14.69
ऐक्सिस ग्रोथ अपॉनिटीज फंड ग्रोथ	3040.15	19.19	3.34	33.54	65.15		
आदित्य बिडला सन लाइफ इक्विटी एडवांटेज फंड रेगुलर	5183.33	622.17	4.30	26.32	63.76	13.14	12.88
आईसीआईसीआई प्रौद्योगिक्य लार्ज एंड मिडकैप फंड	3885.06	474.37	4.23	29.06	63.33	14.27	12.89
प्रिसिपल इमर्जिंग ब्लूचिप फंड	2653.96	165.70	2.66	28.24	63.28	15.04	16.23
मिडकैप							
पीजीआईएम इंडिया मिडकैप अपॉनिटीज फंड	1498.67	39.35	7.63	42.31	96.75	26.43	19.34
क्वांट मिडकैप फंड	61.09	110.35	5.41	45.02	91.23	23.83	19.19
मिरेड एसेट मिडकैप फंड रेगुलर	4786.70	19.52	5.27	34.40	87.84		
इडेलवाइज मिडकैप फंड रेगुलर	1321.83	47.58	5.37	37.49	86.79	19.41	17.88
एसबीआई मैथन मिडकैप फंड रेगुलर	5155.05	125.56	4.74	34.92	83.38	18.91	12.93
यूनियन मिडकैप फंड रेगुलर	212.23	25.58	5.22	37.82	83.11		
कोटक इमर्जिंग इक्विटी	12183.32	67.67	4.07	35.24	81.98	20.10	17.40
आईसीआईसीआई प्रौद्योगिक्य मिडकैप फंड	2531.83	153.56	4.77	36.01	81.02	16.33	15.42
निप्पॉन इंडिया ग्रोथ फंड	9517.93	1902.53	8.00	35.18	80.37	19.94	17.08
महिंद्रा मनुलाइफ मिडकैप उत्तम योजना रेगुलर	681.10	16.49	5.12	41.21	77.89	19.32	

म्हूऱुअल फंड योजनाओं का प्रदर्शन

	औसत एयूरम (करोड़ रु.)	एवरी (रु.) (30.7.2021)	1 माह (%)	6 माह (%)	1 साल (%)	3 साल (%)	5 साल (%)
स्मॉलकैप							
क्वांट स्मॉलकैप	410.56	127.10	10.22	77.28	160.87	35.33	22.12
कोटक स्मॉलकैप फंड	4029.90	149.41	6.47	47.78	121.70	26.15	19.81
निपॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड	13770.33	77.24	7.51	54.39	115.26	22.30	22.26
आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड रेगुलर	2302.40	47.98	10.17	49.66	113.72	22.94	17.56
बीओआई एक्सा स्मॉलकैप फंड रेगुलर	137.24	24.07	6.79	50.91	113.39		
एलएंडटी इन्विंग बिजनेसेज फंड रेगुलर	6296.76	40.24	7.64	53.32	112.14	14.86	18.51
एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड	11113.16	70.56	6.88	51.98	109.82	16.32	19.11
आदित्य बिडला सन लाइफ स्मॉलकैप फंड रेगुलर	2687.52	53.79	7.44	47.06	108.85	11.74	12.71
आईडीएफसी इन्विंग बिजनेसेज फंड रेगुलर	1065.32	22.00	10.06	47.26	108.53		
टाटा स्मॉलकैप फंड रेगुलर	1143.36	20.49	8.25	58.81	107.68		
ईएलएसएस							
क्वांट टैक्स प्लान	182.32	208.12	7.07	49.81	108.13	30.87	23.73
आईडीएफसी टैक्स एडवांटेज (ईएलएसएस) फंड रेगुलर	3156.57	88.35	2.95	33.82	77.48	15.67	16.42
बीओआई एक्सा टैक्स एडवांटेज फंड रेगुलर	442.38	94.75	5.08	33.75	71.12	19.29	18.74
डीएसपी टैक्स सेवर फंड रेगुलर	8471.88	77.01	4.43	29.86	63.99	17.87	15.85
फ्रैकलिन इंडिया टैक्सशील्फ फंड	4498.13	785.63	0.74	23.17	61.66	11.76	11.44
मिरेड एसेट टैक्स सेवर फंड रेगुलर	7618.02	28.75	2.35	25.01	61.66	19.67	20.14
निपॉन इंडिया टैक्स सेवर फंड	11390.80	70.14	3.26	27.72	61.11	7.16	7.82
महिंद्रा मनुलाइफ ईएलएसएस कर बचत योजना रेगुलर	361.07	17.25	3.09	28.65	59.77	13.40	
मोतीलाल ओसावाल लॉन्ग टर्म इविवटी फंड ग्रोथ	2077.78	25.64	5.08	26.51	59.11	12.03	15.32
एचडीएफसी लॉन्ग टर्म एडवांटेज फंड	1283.28	520.93	3.39	25.66	58.67	13.92	15.03
वैल्यू एंड कॉन्ट्रा							
आईडीएफसी स्टर्लिंग वैल्यू फंड रेगुलर	3473.54	80.68	6.52	44.93	104.93	14.03	16.14
एसबीआई कॉन्ट्रा फंड रेगुलर प्लान	2083.10	182.13	5.38	31.21	86.79	17.99	14.16
टैंप्लेटन इंडिया वैल्यू फंड ग्रोथ	523.13	362.13	2.19	28.78	78.28	11.02	12.71
आदित्य बिडला सन लाइफ प्लान वैल्यू फंड	4200.52	69.94	4.38	31.20	73.21	6.85	9.36
निपॉन इंडिया वैल्यू फंड	3676.85	113.44	4.47	30.85	66.53	15.68	14.92
एलएंडटी इंडिया वैल्यू फंड	6959.74	53.18	4.34	29.45	61.11	13.09	13.77
जे.एम वैल्यू फंड	139.95	47.76	4.23	26.83	60.12	13.74	14.31
यूटीआई वैल्यू अपॉन्युनिटीज फंड	5728.60	94.00	3.04	22.02	56.88	14.79	13.79
एचडीएफसी कैपिटल बिल्डर वैल्यू फंड	4621.71	398.20	3.73	23.46	55.37	9.79	12.86
आईडीबीआई लॉन्ग टर्म वैल्यू फंड	105.09	14.80	3.28	27.15	55.14		
फोकर्स फंड							
निपॉन इंडिया फोकर्स इविवटी फंड	5050.25	70.83	2.71	26.37	68.43	14.14	13.78
फ्रैकलिन इंडिया फोकर्स इविवटी फंड	7545.46	60.27	3.32	26.95	67.84	15.09	14.13
क्वांट फोकर्स फंड	19.47	52.23	5.43	33.24	67.67	17.14	15.95
आईआईएफएल फोकर्स इविवटी फंड	1754.59	27.82	5.67	23.25	60.36	23.11	17.67
मिरेड एसेट फोकर्स फंड	5959.21	17.96	3.69	25.60	58.45		
टाटा फोकर्स इविवटी फंड रेगुलर प्लान	1157.74	13.96	4.30	25.75	55.68		
प्रिसिपल फोकर्स मर्टीकेप फंड	557.66	101.26	1.59	25.52	54.45	16.80	15.21
एसबीआई फोकर्स इविवटी फंड रेगुलर प्लान	15373.49	216.02	2.75	26.29	53.50	16.54	16.05
एचडीएफसी फोकर्स 30 फंड	687.93	101.07	3.95	26.75	53.24	9.26	9.59
युनियन फोकर्स फंड	198.95	16.56	3.24	23.49	53.19		
कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड*							
निपॉन इंडिया कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड	2662.85	46.42	9.69	5.90	6.49	7.77	
फ्रैकलिन इंडिया कॉर्पोरेट डेल्ट फंड प्लान ए	857.29	78.53	7.58	4.67	6.12	8.18	
आदित्य बिडला सन लाइफ कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड रेगुलर	24167.73	87.78	8.01	5.21	5.67	9.22	
पीजीआईएम इंडिया प्रीमियर बॉन्ड फंड	81.38	34.46	7.43	5.30	5.37	7.75	
ऐविस कॉर्पोरेट डेल्ट फंड	4876.32	13.41	6.36	4.52	5.27	7.78	
सुंदरम कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड	1131.09	31.91	9.90	5.33	5.22	9.42	
एचडीएफसी कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड	26697.86	25.45	7.65	4.27	5.14	9.21	
कोटक कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड	9848.74	2954.83	6.90	4.42	5.06	8.19	
आईडीएफसी कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड रेगुलर प्लान	20751.02	15.35	9.98	4.87	5.04	8.45	
आईसीआईसीआई प्रू कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड	20276.04	23.06	4.27	4.19	4.92	8.51	

* महीने के अंत में एयूरम

निवेशक हर गिरावट पर करें खरीदारी

एसआईपी और एसटीपी को दें प्राथमिकता

म्यूचुअल फंड निवेश पर आईसीआईसीआई सिवयोरिटीज की मासिक समीक्षा रिपोर्ट

मार्च और अप्रैल के दौरान अपने शिखरों से आयी कुछ मुनाफावसूली के बाद भारतीय शेयर बाजार फिर से वापसी कर रहे हैं और अपने उच्चतम स्तरों के नजदीक हैं। बाजार में निचले स्तरों से खरीदारी दिख रही है, बजह है यह उम्मीद कि कोरोना संक्रमण के मामले घट रहे हैं और अर्थव्यवस्था भी अखिलकार खुलेगी ही। ऐसे में काफी समय से दबी हुई मँगों के उभरने से देश में आर्थिक गतिविधियाँ तेजी के साथ बढ़ेंगी।

निवेश के लिहाज से विदेशी निवेशकों के लिए भारत एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विदेशी निवेशकों का भारत में पूँजी प्रवाह सर्वकालिक उच्चतम स्तरों पर है, जो बाजार की धारणा बेहतर होने का संकेत है। हमारा मानना है कि भविष्य में भी ऐसी स्थिति बरकरार रहने की उम्मीद है।

भारतीय शेयर बाजार में ऐसे निवेशक लाभ में दिख रहे हैं, जिन्होंने दिग्गज सूचकांकों और छोटे-मँझोले सूचकांकों में निरंतरता के साथ निवेश किया था। पिछले दिनों बाजार में जो उतार-चढ़ाव दिखा, वह एक बार फिर दीर्घ अवधि के निवेशकों के लिए मौका साबित हुआ, क्योंकि ये निवेशक बाजार के निचले स्तरों पर निवेश करने में सफल रहे।

इकिवटी बाजार की संभावनाएँ

जब देश में कोरोना के मामले काफी अधिक थे, तब भारतीय बाजार ने निचले स्तरों से वापसी कर ली, यह मानते हुए कि ऐसी खराब स्थितियाँ पहले से ही बाजार के भाव में शामिल हो चुकी हैं।

मौजूदा स्थितियों को देखें तो निवेशकों के लिए मिडकैप और स्मॉलकैप फंडों में निवेश करना बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। दरअसल वापसी के इस माहौल में लार्जकैप के मुकाबले मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में आय वृद्धि (अर्निंग्स ग्रोथ) अधिक रहने की उम्मीद है।

फिलहाल निवेशकों को इस बात को अधिक महत्व नहीं देना चाहिए कि बाजार सर्वकालिक उच्चतम स्तरों पर है। उनका ध्यान लंबी अवधि में बढ़ोतरी की संभावनाओं पर बने रहना चाहिए। भविष्य के लिए निवेश रणनीति की बात करें तो निवेशकों को हर गिरावट पर खरीदारी करनी



चाहिए। इसके अलावा उन्हें सिस्टेमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) और सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान (एसटीपी) को अहमियत देनी चाहिए।

डेट बाजार की संभावनाएँ

भारतीय ऋण बाजार (डेट बार्केट) पिछले कुछ महीनों से दबाव में है क्योंकि बढ़ती महँगाई दर और वैश्विक स्तर पर बढ़ती कमोडिटी कीमतों की वजह से विभिन्न बाजार श्रेणियों में यील्ड बढ़ रही है। वैश्विक स्तर पर आर्थिक गतिविधियों के आरंभ होने के बाद आर्थिक बहाली दरअसल कीमतों में बढ़ोतरी की अहम वजह है। कच्चे तेल की कीमतें पिछले साल के निचले स्तरों से लगभग दोगुनी हो गयी हैं।

भारत में भी थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूआई) आधारित महँगाई दर तेजी से बढ़ी है। साथ ही इसके और बढ़ने की भी संभावना है। कोर सीपीआई महँगाई दर 6% के आस-पास ही है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) पिछले कुछ महीनों से आर्थिक वृद्धि के मोर्चे पर सहारा देने के लिए कमर कसे हुए है। इसके लिए यह पर्याप्त नकदी की उपलब्धता सुनिश्चित कर रहा है, जिससे बॉन्ड बाजार को भी मदद मिल रही है।

आरबीआई ने नकदी के मोर्चे पर अपनी अनुकूल या एकोमोडेटिव नीति बरकरार रखी है। सरकारी प्रतिभूतियों की खरीदारी के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए इसने जाहिर कर दिया कि यह लंबी अवधि के जी-सेक को ऊपर जाने से रोकेगा। चूंकि आरबीआई का ध्यान वृद्धि (ग्रोथ) पर है, ऐसे में जहाँ तक नीतिगत परिवर्तनों का

प्रश्न है, तात्कालिक भविष्य में महँगाई इसके लिए चिंता का विषय नहीं लग रही है।

आपूर्ति का दबाव बना हुआ है, ऐसे में बॉन्ड बाजार इंतजार करो और देखो की मुद्रा में है। एए रेटिंग वाले कॉर्पोरेट बॉन्डों की यील्ड में भारी गिरावट आयी है और ये काफी निचले स्तरों पर दिख रहे हैं। कॉर्पोरेट बॉन्ड फंडों का ग्रॉस वाइटीएम अभी 5.5% के आस-पास है, इस कारण ये कम आकर्षक दिख रहे हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले मध्यम अवधि के फंड इस समय बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न प्रदान करते दिख रहे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग का प्रदर्शन

जून 2021 में म्यूचुअल फंडों की कुल प्रबंधन अधीन संपदा (एयूएम) 1.9% बढ़ कर 33.7 लाख करोड़ रुपये हो गयी। मई 2021 के अंत में यह 33.06 लाख करोड़ रुपये रही थी। मुख्य रूप से यह इकिवटी फंडों में मार्क टू मार्केट वृद्धि के कारण हुआ है। इकिवटी और हाइब्रिड फंडों में पूँजी प्रवाह (इनफ्लो) भी इस बढ़ोतरी की वजह है। ओपेन एंडेड इकिवटी फंडों की एयूएम जून में 11.1 लाख करोड़ रुपये रही, जो मई 2021 में 10.7 लाख करोड़ रुपये थी। जून महीने में इकिवटी फंडों में 6,000 करोड़ रुपये का पूँजी प्रवाह देखा गया। मई महीने में इनमें 7,000 करोड़ रुपये का पूँजी प्रवाह देखा गया था (एनएफओ के आँकड़े शामिल न करते हुए)। एसआईपी के जरिये जून 2021 में 9,155 करोड़ रुपये का पूँजी प्रवाह हुआ, जो मासिक आधार पर अब तक का सर्वाधिक ऊँचा स्तर है। मई में यह आँकड़ा 8,819 करोड़ रुपये रहा था।

लगभग सभी डेट फंड श्रेणियों में जून महीने में निवेश आता दिखा। फ्लोटिंग रेट फंड श्रेणी में सर्वाधिक 6,300 करोड़ रुपये का पूँजी प्रवाह दर्ज हुआ। जून में ओवरनाइट फंडों और लिक्विड फंडों में भी अधिक मात्रा में पूँजी प्रवाह हुआ, क्योंकि निवेशकों ने हाई डिझरेशन फंडों में पैसे लगा कर ब्याज दरों का जोखिम न लेना बेहतर समझा। बैलेंस्ड एडवार्टेज फंड श्रेणी में 2,057 करोड़ रुपये का पूँजी प्रवाह दर्ज किया गया। जून लगातार छठा ऐसा महीना रहा, जब इस श्रेणी में पूँजी प्रवाह देखा गया। ■

सोने-चाँदी में नए रुझान के साथ सीमित दायरा

जुलाई महीने में सोने में अधिकतर नरमी के हुआ, लेकिन माह के अंत में डॉलर के कमज़ोर होने से सभी एक्सचेंजों में कीमतें अंततः लगभग 2.5% की बढ़त के साथ बंद हुईं। फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति के फैसले की प्रतिक्रिया में अमेरिकी डॉलर सूचकांक एक महीने के निचले स्तर पर आ गया। फिर भी चाँदी की कीमतें मासिक आधार पर बढ़त दर्ज करने में सफल नहीं हो सकीं। जैसी कि संभावना थी, फेडरल रिजर्व ने ब्याज और बॉन्ड खरीद को अपरिवर्तित रखा। अमेरिकी केंद्रीय बैंक ने कहा है कि वे संपत्ति खरीद घटाने की शुरुआत की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन इसने संपत्ति खरीद को कम करने के लिए स्पष्ट समय रेखा नहीं दी। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष ने कहा कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था के बारे में उम्मीद के बावजूद ब्याज दरों में बढ़ोत्तरी अभी भी दूर है।

भावी परिदृश्य

सोने की कीमतें तेजी के रुख के साथ एक दायरे में बनी रह सकती हैं। पिछले महीने फेडरल रिजर्व के फैसले से पता चलता है कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक अभी भी प्रतीक्षा और निगरानी करने की स्थिति में है। कोरोना वायरस का डेल्टा संस्करण फैलने के कारण बढ़ती अनिश्चितता के बीच यह उचित है। कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के महेनजर कई देशों ने प्रतिबंधों को कड़ा कर दिया है, जबकि अमेरिका ने भी यात्राओं पर प्रतिबंध लगा दिया है और टीका नहीं ले चुके लोगों के लिए मास्क पहनने की सिफारिश की है। चीनी आर्थिक दृष्टिकोण और वायरस की स्थिति से संबंधित घटनाक्रम भी बाजारों की नजर में होंगा।

गहनों की माँग में सुधार, अमेरिकी डॉलर में संभावित कमज़ोरी और छोटी अवधि में विकास दर में कोई गिरावट आने से सोने की कीमतों को मदद मिल सकती है। अमेरिकी मुद्रास्फीति में आयी उछल से भी सोने की माँग को मदद मिल सकती है। सोने की तरह चाँदी भी एक सुरक्षित निवेश वाली संपत्ति है, लेकिन इसका व्यापक रूप से उपयोग उद्योगों में भी किया जाता है। सौर पैनलों, ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) और चार्जिंग पॉइंट में इसके उपयोग के कारण विद्युतीकरण प्रक्रिया से चाँदी लाभान्वित हो रही है।

अगस्त में सर्वांगी बाजार में नरमी के रुझान के साथ सीमित दायरे में कारोबार होने की संभावना है, जहाँ हम निचले स्तरों से कुछ बिकवाली सौदे करने (सॉर्ट कवरिंग) से भाव संभलते हुए भी देख सकते हैं। चाँदी की कीमतें बहुत अस्थिर रहने की संभावना है और उच्च स्तरों से बिकवाली आ सकती है।

मुद्रास्फीति से सोने को लाभ : वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति या महँगाई दर में बढ़ोत्तरी हुई है। इस साल अमेरिका में भारी प्रोत्साहन खर्च के कारण मुद्रास्फीति की आशका बढ़ गयी है, जहाँ जून में उपभोक्ता कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई है। उच्च मुद्रास्फीति और कम वास्तविक ब्याज दरों से सोना लाभान्वित हो सकता

एसएनसी की मासिक रिपोर्ट के अनुसार अगस्त 2021 में सोने की कीमतें 46,500-49,500 रुपये और चाँदी की कीमतें 65,800-70,900 रुपये के दायरे में रह सकती हैं। इस ब्रॉकिंग फर्न का मानना है कि कॉमेक्स में सोने की कीमतें 1,760-1,835 डॉलर और चाँदी की कीमतें 24.00-27.00 डॉलर के दायरे में रहेंगी। प्रस्तुत हैं इस रिपोर्ट के मुख्य अंश।



है। बल्ड गोल्ड

काउंसिल के एक अध्ययन के अनुसार मुद्रास्फीति में प्रत्येक 1% की वृद्धि के बाद सोने की माँग में 2.5% की वृद्धि होती है और इसलिए इसकी कीमत बढ़ जाती है।

केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीदारी : बल्ड गोल्ड काउंसिल की त्रैमासिक रिपोर्ट के अनुसार पहली छमाही में केंद्रीय बैंकों के वैश्विक

भंडार में 333.2 टन की बढ़ोत्तरी हुई है, जो समान अवधि में पाँच साल के औसत से 39% अधिक है। इस छमाही में थाईलैंड, हंगरी और ब्राजील द्वारा अधिक खरीद की गयी है।

विश्व स्तर पर सोने की माँग : विश्व स्तर पर अप्रैल-जून तिमाही में सोने की माँग लगभग 955 टन की रही, जो 2020 की समान तिमाही के लगभग बराबर है क्योंकि उपभोक्ताओं पर कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर का प्रभाव बरकरार रहा। वर्ष 2021 की दूसरी तिमाही के लिए बल्ड गोल्ड काउंसिल की 'गोल्ड डिमांड ट्रैडेस' रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर सोने की माँग पहली छमाही में वर्ष-दर-वर्ष 11% कम होकर 1,833.1 टन रह गयी। वर्ष 2020 की कोविड प्रभावित कमज़ोरी के बाद से अप्रैल-जून तिमाही में आभूषणों के लिए सोने की माँग (390.7 टन) में फिर से बढ़ोत्तरी जारी रही, लेकिन आंशिक रूप से भारतीय माँग में कम वृद्धि के कारण यह महामारी से पहले के सामान्य स्तर से काफी कम रही। पहली छमाही में कुल माँग 873.7 टन की रही है, जो 2015-2019 के औसत से 17% कम है। लेकिन निवेश माँग में लगातार चौथी तिमाही में वर्ष-दर-वर्ष बढ़त दर्ज की गयी, क्योंकि निवेशकों ने सोने की छड़ों (बार), सिक्के और गोल्ड ईटीएफ की खरीदारी की।

भारत में सोने की माँग

बल्ड गोल्ड काउंसिल की रिपोर्ट के अनुसार इस साल अप्रैल-जून तिमाही के दौरान भारत में सोने की माँग 19.2% बढ़ कर 76.1 टन हो गयी, जिसका मुख्य कारण यह है कि पिछले वर्ष काफी कम आयात हुआ था। कैलेंडर वर्ष 2020 की दूसरी तिमाही में सोने की कुल माँग 63.8 टन रही थी। मूल्य के संदर्भ में भारत में सोने की माँग अप्रैल-जून तिमाही के दौरान 23% बढ़ कर 32,810 करोड़ रुपये की रही, जबकि 2020 की इसी अवधि में यह 26,600 करोड़ रुपये की थी। आगामी दिनों में सोने की माँग में बढ़े पैमाने पर सुधार होने की आशा है, पर यह कोविड की तीसरी लहर के खतरे और आर्थिक सुधार की गति के प्रभाव पर निर्भर करता है। ■

संदीप ग्रोवर

लगातार दूसरे महीने जून 2021 में खुदरा महँगाई दर (सीपीआई) भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की 6% की ऊपरी सहन-सीमा से भी अधिक रही है। सरकार ने आरबीआई को मार्च 2026 में समाप्त होने वाली पंचवर्षीय योजना तक महँगाई दर को 4% पर सुनिश्चित करने को कहा है, जिसमें ऊपर और नीचे दोनों ओर 2% का मार्जिन है। बढ़ती महँगाई का न केवल आम आदमी और छोटे कारोबारियों पर असर पड़ा है, बल्कि कॉर्पोरेट जगत भी अछूता नहीं रहा है।

2021 में खुदरा महँगाई दर (सीपीआई)	
जून	6.26%
मई	6.30%
अप्रैल	4.23%
मार्च	5.52%
फरवरी	5.03%
जनवरी	4.06%

आम आदमी पर महँगाई का असर

पिछले कुछ महीनों में ग्राहकों को खाद्य तेलों के लिए करीब 50% से ज्यादा भुगतान करना पड़ा है। कमोडिटी कीमतें अब तक की ऊँचाई पर होने के कारण लोगों के किराना बजट में एक साल में 20% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। एक तरफ कोविड महामारी और दूसरी तरफ महँगाई से लोगों की खपत में कमी आयी है, जिसमें तेल, दाल, साबुन, चाय, वाशिंग पाउडर जैसी रोजमर्रा की चीजें भी शामिल हैं। पाँच लीटर का खाद्य तेल का डिब्बा खरीदने वाले ग्राहक अब केवल एक लीटर का डिब्बा खरीदने लगे हैं। लोग साबुन, वॉशिंग पाउडर वगैरह के छोटे पैकेट या सस्ते ब्रांडों को चुन रहे हैं।

इससे किराने के छोटे कारोबारियों पर गहरा असर हुआ है। पिछले तीन महीने में किराना दुकानों की बिक्री में 50-70% तक की कमी हुई है। इसमें चाहे कमोडिटी कीमतें और महँगाई को

बढ़ती महँगाई से आम आदमी ही नहीं, कॉर्पोरेट जगत भी परेशान

दोष दिया जाये या कोविड के चलते लगे लॉकडाउन को, मगर छोटे कारोबारियों पर असर तो साफ तौर पर हुआ है।

कॉर्पोरेट जगत पर महँगाई का असर

कंपनियों के लिए कमोडिटी कीमतों में बढ़ोतरी के चलते अपनी लागत बढ़ने की स्थिति का सामना करने का सबसे आसान तरीका है अपने उत्पादों की कीमतें बढ़ा देना। लेकिन एफएमसीजी (जल्द खपत वाली उपभोक्ता वस्तु) क्षेत्र की कंपनियाँ पहले से ही माँग की कमी से जूझ रही हैं।

ऐसे में वे किसी भी प्रकार का खतरा मोल नहीं ले सकतीं। इसलिए अपने उत्पादों की कीमतें बढ़ाने के बदले ये कंपनियाँ अपने लाभ मार्जिन में कमी, पैकेट के वजन में कमी, विज्ञापन खर्च और वितरण (डिस्ट्रीब्यूशन) खर्च घटाने जैसे विकल्पों पर अधिक ध्यान दे रही हैं।

महँगाई के खिलाफ कॉर्पोरेट जगत की रणनीति देखें तो ज्यादातर कंपनियाँ खर्चों पर काबू पाने की कोशिश में जुटी हैं। उन्होंने खाद्य तेलों को छोड़ बाकी सामानों पर छूट (डिस्काउंट) घटा कर 8-20% कर दिया है।

कीमतों में बढ़ोतरी के बदले अपने उत्पादों के पैकेट के वजन में कमी का विकल्प अपनाया जा रहा है। कीमतों में बढ़ोतरी अगर की जा रही है तो वह भी केवल प्रीमियम यानी ऊँची मूल्य-श्रेणी वाले उत्पादों में ही। कुछ उत्पादों पर वजन में कमी के बदले कई उत्पादों का गुच्छा (बंडलिंग) बनाने की रणनीति पर ध्यान दिया जा रहा है।

महँगाई में योगदान किन चीजों का

बीते एक साल में सभी छह प्रकार के मुख्य खाद्य तेलों - सोयाबीन, ताड़ (पाम),

सूरजमुखी, मूँगफली, सरसों, और बनस्पति की कीमतों में 13-52% तक की बढ़ोतरी हुई है। इसके चलते अब खाद्य तेलों की कीमतें एक दशक की ऊँचाई पर हैं। इसके अलावा, खाने पीने की चीजें, जैसे आटा, चाय, चीनी, चावल, दालें वगैरह 5-20% तक महँगी हो गयी हैं। अमूल दूध की कीमतों में हाल ही में दो रुपये प्रति लीटर की वृद्धि हुई है। साबुन और वॉशिंग पाउडर की कीमतें 7-20% तक बढ़ चुकी हैं। रसोई गैस या एलपीजी सिलिंडर की कीमतें एक साल में 20% बढ़ी हैं और बीते सात साल में दोगुनी हो चुकी हैं।

एलपीजी की कीमतों का सीधा संबंध अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों और डॉलर की तुलना में रुपये के मूल्य से है। बीते एक साल में कच्चे तेल की कीमतों में 76% और अप्रैल 2020 से करीब चार गुना की बढ़ोतरी हो चुकी है।

कब छुटकारा मिलेगा महँगाई से

अर्थव्यवस्था के जानकारों और बड़ी एफएमसीजी कंपनियों के प्रबंधन की मानें तो बढ़ी हुई कीमतों का दौर अभी 4-5 महीने और जारी रह सकता है। मतलब यह कि महँगाई में कोई भी राहत वित वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही से पहले मिलने की आशा कम है।

हालांकि कंपनियाँ हर संभव कोशिश में लगी हैं कि ग्राहकों पर बोझ और कंपनियों की माँग या बिक्री की मात्रा (वॉल्यूम) के साथ-साथ उनके लाभ मार्जिन पर भी कोई असर न आये। लेकिन अगर यह दौर 4-5 महीने और चला तो आम आदमी या ग्राहकों को एक बार फिर एफएमसीजी उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी के लिए तैयार रहना चाहिए। ■

1 साल में तेल की कीमतों में वृद्धि	
सरसों तेल	40%
सोयाबीन तेल	40%
सूरजमुखी तेल	50%+
ताड़ का तेल(पाम औयल)	40%

1 साल में खाद्य कीमतों में तेजी	
आटा	10%
चाय	15-20%
चीनी, चावल	5-7%
दालें	10-20%
दूध (अमूल)	2 रुपये/लीटर

1 साल में कीमतों में बढ़ोतरी	
साबुन	15-20%
वॉशिंग पाउडर	7%
रसोई गैस	20%
कच्चा तेल	78%

कच्चे तेल और रसोई गैस की कीमतें		
महीना	कच्चा तेल (डॉलर/बैरल)	रसोई गैस (रुपये/सिलिंडर)
अप्रैल 2020	18.84	744
जुलाई 2020	40.27	679.50
जून 2021	73.47	809
जुलाई 2021	70.81	832.50

जुलाई में जीएसटी संग्रह फिर 1 लाख करोड़ रुपये के ऊपर

जून महीने में जीएसटी संग्रह घट कर 1 लाख करोड़ रुपये के नीचे चले जाने के बाद जुलाई महीने में इसमें फिर से सुधार हुआ है और यह 1 लाख करोड़ रुपये के ऊपर लौट आया है। जुलाई 2021 में जीएसटी का मासिक संग्रह 1,16,393 करोड़ रुपये रहा, जो जून 2021 में केवल 92,849 करोड़ रुपये के निचले स्तर पर चला गया था।

यह इस वित्त वर्ष में दूसरा सर्वाधिक जीएसटी संग्रह है। यदि जुलाई 2020 से तुलना करें तो जुलाई 2021 के जीएसटी संग्रह में 33% की वृद्धि दर्ज हुई है। अप्रैल 2021 में 141,384 करोड़ रुपये और मई 2021 में 102,709 करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह हुआ था। जून 2021 में दरअसल बीते नौ महीनों का यह पहला अवसर था, जब जीएसटी संग्रह एक लाख करोड़ रुपये के नीचे रहा था।

वित्त मंत्रालय ने आशा जतायी है कि आने वाले महीनों में जीएसटी संग्रह मजबूत बना रहेगा। वित्त मंत्रालय की ओर से जारी इन ताजा आँकड़ों से यह आशा बँधी है कि देश की अर्थव्यवस्था



कोरोना महामारी की दूसरी लहर के असर से बाहर निकल रही है। इन आँकड़ों से आर्थिक गतिविधियाँ वापस सामान्य होने का संकेत मिलता है, जिससे अर्थशास्त्रियों को आने वाले महीनों के लिए अच्छी आशाएँ बनने लगी हैं।

एक जुलाई से पाँच जुलाई 2021 के बीच दाखिल 4,937 करोड़ रुपये के रिटर्न के लिए जीएसटी संग्रह को भी जून 2021 के प्रेस नोट

में जीएसटी संग्रह में शामिल किया गया था, क्योंकि करदाताओं को छूट/कमी के रूप में विभिन्न राहत प्रदान किये गये थे। कोविड वैश्विक महामारी की दूसरी लहर के महेनजर पाँच करोड़ रुपये तक के कुल कारोबार वाले करदाताओं को जून 2021 महीने के लिए 15 दिनों की देरी से रिटर्न दाखिल करने के मामले में ब्याज पर छूट दी गयी थी।

जुलाई 2021 के कुल जीएसटी संग्रह में सीजीएसटी 22,197 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 28,541 करोड़ रुपये और आईजीएसटी 57,864 करोड़ रुपये का रहा है। आईजीएसटी के इस आँकड़े में आयात शुल्क के 27,900 करोड़ रुपये और सेस के 7,790 करोड़ रुपये की राशि शामिल है।

जुलाई 2021 के जीएसटी संग्रह के आँकड़ों का विश्लेषण करें तो दिखता है कि देश के प्रमुख उत्पादक राज्यों ने अच्छी वृद्धि दिखायी है। साथ ही घेरेलू मोर्चे और आयात दोनों में सुधार हुआ है। यह देश में व्यापक रूप से आर्थिक गतिविधियों की गति तेज होने का ही संकेत है।

जून में आठ प्रमुख क्षेत्रों की वृद्धि दर 8.9%

बुनियादी ढाँचा वाले आठ प्रमुख क्षेत्रों (कोर सेक्टर) ने जून 2021 में पिछले वर्ष जून के निचले आधार (लो बेस) पर अच्छी वृद्धि दिखायी है। जून 2021 में इन आठ क्षेत्रों ने 8.9% वृद्धि पायी है, जबकि जून 2020 में 12.4% की गिरावट आयी थी। हालाँकि यह दर मई 2021 में 16.3%, अप्रैल 2021 में 60.9%, मार्च 2021 में 12.6%, फरवरी 2021 में -3.3%, जनवरी 2021 में 1.3%, दिसंबर 2020 में 0.4% और नवंबर 2020 में -1.1% थी।

इन आँकड़ों पर कोरोना महामारी के चलते अप्रैल-जून 2020 के दौरान सख्त तालाबंदी (लॉकडाउन) और इस वर्ष 2021 में तुलनात्मक रूप से हल्की तालाबंदी का असर है। अप्रैल 2020 में देश भर में लगभग संपूर्ण तालाबंदी थी, इसलिए अप्रैल 2021 में इन आठ क्षेत्रों ने उस निचले आधार से 60.9% की तेज वृद्धि दिखायी, जो अगले दो महीनों में क्रमशः हल्की होती गयी। अप्रैल-जून 2021 की तिमाही में इन आठ क्षेत्रों की वृद्धि दर 25.3% रही है, जबकि अप्रैल-जून 2020 की तिमाही में 23.8% की गिरावट आयी थी।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में इन आठ क्षेत्रों का योगदान 40.27% का है। ये आठ क्षेत्र हैं कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, खाद, इस्पात (स्टील), सीमेंट और बिजली। जून 2021 में वृद्धि में मुख्य योगदान प्राकृतिक गैस, इस्पात, कोयला और बिजली क्षेत्रों का रहा है। जुलाई 2021 में इन आठ क्षेत्रों की वृद्धि दर के लिए अर्थशास्त्रियों का अनुमान 11-14% का है।

जुलाई 2021 में उत्पाद निर्यात 48% बढ़ा

जुलाई 2021 में भारत के उत्पादों का निर्यात कुल 35.17 अरब अमेरिकी डॉलर का रहा, जो मासिक आधार पर अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह जुलाई 2020 के 23.78 अरब अमेरिकी डॉलर के निर्यात से 47.91% अधिक और जुलाई 2019 के 26.23 अरब डॉलर के निर्यात से 34.06% अधिक है। दूसरी ओर जुलाई 2021 में वस्तुओं का आयात 46.4 अरब अमेरिकी डॉलर का रहा। इसमें जुलाई 2020 से 59.38% और जुलाई 2019 से 14.75% की वृद्धि दर्ज की गयी। जुलाई 2021 में वस्तु व्यापार का घाटा 11.23 अरब डॉलर का रहा, जो जुलाई 2020 के 5.33 अरब डॉलर से 110.56% अधिक है। जुलाई 2021 में गैर-पेट्रोलियम उत्पादों और गैर-रत्न एवं आभूषणों के निर्यात का मूल्य 26.11 अरब डॉलर रहा, जो जुलाई 2020 के 20.5 अरब डॉलर की तुलना में 27.36% और जुलाई 2019 के 19.75 अरब डॉलर की तुलना में 32.25% की वृद्धि दिखाता है।

जुलाई 2021 में गैर-तेल उत्पादों, गैर-रत्न एवं आभूषणों (सोना, चांदी और मूल्यवान धातुओं) के आयात का मूल्य 26.66 अरब डॉलर रहा, जो जुलाई 2020 में 19.73 अरब डॉलर से 35.11% अधिक और जुलाई 2019 के 26.7 अरब डॉलर से 0.17% कम है। जुलाई 2020 की तुलना में जुलाई 2021 के दौरान सकारात्मक वृद्धि दिखाने वाले प्रमुख पाँच निर्यात मद हैं पेट्रोलियम उत्पाद (215.68%), रत्न और आभूषण (130.44%), अन्य खाद्यान्न (70.25%), मानव निर्मित धागा/कपड़ा/परिधान आदि (58.67%) और सूती धागा/कपड़ा/परिधान, हस्तशिल्प उत्पाद आदि (48.02%)। अप्रैल-जूलाई 2021 में भारत के उत्पादों का निर्यात 130.53 अरब डॉलर का रहा, जो अप्रैल-जूलाई 2020 के 75.22 अरब डॉलर से 73.51% और अप्रैल-जूलाई 2019 के 107.15 अरब डॉलर से 21.82% अधिक है। ■

म्यूचुअल फंडों से मिनटों में पैसा निकालने की सुविधा : जान लें खास बातें



हाल में यह समाचार सुर्खियों में रहा कि बाजार नियामक सेबी ने निवेशकों को

म्यूचुअल फंडों से मिनटों के अंदर पैसा निकालने की सुविधा दे दी है। सेबी ने 30 जुलाई 2021 को अपने एक परिपत्र के जरिये ऐसी अनुमति दी है, पर इस सुविधा के बारे कुछ खास बातें आपको समझ लेनी चाहिए। पहली बात यह है कि इंस्टैट ऐक्सेस नाम की यह सुविधा वर्ष 2017 से ही लिक्विड फंडों में उपलब्ध थी। सेबी ने अपने ताजा परिपत्र में इस सुविधा को ओवरनाइट फंडों में भी उपलब्ध कराने की अनुमति दे दी है। मतलब यह है कि इंस्टैट ऐक्सेस की यह सुविधा केवल लिक्विड फंड और ओवरनाइट फंड के लिए उपलब्ध है।

शेयर बाजार निवेशकों की नयी लहर में उत्तर भारत आगे

परंपरागत रूप से शेयर बाजार में महाराष्ट्र और गुजरात जैसे पश्चिमी राज्यों का बोलबाला रहा है। पर नेशनल स्टॉक ऐक्सेंचेंज (एनएसई) की ओर से जारी ताजा आँकड़ों से साफ होता है कि शेयर बाजार में आ रहे नये निवेशकों में उत्तर भारत की हिस्सेदारी सबसे अधिक हो गयी है। 2021-22 के पहले चार महीनों में एनएसई में पंजीकृत होने वाले नये निवेशकों की संख्या 50 लाख पार कर गयी, अप्रैल से जुलाई 2021 (25 जुलाई तक) कुल 51.3 लाख पंजीकरण हुए।

अप्रैल-जुलाई 2019 में 8.5 लाख और अप्रैल-जुलाई 2020 में एनएसई में 20 लाख नये निवेशकों का पंजीकरण हुआ था। इस साल अप्रैल-जुलाई के महीनों में 36% नये निवेशक उत्तर भारतीय राज्यों से आये हैं, जबकि पश्चिमी राज्यों की हिस्सेदारी 30%, दक्षिण भारत की हिस्सेदारी 22% और पूर्वी भारतीय राज्यों की हिस्सेदारी 12% रही। ध्यान देने लायक है कि 53% नये निवेशक शीर्ष पाँच राज्यों के बाहर से हैं। अब एनएसई के कुल पंजीकृत निवेशकों की संख्या 4.5 करोड़ से ऊपर पहुंच गयी है।

यह निर्णय तुरंत लागू कर दिया गया है। इंस्टैट ऐक्सेस सुविधा के तहत निवेशक जिस दिन म्यूचुअल फंड से अपनी यूनिटों के विमोचन या निकासी (रिडेंशन) का अनुरोध देता है, उसी दिन उस निकासी के पैसे उसके बैंक खाते में आ जाते हैं। सामान्य रूप से म्यूचुअल फंडों से निकासी करने पर उसके पैसे निवेशक के बैंक खाते में एक-दो दिनों में आते हैं। ध्यान रखने वाली बात यह भी है कि इंस्टैट ऐक्सेस के तहत निवेशक अपनी यूनिटों के मूल्य के 90% या 50,000 रुपये की सीमा तक ही निकासी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि यूनिटों का मूल्य 50,000 रुपये हो तो उसके 90% यानी 45,000 रुपये तक निकासी संभव होगी। वहीं

यदि यूनिटों का मूल्य 100,000 रुपये हो, तो 50,000 रुपये की सीमा तक ही निकासी की जा सकेगी। लिक्विड फंड और ओवरनाइट फंड - ये दोनों ही डेब्ट (ऋण) फंडों की श्रेणियाँ हैं। ओवरनाइट फंड ऐसे डेब्ट फंड हैं, जो केवल एक दिन की परिपक्वता वाले ऋण प्रपत्रों में निवेश करते हैं। इस तरह के ऋण प्रपत्रों में सीबीएलओ (कोलैटरलाइज्ड बॉरोइंग एंड लेडिंग ऑफिलगेशंस), ओवरनाइट रिवर्स रेपो आदि का नाम लिया जा सकता है। वहीं लिक्विड फंड ऐसे डेब्ट फंड हैं, जो 91 दिनों तक की परिपक्वता अवधि वाले ऋण प्रपत्रों में निवेश करते हैं। इनमें वाणिज्यिक प्रपत्र, सरकारी प्रतिभूतियाँ, ट्रेजरी बिल आदि शामिल हैं।

मुद्रा योजना से मिला 29.55 करोड़ उद्यमियों को ऋण

केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री डॉ. भागवत किसानराव कराड ने 2 अगस्त 2021 को लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि मुद्रा पोर्टल पर 31 मार्च 2021 तक डाले गये आँकड़ों के मुताबिक अप्रैल 2015 में इस योजना के शुरू होने के बाद से अब तक देश भर में पीएमएमवाई के तहत 29.55 करोड़ से ज्यादा उद्यमियों को ऋण स्वीकृत किये गये हैं। इन स्वीकृत ऋणों की कुल राशि 15.52 लाख करोड़ रुपये की है। इनमें से 5.20 लाख करोड़ रुपये की कुल राशि 6.80 करोड़ से ज्यादा ऋण नये उद्यमियों/खातों को दिये गये हैं।

एक अन्य प्रमुख योजना स्टैंडअप इंडिया (एसयूपीआई) का ब्यौरा देते हुए मंत्री ने बताया कि यह विनिर्माण व्यापार या सेवा क्षेत्र में नये उद्यम की स्थापना और कृषि से संबद्ध गतिविधियों के लिए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की प्रति बैंक शाखा में कम-से-कम एक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के

कर्जदार और कम-से-कम एक महिला कर्जदार को 10 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये के बीच बैंक ऋण की सुविधा प्रदान करती है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई) और स्टैंडअप इंडिया योजना (एसयूपीआई) उद्यमियों को ऋण देने के लिए वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस) द्वारा चलायी जा रही प्रमुख योजनाएँ हैं। मुद्रा योजना के तहत सदस्य ऋणदाता संस्थानों (एमएलआई) द्वारा नये उद्यमों समेत सूक्ष्म अथवा लघु व्यवसाय से जुड़ी इकाइयों को उद्यमशील गतिविधियों के लिए 10 लाख रुपये तक का संस्थागत ऋण प्रदान किया जाता है। यह ऋण उन्हें विनिर्माण, व्यापार, सेवा क्षेत्र और कृषि से जुड़े कार्य जैसे क्षेत्रों में आय पैदा करने वाली गतिविधियाँ खड़ी करने में मदद करता है। सरकार ने मौजूदा वित्तीय वर्ष में एमएलआई के लिए इस योजना के तहत तीन लाख करोड़ रुपये के ऋण जारी का लक्ष्य निर्धारित किया है। ■

आज देश डिजिटल प्रशासन को एक नया आयाम दे रहा है। ई-रुपी वाउचर देश में डिजिटल लेन-देन को, डीबीटी को और प्रभावी बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाने वाला है। इससे लक्षित, पारदर्शी और रिसाव-मुक्त हस्तांतरण में सभी को बड़ी मदद मिलेगी। सरकार ही नहीं, अगर कोई सामान्य संस्था या संगठन किसी के इलाज में, किसी की पढाई में या दूसरे काम के लिए कोई मदद करना चाहता है, तो वह नकद के बजाय ई-रुपी दे पायेगा। इससे सुनिश्चित होगा कि उसके द्वारा दिया गया धन उसी काम में लगा है, जिसके लिए वह राशि दी गयी है। अभी शुरुआती चरण में यह योजना देश के स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े लाभों पर लागू की जा रही है।

मान लीजिए, कोई संगठन सेवा भाव से निजी अर्थ पतालों में जहाँ कुछ कीमत देकर टीका चल रहा है, उसमें 100 गरीबों को टीका लगवाने की उसकी इच्छा है, तो वह उन 100 गरीबों को ई-रुपी वाउचर दे सकता है। ई-रुपी वाउचर यह सुनिश्चित करेगा कि उसका इस्तेमाल टीका लगवाने में ही हो, किसी और काम में नहीं। समय के साथ इसमें और भी चीजें जुड़ती चली जायेंगी। जैसे कोई किसी के इलाज पर खर्च करना चाहता है, कोई टीका के मरीज को सही दवाओं और भोजन के लिए आर्थिक मदद देना चाहता है, या फिर बच्चों को, गर्भवती महिलाओं को भोजन और पोषण से जुड़ी दूसरी सुविधाएँ पहुँचाना चाहता है, तो ई-रुपी उनके लिए बहुत मददगार साबित होगा।

यानी ई-रुपी, एक तरह से व्यक्ति के साथ-साथ उद्देश्य केंद्रित भी है। जिस मकसद से कोई लाभ दिया जा रहा है, वह उसी के लिए प्रयोग होगा, इसे ई-रुपी सुनिश्चित करने वाला है। कोई अब अगर चाहेगा कि वह वृद्धाश्रम में 20 नये बिस्तर लगवाना चाहता है, तो ई-रुपी वाउचर उसकी मदद करेगा। कोई किसी क्षेत्र में 50 गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था करना चाहता है, तो ई-रुपी वाउचर उसकी मदद करेगा। अगर कोई गौशाला में चारे की व्यवस्था करना चाहता है, तो ई-रुपी वाउचर उसकी भी मदद करेगा।

इसे अब अगर राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में देखें तो, अगर सरकार द्वारा किताबों के लिए पैसा भेजा गया है, तो ई-रुपी यह सुनिश्चित करेगा कि किताबें ही खरीदी जायें। अगर यूनिफॉर्म के लिए पैसा भेजा है, तो उससे यूनिफॉर्म ही खरीदी जायें। अगर सब्सिडी वाली खाद के लिए मदद दी है, तो वह खाद खरीदने के ही काम आये। गर्भवती महिलाओं के लिए दिये गये पैसे से सिर्फ पोषक आहार ही खरीदा जा सके। यानी पैसा देने के बाद

ई-रुपी : पैसा खर्च हो वही, जिसके लिए भेजा गया

डिजिटल भुगतान के नये समाधान ई-रुपी के आरंभ के अवसर पर 2 अगस्त 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण के चुने हुए अंश।



हम उसका जो इस्तेमाल चाहते हैं, ई-रुपी वाउचर उसे सिद्ध करेगा।

आज हम यहाँ तक इसलिए पहुँचे हैं, क्योंकि देश ने जनधन खातों को खोलने, उन्हें मोबाइल और आधार से जोड़ने, और जैम (जनधन, आधार, मोबाइल) जैसी व्यवस्था के लिए वर्षों मेहनत की है। जब जैम को शुरू किया गया था, तब बहुत-से लोग इसके महत्व को नहीं समझ पा रहे थे। लेकिन इसकी अहमियत को हमने लॉकडाउन के समय देखा, जब दुनिया के बड़े-बड़े देश परेशान थे कि लॉकडाउन में कैसे अपने गरीबों की मदद करें। लेकिन भारत के पास एक पूरी व्यवस्था तैयार थी।

भारत में अब तक प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के जरिये करीब 17.5 लाख करोड़ रुपये सीधे लाभार्थियों के खातों में भेजे जा चुके हैं। आज केंद्र सरकार 300 से ज्यादा योजनाओं का लाभ डीबीटी के माध्यम से लोगों तक पहुँचा रही है। लगभग 90 करोड़ देशवासियों को इसके तहत किसी-ना-किसी रूप में लाभ हो रहा है। राशन हो, रसोई गैस हो, इलाज हो, छात्रवृत्ति हो, पेंशन हो, मजदूरी हो, घर बनाने के लिए मदद हो, ऐसे अनेक लाभ डीबीटी से मिल रहे हैं। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 1.35 लाख करोड़ रुपये सीधे किसानों के बैंक खातों में पहुँचाये गये हैं। इस बार तो किसानों से जो गेहूँ की सरकारी खरीद हुई है, उसके लगभग 85,000 करोड़ रुपये सीधा किसानों के बैंक खातों में ही डाले गये

हैं। इन सारे प्रयोगों का बहुत बड़ा लाभ यह हुआ है कि देश के 1.75 लाख करोड़ रुपये से अधिक गलत हाथों में जाने से बचे हैं।

चार साल पहले जब भीम ऐप शुरू किया गया था, तब मैंने कहा था कि वह दिन दूर नहीं, जब अधिकांश व्यापारिक लेन-देन नोट और सिक्कों के बजाय डिजिटल होंगे। तब मैंने यह भी कहा था कि इस बदलाव से सबसे अधिक गरीबों, वर्चितों, छोटे व्यापारियों, किसानों, आदिवासियों का सशक्तीकरण होगा। आज हम यह साक्षात् अनुभव कर रहे हैं। हर महीने यूपीआई लेन-देन के नये रिकॉर्ड बन रहे हैं। जुलाई महीने में 300 करोड़ से अधिक लेन-देन यूपीआई से हुए हैं, जिसमें छह लाख करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ है। आज चाय, जूस और फल-सब्जी का ठेला लगाने वाले भी इसका उपयोग कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि ई-रुपी वाउचर भी सफलता के नये अध्याय लिखेगा। इसमें हमारे बैंकों और दूसरे पेमेंट गेटवे की बहुत बड़ी भूमिका है। हमारे संकड़ों निजी अस्पतालों, कॉर्पोरेट, उद्योग जगत, एनजीओ और दूसरे संस्थानों ने भी इसको लेकर बहुत रुचि दिखायी है। मेरा राज्य सरकारों से भी आग्रह है कि अपनी योजनाओं का सटीक और संपूर्ण लाभ सुनिश्चित करने के लिए ई-रुपी का अधिक-से-अधिक उपयोग करें। मुझे विश्वास है कि हम सभी की ऐसी ही सार्थक साझेदारी एक ईमानदार और पारदर्शी व्यवस्था के निर्माण को और गति देंगे। ■

नया व्यवसाय थुक करने वाले ध्यान रखें ये 11 बातें

एक मित्र ने पूछा, नया व्यवसाय शुरू करने वालों को क्या ध्यान रखना चाहिए। जैसे तो

यह विषय अनंत है, इस पर क्या सलाह सही, क्या गलत, यह अनेक बातों पर निर्भर करता है। फिर भी मेरे विचार से नये उद्यमियों को कुछ बिंदु ध्यान रखने चाहिए।

1. अगर आप नौकरी कर रहे हैं, ठीक-ठाक वेतन पा रहे हैं, तो उसे छोड़ अपना काम करने की फिलहाल न सोचें। कोविड-19 के समय अनुकूल नहीं है। अगर आप स्थिर हैं तो इस समय कोई नया प्रयोग करने का समय नहीं है। जब तक कोविड की तीसरी लहर को लेकर स्पष्टता नहीं आती, तब तक अभी ज्यादा बदलाव नहीं करना चाहिए।

2. हमेस्था ध्यान रखें कि अगर आपके पास 10 लाख रुपये की पूँजी है तो 5-7 लाख रुपये के निवेश वाला ही काम करें। नये व्यापार में अक्सर समस्याएँ आ जाती हैं, जिसके लिए अतिरिक्त आर्थिक क्षमता होनी चाहिए। कोई अगर पाँच लाख रुपये का प्रोजेक्ट लगाता है तो लगते-लगते अनदेखे खर्चों के चलते कुछ बढ़ कर ही पैसा लग जाता है। अगर पाँच लाख का ही बजट है और लगाते-लगाते 6-7 लाख रुपये की जरूरत हो गयी तो व्यक्ति वित्तीय दबाव में आ जाता है।

3. यथासंभव नया व्यापार ब्याज पर ऋण के पैसे के भरोसे न करें। ऋण का इस्तेमाल व्यापार को बढ़ाने में करें, शुरूआत में नहीं। सीड कैपिटल जैसा संभव है, अपना ही लगाना चाहिए। सामान्यतः व्यापार में 20-25% पूँजी अपनी होती है और 75% बैंक का होता है। जब आप बृद्धि के दौर में चल रहे हैं, पहले से स्थिर व्यवसाय है, तब तो ठीक है। लेकिन आप आरंभ में ही 25% और 75% के अनुपात पर चलेंगे तो ब्याज का बोझ इतना हो जायेगा कि वह व्यापार को ठप कर देगा। किसी भी व्यापार को जमने में थोड़ा-सा समय लगता है।

4. जो व्यापार आप चुन रहे हैं, उसकी लंबी अवधि की व्यावहारिकता सोच-समझ कर ही उसमें निवेश करें। कुछ लोगों ने आनन्दफानन में हैंड सैनिटाइजर और मास्क बनाने में निवेश कर लिया। अब हर तीसरा आदमी यहीं बेच रहा है।
5. अपने खर्च कम रखें। दूसरों की होड़ में खर्च न बढ़ायें। जैसे यात्रा पर खर्च हम कम कर



वैभव अग्रवाल
एमडी, नोएक्स प्लेवर्स

डब्लूएचओ का, कि हमारा मेंथॉन डब्लूएचओ स्वीकृत होगा, तो हमें दूसरों के ऊपर एक लाभ मिल गया।

7. आईटी की तकनीक का भरपूर उपयोग करें, ऑनलाइन बाजार से घबराने की जगह उसे अपना माध्यम बनायें। जैसे, मार्केटिंग ऐप आ रहे हैं अपनी सेल्स टीम का नियंत्रण करने के लिए। ऑनलाइन बिक्री पर ध्यान दें। जरूरी नहीं है कि अमेजन पर ही बेचें, अपना ऑनलाइन कार्ट बना लें, आजकल बहुत आसानी से बन रहा है। उस पर लोगों को लाने के लिए डिजिटल मार्केटिंग करें।
8. ग्राहकों से अच्छा व्यवहार सभी करते हैं। एक गुणी व्यवसायी वह होता है, जो अपने कर्मचारियों और कच्चे माल/सेवा के आपूर्तिकर्ताओं से भी मधुर व्यवहार करे।
9. समय के साथ अपग्रेड होने के लिए आपके प्रारंभिक निवेश का 10-20% हर साल आपको पुनः अपने उद्यम में निवेश करना होगा, वरना पाँच साल में आप स्वयं को बिल्कुल बाहर पायेंगे। जैसे, आपने 20 लाख रुपये का निवेश कर एक मशीनरी लगायी। पर तकनीक आगे बढ़ रही है। दो-तीन साल में नये मॉडल आ जायेंगे मशीनों के, जो ज्यादा उत्पादन करेंगे और आप पुराने पड़ जायेंगे। जो बाद में फैक्ट्री लगायेंगा, वह आपसे बेहतर मशीन लगायेगा। इसलिए आपको हर साल मशीनों में सुधार की जरूरत होगी। इस बढ़िया के लिए आप ऋण का उपयोग कर सकते हैं।
10. काम वही करें जो कानूनी/नंबर एक का हो। कभी भी नंबर दो/बिना बिल वाला व्यापार न शुरू करें। अब जीएसटी के बाद अनुपालन (कंप्लायांस) बहुत बढ़ गया है। पुराने तरीके से चलने वालों को बहुत दिक्कत आ रही है। अब बस यह समय की बात है कि कर विभाग आपके पास पहुँच रहा है कि नहीं पहुँच रहा है। अब सारी चीजें आपस में जुड़ चुकी हैं।
11. काम उतना ही करें, जिसका तनाव आप झेल पायें। पैसा बहुत कुछ है, पर आपके स्वास्थ्य और परिवार से बढ़ कर नहीं है। इनमें कई बातों पर मैं अपने हाथ जला चुका हूँ, वही अनुभव लिख रहा हूँ। ये बातें उपदेश अधिक लगती हैं, पर इतने साल काम करने के बाद मैं इन सबकी पुष्टि कर सकता हूँ। ■

2024 के 'खेला' की रणनीति का आएंभ 2021 में ही ममता बनर्जी की दिल्ली यात्रा से हासिल क्या?

एक मुख्यमंत्री के लिए राजधानी दिल्ली का पाँच दिनों का प्रवास कोई छोटी घटना नहीं है। लेकिन यह हम कह नहीं सकते कि इसका एक ठोस परिणाम क्या हुआ है। लगता है कि वे एक ड्रोन की तरह दिल्ली आयी थीं, जो यहाँ के मौसम का जायजा ले रही थीं। यह शुरुआती बातचीत है। इससे पहले उनके चुनाव विशेषज्ञ प्रशांत किशोर थे। लगता है उन्होंने कई बिसात बिछाये हैं, अंदर की बातें बाहर नहीं आ रही हैं। यह बात चली कि प्रशांत किशोर कांग्रेस में चले जायेंगे, पर वे किस भूमिका में जायेंगे? क्या कांग्रेस में अपने स्तर को बढ़ाने जायेंगे या कांग्रेस में जायेंगे ममता बनर्जी का कद बढ़ाने और उनका नेतृत्व स्वीकार कराने के लिए?

ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी से मुलाकात की। अभी कांग्रेस की दुविधा यह है कि वह अपनी ताकत का जायजा ले रही है। हाल में कांग्रेस में कुछ गतिविधि आयी है और वे फैसले ले रहे हैं। मुझे लगता नहीं कि इतनी आसानी से कांग्रेस ममता बनर्जी को नेता मान लेगी। इसमें बहुत शर्तें चलेंगी। कांग्रेस ने चार प्रधानमंत्रियों को कुर्सी पर बिठाने में मदद तो की, लेकिन वह कब कुर्सी खिसका दे इसका कुछ पता नहीं है।

कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी का समर्थन किया, तो क्या यह सोच कर किया कि ममता बनर्जी दिल्ली में भी गद्दी संभालें? ये सब कुछ दुविधाएँ हैं, द्वंद्व हैं। कांग्रेस एक राष्ट्रीय दल है और कांग्रेस से सामंजस्य किये बिना किसी विपक्षी नेता या विपक्षी गठबंधन का एकजुट होकर काम करना असंभव है।

2024 में प्रधानमंत्री मोदी को चुनौती देने के लिए विपक्ष कोई एक चेहरा सामने रखकर चुनाव लड़े, यह मुश्किल है, लेकिन यह चीज असंभव नहीं है। शायद विपक्षी खेमे को लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ अगर हम एक चेहरा लायें तो पूरे विपक्ष का हौसला बुलंद होगा। आप दो साल पहले पूछते तो मैं कहता कि यह असंभव है, लेकिन आज सब अपनी-अपनी ताकत का जायजा ले चुके होंगे। अभी मुझे लगता है कि तालमेल संभव है। अभी से नेतृत्व स्वीकार करने में दिक्कतें हैं, पर नीतियों और न्यूनतम साझा कार्यक्रम के आधार पर यह हो सकता है। संयुक्त प्रचार के नाम पर शायद उत्तर प्रदेश में ये लोग शुरुआत करें, आगे की बात आगे देखी जायेगी।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जुलाई 2021 के अंतिम सप्ताह में पाँच दिनों की दिल्ली यात्रा की। जाते-जाते वे कह गयीं कि अब वे हर दो महीने पर दिल्ली आती रहेंगी। पर क्या इस दिल्ली यात्रा ने उनकी आशाओं को बढ़ाया है कि विपक्ष उनके चेहरे को सामने रख कर एकजुट हो जायेगा? प्रस्तुत है विषय पत्रकार **सतीश के. सिंह** की टिप्पणी।



राजनीति में मजबूरी और संभावनाएँ - दोनों का वजन बराबर होता है। राजनीति शतरंज की बिसात की तरह खेली जाती है कि अभी के लिए कुछ भी कर लो, बाद में देखी जायेगी। कम-से-कम पाँच-छह प्रधानमंत्रियों का यही हश्च हुआ है कि कोई दो साल, कोई एक साल, कोई ढाई साल रहे हैं। अगर विपक्षी नेताओं को लगता है कि ममता बनर्जी का समर्थन कर देने से उनकी ताकत बढ़ती है तो शायद अभी की स्थिति में वे इसे स्वीकार कर भी लें। लेकिन यह ज्यादा दिनों तक चल पाना जरा मुश्किल होगा।

वर्तमान राजनीति में विपक्षी खेमे में अब ममता बनर्जी के कद का कोई नेता भी नहीं है। अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, उद्धव ठाकरे, स्टालिन आदि उनके समकक्ष नहीं रहते। पर कांग्रेस बहुत सारी शर्तें रखेगी और उसके आधार पर ही यह तय होगा। जिस प्रकार से उन्होंने पश्चिम बंगाल में भाजपा को बहुत करारी शिकस्त दी है, तो हो सकता है कि उनका नेतृत्व मान लिया जाये। लेकिन यह तात्कालिक समझौता होगा। नेतृत्व स्वीकार करके ही उतरेंगे, यह कहना भी थोड़ा मुश्किल है। कांग्रेस ऐसी पार्टी है, जो चंद्रशेखर, चरण सिंह, एच. डी. देवेंगौड़ा और गुलजारी लाल नंद को प्रधानमंत्री मान लेती है। लेकिन कितने दिन?

एक विपक्षी मतदाता वर्ग पूरे देश में है, और उसे भी एक नेता की तलाश है। वह कांग्रेस को

तो वोट देना चाहता है, लेकिन किसको दे, कौन प्रत्याशी है, कौन-सा चेहरा है, ऐसे सवाल खड़े होते हैं। तो ऐसा नहीं है कि ममता बनर्जी का नेतृत्व स्वीकार नहीं हो सकता है। जिस प्रकार से ममता बनर्जी की एक छवि बनी है और उनके काम का जो तरीका है, उसे देखें तो चप्पल पहन कर चलना, साड़ी पहन कर चलना, बराबर का जवाब देना, एकदम आक्रामक होना, प्रहर करना, लड़ाका होना, महिला होना और पूरे देश में जगह-जगह जाना लोगों में उनकी छवि को मजबूत करता है।

ममता बनर्जी की इन पाँच दिनों की यात्रा में हम नहीं कह सकते हैं कि कुछ ठोस हुआ है, क्योंकि चीजें सामने नहीं हैं। लेकिन प्रगति हुई होगी। जब तक यह ठोस रूप नहीं लेता है, तब तक हम लोग क्यास ही लगा सकते हैं।

अभी चीजें स्पष्ट नहीं हैं। उन्होंने अपना सेंटर फॉर्मर्ड खेल दिया है, बाकी वे प्रतिक्रियाओं का इंतजार करेंगी। सब जगह से रणनीति बन रही है, उसकी काट में रणनीति बन रही है। अभी आपने केंद्रीय मंत्रिमंडल का विस्तार देखा जिसके लिए कहा गया कि यह मंत्रिमंडल का मंडलीकरण है। फिर हमने मेडिकल सीटों में आरक्षण का विस्तार देखा। खेल 2024 में होना है, उसे 2021 में ही नहीं लड़ा जायेगा। लेकिन यह बात सही है कि 2024 की रणनीति 2021 में ही बननी तेज हो गयी है। ■

पंजाब में 2022 में किसका राजतिलक?

क्या कैटन ने समर्पण कर दिया आलाकमान के सामने?

त्रिशंकु विधानसभा में कांग्रेस होगी सबसे आगे

पंजाब कांग्रेस की उलझनें अभी समाप्त नहीं हुई हैं, उनको टाल दिया गया है। नवजोत सिंह सिद्धू लगातार पार्टी हाईकमान को एक तरह से ब्लैकमेल कर रहे थे। वे खुले तौर पर संकेत भी दे रहे थे कि अगर मुझे अध्यक्ष नहीं बनाया गया या बड़ा पद नहीं मिला तो मैं आम आदमी पार्टी में जा सकता हूँ। नवजोत सिंह सिद्धू पार्टी में रह कर कितनी मदद करेंगे कांग्रेस की, यह एक अलग पक्ष है, लेकिन अगर वे चले जाते तो बड़ा नुकसान होता। इसका असर दूसरे राज्यों में भी पड़ता। इस स्थिति को टालने के लिए गांधी परिवार ने कैप्टन अमरिंदर सिंह को एक तरह से अपमानित करवाया नवजोत सिंह सिद्धू के हाथों। इसलिए यह अंतकलह खत्म नहीं हुई है, टल गयी है।

नवजोत सिंह सिद्धू और कैप्टन अमरिंदर सिंह - प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री दो अलग-अलग दिशाओं में

चल रहे हों, तो फिर रास्ता आसान नहीं होता है। लेकिन जो स्थिति पंजाब में विपक्ष की है, वह सबसे बड़ी उम्मीद की किरण है कांग्रेस के लिए। पंजाब में अकाली दल का जो 10 साल का शासन था, उसे लेकर अकाली दल की छवि सुधरी नहीं है। लोगों के मन में अकाली दल के बारे में जो धारणा बनी थी 2017 में, वह बदली नहीं है।

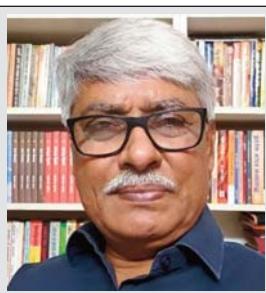
आम आदमी पार्टी 2017 में राज्य में प्रमुख विपक्षी दल के रूप में उभरी, लेकिन उसके बाद रास्ता भटक गयी। 2019 के लोकसभा चुनाव में उसकी सीटें चार से घट कर एक हो गयी। लोग लगातार पार्टी छोड़-छोड़ कर जाते रहे। वहाँ नेतृत्वहीनता की स्थिति है। सब कुछ तय करना अरविंद केजरीवाल के हाथ में है, जो इस हिसाब से तय करते हैं कि कौन मेरे कब्जे में रहेगा। पंजाब की राजनीति इस तरह से नहीं चल सकती है। भाजपा का वहाँ कुछ जनाधार है नहीं। इसको देखते हुए कांग्रेस अभी भी बेहतर स्थिति में है, बशर्ते कि अगले 6-8 महीनों में कोई बड़ा बदलाव न हो जाये, जैसे कि कांग्रेस के अंदर से कोई फूट हो जाये।

किसान नेताओं का नया दल क्या करेगा, उसे कितने वोट मिलेंगे, यह तो भविष्य की बात है। लेकिन वह दल एक भ्रम पैदा कर देगा कि किसानों के नाम पर आंदोलन के बीच जो लोग नाराज हैं, वे किसके साथ जायेंगे। इस भ्रम से त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति बन सकती है। पर पंजाब सीमावर्ती राज्य है और पंजाब के लोग राष्ट्रवाद को प्राथमिकता देते हैं।

2017 के चुनाव में भी कैप्टन अमरिंदर सिंह के नेतृत्व, उनके संगठन-संबंधी कौशल और उनकी छवि के अलावा राष्ट्रवाद भी काम कर रहा था। लोगों को लगा कि आम आदमी पार्टी के हाथ में अगर सत्ता दे दी इस सीमावर्ती राज्य की तो क्या होगा कुछ पता नहीं है और वे अपनी सत्ता के लिए अलगाववादी तत्वों से भी समझौता कर सकते हैं। मुझे लगता है कि आम आदमी पार्टी के खिलाफ जाने वाली सबसे बड़ी बात यह है। दूसरी बात जो उनके खिलाफ जायेगी, कि कोई नेतृत्व नहीं है। चुनाव से छह महीने पहले किसको लेकर आयेंगे? इसलिए त्रिशंकु विधानसभा बनने पर कांग्रेस के सबसे बड़े दल के रूप में उभरने की संभावना ज्यादा है।



प्रदीप सिंह
विष्णु प्रकार



ओंकार चौधरी
विष्णु प्रकार

कांग्रेस के पंजाब हारने के आसार ज्यादा

कांग्रेस अपने कर्मों की बजह से ही पूरे देश में डूबी है और पंजाब में भी अगर डूबेगी तो अपने कर्मों की बजह से डूबेगी। कैटन अमरिंदर सिंह की उम्र 78-79 साल है और नवजोत सिंह सिद्धू 57 साल के हैं, यानी करीब-करीब 20 साल का अंतर है उम्र में। करीब-करीब वैसा ही, जैसे

राहुल गांधी और नरेंद्र मोदी की उम्र में 20 साल का फर्क है। जिस तरीके से राहुल गांधी आये दिन देश के प्रधानमंत्री के बारे में हमेशा मर्यादाओं को लांघ कर अभद्र भाषा का इस्तेमाल करते हैं, वैसा ही रूपया सिद्धू का कैप्टन के लिए रहा है।

अभी यह नहीं कहा जा सकता है कि पंजाब कांग्रेस में अब नवजोत सिंह सिद्धू की ही चलेगी। इतनी आसानी से कैप्टन समर्पण करने वाले नहीं हैं। जब समय आयेगा तो कैप्टन अपने अनुभव का प्रदर्शन करेंगे। अभी यह फैसला होना है

कि 2022 के पहले क्या कांग्रेस कैप्टन अमरिंदर सिंह की सरपरस्ती में ही विधानसभा चुनाव लड़ा चाहेगी या उनको किनारे करके नवजोत सिंह सिद्धू को चेहरे के तौर पर पेश कर देगी।

कैप्टन अमरिंदर सिंह की जो सेवाएँ कांग्रेस या पंजाब के लिए रही हैं और नवजोत सिंह सिद्धू का अब तक जो भी योगदान है, उसमें कोई तुलना ही नहीं है। अगर पंजाब में कांग्रेस की वापसी किसी ने करायी है तो वे कैप्टन अमरिंदर सिंह हैं। वहाँ राहुल गांधी, सोनिया गांधी या प्रियंका वाड़ा की बहज से कांग्रेस नहीं लौटी थी पाँच साल पहले। वह कैप्टन अमरिंदर सिंह की चेहरे की बजह से आयी थी। अगर आप इस तरह के कदाकर उम्रदार नेता की इस तरीके से बेइज्जती करायेंगे, तो अगर कांग्रेस की थोड़ी-बहुत बढ़त होगी भी विपक्ष की कमजोरी या दूसरे कारणों से तो कांग्रेस अपने-आप ही उसे खत्म कर रही है। इसलिए कांग्रेस हारेगी।

कुछ किसान संगठनों के चाढ़नी जैसे अति-उत्साही नेता अपना एक राजनीतिक दल बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं। वह दल अगर बनेगा तो उस पर लोग कितना विश्वास करेंगे, यह अभी भविष्य की बात है। पर अभी मुझे लगता है कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच में वहाँ मुख्य मुकाबला होने वाला है। आम आदमी पार्टी अगर कोई सिख चेहरा मुख्यमंत्री के लिए लाये, जो विश्वसनीय भी हो, जो परखा हुआ नेता हो, तो मुझे लगता है कि आम आदमी पार्टी को बहुमत मिले या ना मिले पर वह कांग्रेस से बड़ा दल बन कर उभर सकती है।

कांग्रेस को लेकर नाराजगी बहुत है अलग-अलग इलाकों में। कैप्टन ने एक मुख्यमंत्री के रूप में वादे पूरे नहीं किये हैं। उन्होंने अपना कार्यकाल तो पूरा किया है, पर ऐसा कुछ नहीं किया है कि वहाँ जनता बहुत खुश हो। इसलिए जैसी भी है आम आदमी पार्टी वहाँ, पर वह ठीक-ठाक टक्कर देगी और हो सकता है कि सबसे बड़ा दल बने, तो भी त्रिशंकु विधानसभा ही बनेगी और नवजोत सिंह सिद्धू को कैप्टन अमरिंदर सिंह और कांग्रेस के दूसरे नेता भी आसानी से मुख्यमंत्री तो नहीं बने देंगे। ■

माइक्रोमैक्स का 9,000 रुपये से कम कीमत का स्मार्टफोन

माइक्रोमैक्स ने एक नया बजट स्मार्टफोन इन 2बी प्रस्तुत कर दिया है। माइक्रोमैक्स इन 2बी में वाटरड्रॉप नॉच डिस्प्ले और ड्यूल रियर कैमरा सेटअप दिया गया है। यह स्मार्टफोन 5,000 एमएएच की बैटरी से लैस है, जिसमें फास्ट चार्जिंग की सुविधा है। माइक्रोमैक्स इन 2बी स्मार्टफोन को दो स्टोरेज वैरिएंट में पेश किया गया है। इसके 4 जीबी रैम और 64 जीबी इंटर्नल स्टोरेज वाले वैरिएंट की कीमत 7,999 रुपये है, जबकि 6 जीबी रैम और 64 जीबी इंटर्नल स्टोरेज वाला वैरिएंट 8,999 रुपये में खरीदा जा सकता है। माइक्रोमैक्स इन 2बी नीला, काला और हरा - इन तीन रंगों में उपलब्ध है। इस स्मार्टफोन में 6.52 इंच की एचडी+ नॉच डिस्प्ले है, जिसका रिजॉल्यूशन 720x1600 पिक्सेल का है। माइक्रोमैक्स इन 2बी में यूनिसोकोटी 610 प्रोसेसर और एंड्रॉयड 11 ऑपरेटिंग सिस्टम है। ड्यूल रियर कैमरा सेटअप से लैस इस स्मार्टफोन में 5 मेगापिक्सेल का फ्रंट कैमरा भी है।

इनफिनिक्स ने उतारा 40 इंच वाला स्मार्ट टीवी

इनफिनिक्स ने भारत में अपना नया स्मार्ट टीवी

इनफिनिक्स एक्स1 भारतीय

बाजार में पेश किया है। यह 40

इंच का स्मार्ट टीवी है। यह स्मार्ट

टीवी स्लिम बेजल और

एचडीआर 10 सोर्ट के साथ

आता है। इस टीवी में 24 वाट

का बॉक्स स्पीकर भी मिलेगा

और इसमें इनबिल्ट क्रोमकास्ट

की सुविधा भी है। इनफिनिक्स

एक्स1 एंड्रॉयड स्मार्ट टीवी की कीमत 19,999 रुपये है।



इनफिनिक्स एक्स1 स्मार्ट टीवी फुल एचडी डिस्प्ले के साथ आता है। बेहतर तस्वीर के लिए इनफिनिक्स एक्स1 में एपिक 2.0 इंजन भी है। इसमें ब्लू लाइट रिडक्षन टेक्नोलॉजी और आईकेयर टेक्नोलॉजी जैसी सुविधाएँ दी गयी हैं। इस टीवी में मीडियाटेक एमटीके 6683 प्रोसेसर और ग्राफिक्स के लिए माली-470 जीपीयू है। इसमें 1 जीबी रैम के साथ 8 जीबी की स्टोरेज दी गयी है। इसमें गूगल प्ले स्टोर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इनफिनिक्स एक्स1 स्मार्ट टीवी में नेटफिल्म्स, प्राइम वीडियो और यूट्यूब जैसे तमाम ऐप चलाये जा सकते हैं।

टाइमेक्स की नयी स्मार्टवॉच

अमेरिकी कंपनी टाइमेक्स ने भारत में अपनी नयी स्मार्टवॉच को बाजार में उतार दिया है। टाइमेक्स हॉलिक्स स्मार्ट 2.0 स्मार्टवॉच को टेपरेचर सेंसर, हार्ट रेट सेंसर और मल्टीपल वॉच फेसेज के साथ पेश किया गया है।

कंपनी के दावे के अनुसार इसकी बैटरी काफी दमदार है। एक बार पूरा चार्ज होने पर स्मार्टवॉच की बैटरी 9 दिनों तक चल सकती है। इस स्मार्टवॉच में तीन अलग-अलग मोड भी हैं।

इस स्मार्टवॉच की कीमत 3,999 रुपये है। यह स्मार्टवॉच काले, ब्लैक मेश, हरे, ग्रीन रोज मेश और सफेद रंग के विकल्पों में उपलब्ध है। इसमें 1.55 इंच का टच स्क्रीन रंगीन डिस्प्ले है। इसमें शरीर का तापमान मापने और हृदय गति देख सकने जैसी विशेषताएँ भी हैं। इस स्मार्टवॉच को पूरा चार्ज करने में करीब 3 घंटे का समय लग सकता है। इसमें ट्रैडमिल, बास्केटबॉल, योग और फुटबॉल जैसे मोड भी हैं। यह स्मार्टवॉच पानी और धूल-प्रतिरोधी भी है।



मर्सिडीज ने भारत में पेश की दो नयी कारें

लगजरी कार निर्माता कंपनी मर्सिडीज-बेंज इंडिया ने भारत में और दो नयी कारें पेश की हैं। कंपनी ने एएमजी ई63 एस और एएमजी ई 53 कारें यहाँ के बाजार में उतारी हैं। मर्सिडीज एएमजी ई 53 मॉडल को भारत में पहली बार पेश किया गया है। इसकी शुरुआती कीमत 1.02 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम) है। वहाँ एएमजी ई 63एस (एएमजी ई 63एस) की भारत में कीमत 1.70 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम) है।

एएमजी ई53 में मर्सिडीज के ईक्यू बूस्ट माइल्ड हाइब्रिड सिस्टम वाला 3.0-लीटर 6-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो 430 एचपी की पावर और 520 एनएम का पीक टॉर्क पैदा कर सकता है।

वहाँ एएमजी ई 63एस में 4.0-लीटर वी8 बायटर्बो इंजन दिया गया है, जो 603 एचपी की पावर और 850 एनएम का टॉर्क पैदा करने की क्षमता रखता है। इसके इंजन के साथ 9-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स जोड़ा गया है। यह मॉडल सिर्फ 3.3 सेकंड में 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ सकता है। ■



MR. INVEST RIGHT'S GOOD INVESTING PRACTICES

YOU ARE IN GOOD HANDS WHEN YOU INVEST THROUGH SEBI-REGISTERED MARKET INTERMEDIARIES.

Investing or trading through unregistered brokers can lead to misguidance, financial loss or even fraud. Deal through a SEBI-registered broker for legally sound and unbiased advice. Ensure you verify your broker's credentials before initiating any dealings.

INVEST RIGHT TOH FUTURE BRIGHT



MUTUAL
FUNDS
Sahi Hai

CANARA ROBECO
Mutual Fund



बड़ी गाड़ी
का सपना

पूरा करें
SIP के साथ.



फायनांशियल
इंडिपेंडेंस
का सपना.

पूरा करें
STP के साथ.



शान से रिटायर
होने का सपना.

पूरा करें
SWP के साथ.



अपने सारे सपने योजनाबद्ध तरीके से पूरा करें.

म्यूचुअल फंड्स के 3 सिस्टमैटिक उपाय जो आपको
अपने वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करे.

SIP

सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान म्यूचुअल फंड्स
द्वारा दी जानेवाली एक ऐसी सुविधा है जहां
ग्राहक एक सुनिश्चित रकम को एक सुनिश्चित
समय के लिए किसी खास फंड में निवेश कर
सकता है.

STP

सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान एक ऐसी सुविधा है
जहां ग्राहक एक सुनिश्चित रकम को एक
नियमित अंतराल पर एक स्कीम से दूसरी स्कीम
में तय फ्रीकर्वेसी अनुसार ट्रांसफर करने का
विकल्प चुन सकता है.

SWP

सिस्टमैटिक विद्युत्वाल प्लान एक ऐसी सुविधा
है जहां आप एक तय समय के लिए मौजूदा
म्यूचुअल फंड से एक सुनिश्चित रकम को
निकाल सकते हैं.

#smarTomorrows

www.canararobeco.com/smarttomorrows
An Investor education and awareness initiative

म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन होते हैं, स्कीम संबंधी सभी दस्तावेज़ों को ध्यान से पढ़ें।

निवेशक सिर्फ़ रजिस्टर्ड म्यूचुअल फंड्स में ही डील करें, जिससे संबंधित जानकारी की पुष्टि सेबी की वेबसाइट (<https://www.sebi.gov.in>) पर 'Intermediaries/Market Infrastructure Institutions' के तहत कर सकते हैं। एक-बार का KYC (नो योर कस्टमर) पूरा करने की प्रक्रिया संबंधी जानकारी, इत्यादि में बदलाव की प्रक्रिया भी शामिल है। अगर निवेशक अपने म्यूचुअल फंड्स की प्रतिक्रिया से संतुष्ट नहीं हैं, तो वे अपनी शिकायत स्कोर्स पोर्टल (<https://www.scores.gov.in>) पर दर्ज कर सकते हैं।